11625

11625

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ❀

❀ श्रीगुरुचरण कमलेभ्योनमः ❀

❀ अनन्त श्रीसंत भक्तचरण कमलेभ्यो नमः ❀

श्रीभक्तमाल

संतचरितामृत

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
11625

प्रकाशक निर्हेतुकः—

अनंत श्रीस्वामी रामकिशोरशरनजी रसमोदलता

कोठा वालों के अनन्य भक्त कृपापात्र

श्रीरामप्रियाशरण जी पञ्जाबी

विनीतः—

मैथिली शरन भक्तमाली

श्रीयुगल माधुरी कुंज

नजर बाग श्री अयोध्या जी

फाल्गुण शुक्ल १२ सोमवार

(विक्रमीय सं. २०२४)

* श्रीसीतारामाभ्यां नमः *

* श्रीगुरु चरण कमलेभ्यो नमः *

दोहा

करें वन्दना कौन हम, लिखैं भूमिका कौन।
जौन घाट पै जात हैं, औघट देखैं तौन॥

॥ कुण्डलिया ॥

औघट देखें तौन कहैं का गढना गढ कें।
थक गए सबइ महान ज्ञान गुदरी पढ़ पढ़ कें॥
तैंहूँ न पायौ पार भार सिर पै लै लै कें।
उखरत बूड़त बचे वस्तु जेहि की जँहँ दैंकें॥
(त्वदीय बस्तु गोविन्दम)

॥ दोहा ॥

उतरे सब जेहि घाट पै, हमउँ चले वहि घाट।
सज कें साज समाज फिर, होंयँ न वारा वाट॥
सन्तन सों विनती करों, औरौ सुजन समाज।
विगरी वनी सँभारियो, मोय न कछु अन्दाज॥

❀ श्रीसीतारामजी महाराज की जय ! श्रीगुरुदेव सन्त भगवान की जय ❀

❀ कुछ प्रार्थना रूप में नम्र निवेदन ❀

ए श्रीसन्त चरितामृत नाम से अपनें इष्ट देव सन्त भगवान की वन्दना की गई है। दो प्रकार श्री भक्तमाल के मेरी तुच्छ बुद्धी में आए कि एक तो चरितात्मक जिसमें उनके वाह्य विवहारिक अनुकरणों का लेख किया जावे दूसरा वन्दनात्मक गुणात्मक जिसमें उनके दिव्य गुणों की केवल बन्दना की जाय, इसका अधिकार सब किसी को है कि जहां जिसकी उच्च भावना हो वहां उनकी वन्दना हर प्रकार से कोई भी कर सक्ता है पर चरितात्मक में तो बड़ी जुम्मेदारी का काम है और कोई भी उसमें शंका समाधान हर प्रकार से खंडन मंडन कर सक्ता है, और होता ही है हो रहा है। इस लिए मैंने वन्दना की है जो श्रीसन्त स्वरूप में निष्ठा और भावना रखते होंगे या रक्खेंगे उनके लिए सुखदाई हर्ष प्रद होगी ए भावना मेरे हृदय में बालकाल से थी और उन्हीं की कृपा से मेरे इस सरीर को सन्त भेष भी मिला यद्यपि में इस का पात्र नहीं था पर उनकी कृपा किन्तु मेरी भावना सन्त बननै पर भी सन्तों में वैसी ही रही और बढ़ती गई ए अनोखी दैन श्री हनुमन्तलालजी की है, जिनके द्वार पर मैंने श्री अवध बास की भिक्षा मागी थी श्रीगुरुदेव की आज्ञा से उस प्रसंग को भी लिख देना आवश्यक था किन्तु कई विचार से लिखना रोक दिया वो सर्वदेसी विषय नहीं है अस्तु संत होने पर सन्त में सन्त भावना महान कृपा का स्वरूप है जो प्रत्यक्ष सबको अनुभव हो रहा है—सन्त चरितामृत शब्द बड़ा प्रिय लगा इस्से यही नाम निरधार किया—अब ए तो साधारन बात है कि कोइ भी

लेख हो उसमें शब्दों की अक्षरों की काव्य कौशल की त्रुटि रह जाना फिर में तो किसी भी प्रकार से इसके योग्य नहीं हूँ इस लिए कि पचहत्तर वर्ष पहले की हिन्दी थोड़ी सी पढ़ा हूँ जिसकी एक एक मात्रा आज के शंशोधन में गलत है फिर और विषय की योग्यता की तो बात ही क्या अतएव इस पर ध्यान हमारे महान जन नहीं देवेंगे इसमें एकही तत्त्व प्रधान संतोंका स्मर्ण किसी प्रकार तो है, बस इसी से मैंने अपना कल्यान माना इसी लिए किसी महानु भाव और महत जनों की सम्मति इसमें नहीं ली गई सो क्षमा प्रदान करेंगे, पहले ही जब श्रीरूपकलाजी बिराजमान थे तब उन्होंने अधिक आग्रह किया था कि हमको दै देव तो हम इसका श्रृंगार करके प्रकाशन करें, पर ऐसा तो मेरा धेय नहीं था फिर भी श्रीमानस पियूष का प्रारम्भ हो रहा था, तो उसके मंगला चरण में श्रीगणेश के रूप में दो चार छप्पय उन्होंने स्थापित कर दिए इस बार।अभी मेरा स्वास्त कुछ खराब।भया तो मेरे नित्य दर्शन देने वाले सन्त भगवंतों ने इसकी प्रेरणा की और परम भक्त साधु सेवी श्रीराम प्रियाशरणजी पंजावीजी के हृदय में उल्लाष भया कि मैं प्रकाशन करूँगा, इस इस सन्तगुण दर्पण का और बिना पूछे ही प्रेस में कागज लाके रख दिया दो सो रूपया फुटकर कामों के लिए मेरे पास जबरदस्ती धर दिए काम चालू हो गया उनका भी छप्पय इसमें पहले लिख चुका था उसे कहने लगे इसको निकाल दिया जावै मैंने उनकी इस भावना को आदर नहीं दिया और वे सर्वतो भाव से इसके प्रकाशन में उत्सुक बनै उसी का परिणाम है कि आज ए अमृत सबके सनमुख उपस्थित है—इसलिए कोइ भी त्रुटियों को न देख कर महानता का स्वाद ले लिया जाय सागर तो ए है ही इसमें विष और अमृत

साथ ही में रहता है पर भोग के पात्र दोनों के भिन्न भिन्न होते हैं। सन्त और सन्तों में भावना रखने वाले गृहस्त भक्तों का भी नाम इसमें आया है जो मेरे परिचित ही नहीं साथी सजाती थे, और अनन्य संत सेवी थे। श्रीअवधधाम के नाते मेरी नजर सबी में रस रूप हो गई इस लिए ऊँच नीच बिचार मेरे महानुभाव कुछ न करेंगे।

मानिय सबै राम के नाते ॥

कोइ भी ब्यक्ति कोई काम करता है तो उसमें उसकी दृष्टी प्रधान रहती है—उसी प्रकार मेरे लिए अभय दान दिया जायगा, और कोइ भी एक बुन्द अमृत की जच जावे तो उसका आस्वादन किया जायगा। बृज के भक्त और श्रीशिव भक्त ब्रह्म निष्ठ मुगल महा भागवतों नै इसमें आनेकी कृपा की है। मेरे हृदय में तो लालसा है कि मेरे प्राण प्रीतम के प्रिय कोई भी भिन्न न रहैं पर ए कैसे हो सक्ता है। इस्से वो अभिलाष मनकी मन ही में रह गई। वन्दना में तो अपनी भावनावों को प्रगट ही कर दिया है सो सबके सनमुख होवइ करैगी।

जिनके नाम संकेत छूट गए हैं उनकी मेरे हृदय में कसक है इसी लिए ए प्रार्थना वन्दना एक छप्पय में प्रथम ही करदी है और कोई उपाय अपनै सन्तोंष जनक नही देखा—किन-किन के नाम निवेदन करूँ दोषी तो इस बात का मेरे लिए बनना ही पड़ेगा, जिनका नाम इसमें नहीं आया पर ए भी एक पदवी ही तो है द्वेषी को ही निर्दोष पद मिलता है, निर्द्वेषी तो निर्दोष हैही, पतित को ही पावन प्रभु बनाते हैं, पावन को पावन नहीं ॥इतिशुभम्।

"मैथिलीशरण भक्त माली"
श्रीजुगल माधुरी कुंज, नजरबाग,
श्रीअयोध्याजी।

फालगुण शुक्ल ११ चन्द्रवार सं० २०२४ १९६९ दिनांक ११ मार्च।

(राज ऋषि श्रीमहाराज विश्वनाथसिंह जू छत्रपुर वालों की द्वितीय महारानी
श्रीनारायन कुअर (प्रेमलता जू)

❋ छप्पय ❋

नइ महारानी छत्र पुर बिश्वनाथ नृप की भईं।
श्री प्रेमलता प्रिय नाम कुँअरि नारायन ऐसीं।
श्री राधा रमन उपास्य रास रस भीजीं जैसीं॥
सन्त गुरु सिवकाइ दया उर दान जान कें।
राज काज विवहार करो है खूब छान कें॥
आनन्द वन तन त्याग कें पुन अपनें प्रिय कें गईं।
नइ महारानी छत्र पुर विश्वनाथ नृप की भईं॥

श्री मैथिली शरण "भक्तमाली"
श्री युगल माधुरी कुन्ज

❀ श्री ❀

❀ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ❀

❀ श्रीसद्गुरुचरणकमलेभ्योनमः ❀

❀ श्रीसंत भक्तचरणकमलेभ्योनमः ❀

❀ श्रीसंत चरितामृत ❀

।। संत सुजन जनों से प्रार्थना ।।

❀ छप्पय ❀

संतन सों विनती करों छमें मोर अपराध को।
पृथक पृथक लै नाम गुनन को नाहिं उचारे ।।
(पै) जिते वेष भगवान लगैं मोहि सहज पियारे।
अपनें और पराए भेद कौ भाव न लइयो ।।
कृपा कोर कर अभय दान दिन दूनौ दइयौ।
जिन चरननकी धूरिधर ध्यायौ तत्व अगाध को।।
संतन सों बिनती करों छमें मोर अपराध को।

❀ छप्पय ❀

श्री अवध बसैं जे संतजन तिन चरनन की धूरि को।।
ब्रह्मादिक ललचात बिष्णु शिव देव जहाँ लौं।
प्रकृति परे जो देश तिनहुँ को कहौं कहाँ लौं।।
सप्त पुरिन में शीश ईश कौ कह्यौ छान कैं।
मुनि जन संत समाज अष्ट दस श्रुति प्रमान कैं।।
चारि खान जग जीव जे सबन सजीवन मूरि को।
श्री अवध बसैं जे संत जन तिन चरणन की धूरि को।।

*** पद ***

हमारे संत सजीवन मूर ॥
जिनकी कृपा कटाक्ष बिलोकत, होत सकल अघ दूर।
उनहीं के नित चरण कमल की, धरियत सिर पर धूर॥
उभय बिभूति अभय भर पाई, मन मानी भर पूर।
'मैथिलीशरण' तिनहिं को रग रग रहियत भरें गरूर॥

* गुरुजन और संत वाणी का महत्व उपकार *

*** दोहा ***

संतन की बाणी सदा, सर्बोपार सिरताज।
श्रुति पुराण उपनिषदहू, उनहीं से उपराज॥

*** कुंडलिया ***

उनहीं से उपराज शास्त्र सद्ग्रन्थ सुहाए।
नाम रूप गुण धाम ललित लीला सरसाए॥
जगत जीव कल्याण जहाँ लौ सुन्यो बखान्यौ।
सो सब संत सुजान कृपा करुणा से जान्यौ॥

*** दोहा ***

सुन्दर सरयू सरितवर, संत सकल जल धार।
गुरुवर घाट सुहावने, बोहित पार उतार॥

*** कुंडलिया ***

बोहित पार उतार जहाँ विरजा को संगम।
अमित अखंड अपार सीम स्थावर जंगम॥
कर्णधार पतवार न गुरु विनु कोउ ठहरावैं।
कर्म उपासन ज्ञान योग बल थाह न पावै॥
थाह न पावैं तहां जहाँ को तत्व रसीलो।
श्री गुरुदेव कृपालु बिना नहिं और वसीलो॥

तिमिर तोम हट जाय जहां माया की सगरो।
बिधि प्रपंच बिनसाय रहै नहिं तनको भगरो।
नित्य तत्व परतत्व पाय प्रगटै वोह रूपा।
ब्रह्म सच्चिदानन्द द्वन्द से रहित अनूपा॥
अनुपम वेष अशेष सिया स्वामिनि की शुचि से।
नहीं विश्व को लेस बन्यो जो विभु की रुचि से॥

❋ दोहा ❋

विभु की रुचि से जो बन्यो. सो सब है इक पाद।
सिय की शुचि से सतत सो, ताहि कहैं त्रयपाद।

❋ कुंडलिया ❋

ताहि कहैं त्रयपाद जहां की महिमा ऐसी।
नेति नेति कर भनी वेद त्रय देवहु तैसी॥
त्रय देवत्र को विभव यहाँ की छाया छोलन।
कवि कोविद सब भनत भाव अनमोलन बोलन।

❋ दोहा ❋

अनमोलन बोलन भन्यो, नवधा दसधा सार।
ताहि निवारत डीठ सम, राई लोंन उतार॥

❋ कुंडलिया ❋

यह रस रस कौ रूप भूप सब अन्य रसन को।
प्रीतम मन समनीय श्रवन सो दसन बसन को॥
दसन बसन को श्रवन पान कर प्रीतम प्यारे।
विवस भये अनिवार्य होत नहिं कबहूँ न्यारे॥
अलि सौन्दर्य्य रसाल भाल को भूषन सो भवो।
युगल केलि को सार हमें, श्रीगुरुवर ने दवो॥

❀ दोहा ❀

श्रीसिया अलीकर कमल से, लिखी हमारे भाल ।
स्वामिनि सिय जू मैथिली, पिया रसिक रघुलाल ।।

❀ कुंडलिया ❀

पिया रसिक रघुलाल रँगीले छैल छबीले ।
नित नए होत निहाल हमन पर गुन गरबीले ।।
हम सिय जू के गर्व रहैं उनके रस माते ।
वे सौन्दर्य्य लुभाय ललक बिनु मोल बिकाते ।।
विनहीं मोल बिकात गुणी ज्ञाता को माने ।
यह चस्कीलो बान रसिक विरले कोउ जाने ।।
जाने रसिक सुजान जिन्हें कछु कर्म धर्म कौ ।
एकौ नहीं बिबेक लोक की लाज शर्म कौ ।।

❀ दोहा ❀

अपनो कर माने जिन्हैं, तिन्हैं मिल ए स्वाद ।
कर्म उपासन ज्ञान लौं, वेदन की मर्याद ।।

❀ कुंडलिया ❀

वेदन की मर्याद प्रपत्ती उपजत ऐसें ।
गज मुक्ता करपूर स्वाति जल सिरजत जैसें ।।

❀ दोहा ❀

स्वाती जल शुचि शब्द है, संत जलद गुरुदेव ।
पाय शरद साधक सुथल, वरसैं पर तर भेव ।।

❀ कुंडलिया ❀

बरसैं पर तर भेव पाँचवीं कक्षा कहिए ।
कर्म उपासन ज्ञान प्रपत्ती वहिं से लहिए ।।

यह अचार्य अभिमान यान अनुपम श्रुति गायो।
श्री शबरी जी बैठ याहि पर प्रीतम पायो॥

✱ दोहा ✱

जिन पायी प्रीतम प्रबल, तिन गायो यह गान।
जानत जानत जान के, छानत छानत छान॥
शरण मैथिलो को लियो, अलि सुन्दर सुख धाम।
पौढ़ी सुकिया सेज पर, विलसत आठोयाम॥

✱ कुंडलिया ११ ✱

विलसत आठोयाम भरे सागर गागर में।
२ १
छलक परत जब नेह कबहुँ नव नट नागर में॥
नट नागर को नेह हमारो देह धर्म है।
अंशी अंश विवेक कह्यो सो वहू नर्म है॥

✱ दोहा ✱

नर्म गर्म जो होय सो, बनो रहै नित नित्य।
मैथिलि युगल विहार पर, सत अरु आनँद चित्त॥

✱ श्री अवध धाम की वन्दना १२ ✱

धन धन्य हमारी अवध पुरी जहँ पापिउ पोषण पाते हैं।
श्री करुणा कर कौशल किशोर जहँ करुणा नदी बहाते हैं॥
जप योग जज्ञ तप नेम प्रेम करनी कर पार न पाते हैं।
सोइ मुनि महेश मानस मराल ह्याँ विनहीं मोल विकाते हैं॥
श्री संत्त सरल चित्त चैतन्न होय नित राम रंग बरसाते हैं।
कायर कपूत अलमस्तों को घर घर में जाय छकाते हैं॥
सौन्दर्य्य माधुरी कुंज महा रस पुंज सिया गुण गाते हैं।
नित नये छैल को फैल दिखाकर रिझा रिझा ललचाते हैं॥

प्यारो लगै मोय ऐसी अवध की अवनी। (१३)
जहँ सरयू सरित सरसावैं, लहर लहरावैं, त्रिताप नसावैं, कलिमल सब धोय ॥ ऐसी अवध० ॥ लता द्रुम ललित छबीले, छाये, भूमि नियराये, सुखद मन भाये, छाँड़े नहिं छोय ॥ ऐसी अवध० ॥ रँगीले संत सिया गुन गाते, राम रँग राते, रहैं उनमाते, दम्पति दिशि जोय ॥ ऐसी अवध० ॥ सौन्दर्य्य हमन रखवारे, पवन के प्यारे, वसिए उन द्वारे, सुख सों रहि सोय ॥ ऐसी अवध० ॥

* वन्दना *

* श्री सरयू अष्टक १४ *

सरयू सरित सुःख मूख, समन त्रविधि ताप शूल, पावन प्रिय कूल कलित कलिमल अपहारी । ब्रह्मद्रव दया हेतु, सिरज्यो साकेत सेतु, ललित लहर लेतु लगत लोचन वर वारी ॥ चलत मन्द मन्द धार, कौशल पुरि कंठहार, मानो महि को सिगार त्रिभुवन हितकारी। दरस परस पान करत, मज्जत मन मोद भरत, अंतहु निज गोद धरत पाप पुंज गारी ॥ मुनि जन मन मोन धोर, निवसत नित तीर तीर, सुमिरत रघुवंस वीर छाई छवि न्यारी । प्रागराज प्रात आय, सह समाज गुणन गाय, अधमन के अघ बहाय पावन वपु धारी ॥ मानस नन्दिनि सुनाम, श्री वशिष्ठजा प्रणाम सेवत वसुयाम सकल सुकृती नर नारी । करुणा उर कृपा भूप, राम जानकी स्वरूप, जोड़ी सुन्दर अनूप सरयू अवध प्यारी ॥

* दोहा *

सरयू अष्टक प्रेम से, पढ़ै सुनै जो कोय ।
अवध वास को सुख लहै, सिय पिय मिलिहैं सोय ॥

*** श्री गुरु बंदना ***

*** छप्पय १५ ***

श्री गुरुदेव कृपाल के चरण कमल की प्रिय पराग।
लोचन पलन परोर लई अति शुचि सुगंध मय।
कृपा कोर वरजोर दई उन सदय हृदय ह्वय।
करी विमल मति मोर घोर त्रय ताप नसाई।
तब उर रह्यो रसाल संत चरितामृत छाई।
सौंन्दर्य भाल भूषित भई पूषित कर भर भूरि भाग।
श्री गुरुदेव कृपालु के चरण कमल की प्रिय पराग।

*** छप्पय १६ ***

श्री गुरुदेव कृपाल के चरण कमल रति पीन हो।
मो मति गई हिरान कौन विधि चरित बखानो।
रस शृँगार महान मीन मन वानी जानो।
श्री कनक भवन माधुर्य्य माधुरी कुंज मधुप वन।
पियो कह्यो रस पुंज पुजारी कहत सबै जन।
अमित कृपा सिय पिय करी चैतन ह्वै सुख दीन जो।
श्री गुरुदेव कृपाल के चरण कमल रति पीन हो॥

*** छप्पय १७ ***

श्री प्रिया सखी आचार्य्य रस प्रणवों तुमहिं निहोर के।
जन्म कोटि युग फिरी सुरति रति कबहुँ जगी ना।
प्रकृति देश सें तुरत छुटायो छनक लगी ना।
नवल नेह की ग्रन्थि जोर युग जोरी जू सों।
दीन्ही प्रीति दृढ़ाय छुटै नहि हौंहू रूसों।
सौंन्दर्य सरस माधुर्य्य रस मनहुँ पिवायो घोर कें।
श्री प्रिया सखी आचार्य्य रस प्रणवों तोहिं निहोर कें।

* श्री गोस्वामी तुलसी दास जी महाराज *

छप्पय १८

गोस्वामी जू की यदिपि कीरति कल कोटिन वरस।
कहै लहै नहि पार कोउ भल भक्ति भाव को।
जींवन जीव अधार अगम भव सिन्धु नाव को।
श्री राम चरित कीं हरित वाटिका आप लगाई।
विन सींचे हरियान वेलि नाना द्रुम छाई।
सौंन्दर्य सुमन रस पान कर जियत जगत मधुकर सरस।
गोस्वामा जू की यदिपि कीरति कल कोटिन वरस।

* श्री नाभा जी महाराज *

छप्पय १९

श्री भक्तमाल आचार्य्य को प्रणवों प्रथम निहोर के।
नाभा अलि अनुराग उमग आनँद उर छायो।
भक्ति रसामृत सार सरस बाणी ह्वै गायो।
प्रिय प्रीतम के रसिक रँगीले अनुरागिन की।
रुचि रुचि कथा रसाल कही अति वड़ भागिन की।
सौंन्दर्य सदा इन चरण रज पान करों नित घोर के।
श्री भक्तमाल आचार्य्य को प्रणवों प्रथम निहोर के।

छप्पय २०

नाभा जू हिय मानसर जीह मरालिनि मोदनी।
चुन चुन मोतीं दए चतुर चूड़ामणि ऐसे।
प्रिया दास जू भेद बनाए भूषण जैसे।
पुनि युगल प्रिया जू रसिक भक्त जन साज सजाए।

रूपकला रचि हार प्रिया प्रीतम पहिराए ।
रघुराज रंग रस माधुरी प्रेम प्रकाश विनोदनी ।
नाभा जू हिय मान सर जोह मरालिनि मोदनी ॥

श्रीप्रियादास जी महाराज

❋ छप्पय २१ ❋

श्रीप्रियादास महराज के पुण्डरीक पद धूरि की ।
महिमा मोद निधान साधुता द्रवन शील शुचि ।
भक्तमाल को तिलक रसिक बर कियो सुरुचि रुचि ॥
अधिक अधिक अनुराग उमग उर चरित नवीनें ।
भूषित भाग सुहाग सरस भक्तन के कीनें ॥
सौन्दर्य माधुरी मधुप ह्वै पियत सजीवन मूरि की ।
श्रीप्रियादास महराज के पुण्डरीक पद धूरि की ॥

श्री जीवाराम जी (युगल प्रिया)

❋ छप्पय २२ ❋

श्री जीवाराम युगलप्रिया प्रीतम के प्रेमी प्रवल ।
छपरा जिला चिराँद भगीरथि तट सारन में ।
रिझा लए रिझवार गान कर सुरतारन में ॥
श्री भक्तमाल प्राकाश करो रसिकन को रसनिधि ।
पद रचना अभ्यास भाव से भूषित सब बिधि ॥
श्रीराम रहस्य महोत्सव कियो सुरुचि रुचि भाँति भल ॥
श्री जीवाराम युगलप्रिया प्रीतम के प्रेमी प्रवल ॥

अनन्त श्रीस्वामी रामप्रसाद जी विन्दाचार्य्य

❋ छप्पय २३ ❋

फूल फलित मुद मंजरी भइ तुलसी अनुराग की ।
राम प्रसाद जु प्रगट प्रेम रस रूप लखायो ।

वीत राग मर्याद दया दम दान सवायो।
पग नूपुर करताल माल कल कंठ सुरागी॥
नृत्यति रति उर्विजा धनुर्धारी पद पागी॥
तबहीं सिय सौंन्दर्य निज वेंदी दइ सौभाग की।
फूल फलित मुद मञ्जरी भइ तुलसी अनुराग की॥

* छप्पय २४ *

दया दान सनमान मय मूरति मोद निधान की।
दीनवन्धु श्रीराम प्रसादाचार्य्य प्रवर वर॥
रास विलास उपास्य धेय निज इष्ट धनुर्धर॥
मोदी को दै दाम प्रसादी सिय जू दीन्हीं।
बेंदी निज कर कमल भाल में भूषित कीन्हीं॥
सौंन्दर्य साधुता शील शुचि छाँह छुअत नहि आनकी।
दया दान सनमान मय मूरति मोद निधान की॥

श्री स्वामी रघुनाथप्रसाद जी बड़ी जगह

छप्पय २५

श्री रघुनाथ प्रसाद जू बड़ी जगह के भए महंत।
श्री दीनबंधु जू आय इन्हें अधिकार दियो है।
सेवा श्री धनुधारि सार सब काढ़ लियो है॥
संतन की सिवकाइ दया दीनन पै कर कै।
नित नए लाड़ लड़ाय सिय पिय भेदी घर कै॥
श्रीरामचरन से शिष्य भए कीरत व्यापी दिग दिगंत।
श्री रघुनाथ प्रसाद जू बड़ी जगह के भए महंत॥

श्रीरामचरणदासजी महाराज करुणासिन्धु जानकीघाट

* छप्पय २६ *

श्री करुणा सिन्धु कृपाल श्रीरामचरण रस दासि भए।

पंडित परम प्रवीन काव्य विज्ञान कलानिधि।
(श्री) रामायण को तिलक सुभूषित कियो सकल विधि॥
रसिक अनन्य उदार साधु सिरमौर तपोधन।
(श्री)जनकलली सुकुमार कंज पद में मधुकर मन॥
दीन अधम उद्धार हित इन अवतार जो खास लए।
(श्री) करुणासिन्धु कृपालु श्रीरामचरण रस दास भए॥

* श्रीरामसेवक शरणजी महाराज जानकीघाट *

* छप्पय २७ *

श्रीराम सेवक ह्वै सुख लियौ सरस दीनता धार के।
परल सुहृद रस लीन मीन जिमि गहरे जल में॥
कियौ सुदिन दिन पीन प्रेम प्रीतम यहि कलि में।
साधु सुजन सनमान करें निज सजन ज्ञान के।
भूलि न माने भेद भक्ति कौ भाव मान के।
नित्य महल साकेत में प्रिय भय सिय सरकार के॥
राम सेवक ह्वै सुख लियौ सरस दीनता धार के।

श्री तपसी रामदासजी महाराज छावनी रामघाट

* छप्पय २८ *

तरनी तन तायो सदाँ तासे तपसी जी भए।
श्रीरामदास रस लीन भावना भक्ति नवनि में॥
अबहुँ छत्र सी छई छावनी अवध अवनि में।
सेवा सेव्य समान करें संतन की खासी।
अष्टयाम सनमान आपहू करें खवासी॥
श्रीकनक भवन सरकार ने ह्वै प्रत्यक्ष दरशन दए।
तरनी तन तायो सदा तासे तपसी जी भए॥

* श्रीतिवारी जी कोविद नयाघाट *

* छप्पय २९ *

कहत उमापति कोविदहु कौशलेन्द्र कुल गुरु हरी।
धाम अनन्य महान प्रवर पंडित प्रताप मय।
दया दान सनमान करैं मानहु कुवेर ह्वय॥
काशिराज की यज्ञ त्याग लच्छहु मुद्रा दए।
सतन कह्यो प्रचार कवहुँ प्रभु ढिग नाहिन नए॥
ताज मिली ताजीम जव कनक महल कुन्नस करी।
कहत उमापति कोविदहु कौशलेन्द्र कुल गुरु हरी॥

श्री मनसादास जी महाराज बिघा कुण्ड

* छप्पय ३० *

श्री मनसादास महान हैं भक्ति ज्ञान वैराग के।
विघा कुंड अस्थान थापना इनने कीनी।
परम्परा की रीत गही जैसी लख लीनी॥
सिद्ध सराहन योग भोग सब त्यागे तन के।
संतन के हित बने नित्य विंजन मन मन के॥
रघुनाथ दास से शिष्य भये इनके वाग विभाग के।
श्री मनसा दास महान हैं भक्ति ज्ञान वैराग के॥

श्रीरघुनाथदासजी महाराज बड़ी छावनी

छप्पय ३१

श्रीरघुनाथदास महराज जू भये पीन पद कमल अलि।
साधु संत सनमान सरोवर में नित मज्जन।
कथा अमृत रस पान करें जहँ पावैं सज्जन॥
सत्संग रंग में छके चौकसी भूले चित सें।
सोइ स्वरूप प्रभु धार दई निज जन के हित सें॥

अवध अबहुँ वड़ छावनी प्रसिद्धि सुमिरनी पदावलि।
श्रीरघुनाथ दास महराज जू भये पीन पद कमल अलि ॥

* सम्प्रदाय और द्वाराचार्य वंदना ३२ *

श्रीरामानन्दाचार्य उर सम्प्रदाय आचार्य सव।
तिन चरनन की धूरि सीस पर धरत चाव से।
द्वारा चारज सकल अग्र अनभेद भाव से ॥
जिनकी कृपा कटाक्ष जीव सब होत कृतारथ।
व्याप रहे ब्रह्माण्ड विश्व में पथ परमारथ ॥
मैथिलि उनके मग चलत अपनावत भगवान तव।
श्रीरामानन्दाचार्य उर सम्प्रदाय आचार्य सव ॥

* शृङ्गार सिरोमणि श्रीकृपानिवास ३३ *

मिथिला में मारुति सुअन प्रगट होय दरसन दिए।
सर्वेस्वरि श्री चारुशिला निज रूप दिखायौ।
जुगल मंत्र उपदेस राज रस भाव बतायौ ॥
कृपा सखी कौ रूप निवासी कृपा धरो है।
रोम रोम रस रास भाव शृँगार भरो है ॥
ह्वै अनन्य निज भाव के रचना बहु ग्रन्थन किए।
मिथिला में मारुति सुअन प्रगट होय दरसन दिए ॥

* छप्पय ३४ *

कृपा कोर कर कृपा सखि सिय स्वामिनि साकेत से।
पहुँचाई निज हेतु चतुर चेरी जे आप की।
नइहर रहीं अचेत दुलारी माइ बाप की ॥
तिनकौ हिय संकेत कियौ श्रीखास खवासिनि।
प्रगट जगत में आप भई श्री कृपानिवासिनि ॥
अलि कलि चुन सौन्दर्य दइ पिय कर कमल सुहेत से।
कृपा कोर कर कृपा सखि सिय स्वामिनि साकेत से ॥

जब श्रीस्वामी कृपानिवासजी को मिथिला में श्रीहनुमंतलालजी ने प्रगट होकर श्री सर्वेश्वरि चारुशिला रूप से श्रृङ्गाररस का उपदेश दिया और श्री युगल मंत्रराज प्रदान किया तब उन्होंने अपनी उपासना मिहली दृढ़ और अनन्य भावना के सम्बन्ध में ए पद लिखा इसके अतिरिक्त उनकी अनन्य चिन्तामणि ग्रन्थ स्वतंत्र है और भी कुछ ग्रन्थों का प्रमाण मिलता है। इनके लिखित जिनमें अपूर्व रहस्य का निरूपण किया गया है।

* श्रीस्वामी कृपानिवासजी का निज सिद्धांत *

सब तज हुँइहों महल उपासा।
स्वर्ग मुक्ति वैकुंठ विसारों ह्वै गुरु पद की दासी।
सत्तगुरु बचन महारस मानो परों न भ्रम क्रम फाँसी ॥
जुगल विहार भावना करिहों भटकों न तीरथ कासी।
सेज सुहाग रास रस लूटों त्याग वियोग उदासी ॥
ठौर ठौर उझकों नहिं नैनन रहों रूप अभिलाषी।
'श्री' गुरु प्रसाद भइ रसिक छाप अब नाहिन बटु सन्यासी ॥
कृपानिवास कृपा सिय जू की करिहों खास खवासी ॥

* श्रीपौहारी जी महाराज मणिपर्वत *

* छप्पय ३६ *

पयोहार वृत से रहैं तासे पौहारी कहैं।
विमल विराग निधान भक्ति इनकी सरसानी ॥
मनि परवत पै दिए दरस इनको रसदानी ॥
तब से लई जमात संत सेवा मन लाई।
पैकौली अस्थान अजहुँ पद्धिति चल आई ॥
सिद्ध बड़े परमारथी इनकी समता ए लहैं।
पयोहार वृत से रहैं तासे पौहारी कहैं ॥

* श्रीमनीरामदासजी महाराज छावनी *

छप्पय ३७

श्री मनीराम महराज के गुन अनन्त मनि माल की।
को कर सके बखान महा महिमा सुखमा मय।
पहिर लई भगवंत आपही स्वयम संत ह्वै य॥
श्रीरामघाट के वाट ठाट अलबेलो ठानो।
महा सिद्ध सम्राट साधु सेवा रस छानो॥
अबहुँ छावनी की रती गती न व्यापत काल की।
श्री मनीराम महराज के गुन अनन्त मनि माल की॥

* श्री वैष्णवदासजी छावनी *

छप्पय ३८

श्री वैष्णवदास जू साधू सेवा व्रत लई।
आवैं जेते संत दिगन्तन से रस भीने।
तिनको कण्ठ लगाय करैं पहुनई प्रवीने॥
चरित कहत चित चुँअत चौगुनो चाव चढ़त है।
इनकी प्रीति प्रमान लोक सब गढ़न गढ़त है॥
कोठी के चाँवर चुके संत चरण रज भर दई।
श्री वैष्णव दास जू साधू सेवा व्रत लई॥

* श्री शीलमणी जी महाराज अयोध्या *

छप्पय ३९

श्रीशील मनो महाराज जू सखा छबीले छैल के।
रस अनुभवी महान युगल चरनन मति पागी॥
गूढ़ भाव सों करैं भावना भव भय त्यागी।
दिए दरस नव रंग रंगीले लाल लली नै।
तब से भए बेहाल विरह वस तन मन भीनै॥

चारित आपके को कहै नवल नेह की गैल के।
श्रीशील मनी महाराज जू सखा छबीले छैल के॥

* श्री स्वामी युगलानन्य शरण जी लक्ष्मण किला *

❀ छप्पय ४० ❀

श्री युगलानन्य अनन्य अति शरण युगल सरकार के।
विरति विवेक निधान बड़े परमारथ प्रेमी।
पंडित रसिक सुजान सुहृद सत्सँग के नेमी॥
दया दान सनमान सरलता शुचिता मन की।
को कर सकै बखान महा महिमा इन तन की॥
रस शृङ्गार सम्पन्न मनु कर्नधार पतवार के।
श्री युगलानन्य अनन्य अति शरण युगल सरकार के॥

* छप्पय ४१ *

शृङ्गार शिरोमणि भाव के रसिक रँगीले जे भए।
ध्यान ज्ञान विज्ञान त्याग तप तन मन काया।
राग विरागहु मथन कियौ नहिं व्यापी माया॥
सिय कर श्री सौभाग भाल में भूषित कीनो।
युगलानन्य अनन्य नाम निज मुख सों दीनो॥
जो सुख रास विलास को पायो सो सब लिख गए।
शृङ्गार शिरोमणि भाव के रसिक रँगीले जे भए॥

* श्री जानकीवर शरण जी लक्ष्मण किला *

* छप्पय ४२ *

अनुरागी अति विमल मति श्रीजानकी वर शरण।
कोविद कोमिल चित्त सरल रस लोभी मधुकर।
विरति निरति संसार अवध सर मीन रसिकवर॥
अमित जीव निस्तार पार कर भव सरिता से।
अपहु गए पधार मिले पुनि निज भरता से॥

इन युगल चरण की धूरि मो पूर प्रेम पोषण भरण ।
अनुरागी अति विमल मति श्रीजानकी वर शरण ॥

* सुहृद सखा श्री कामदेन्द्रमणिजी महाराज साकेत राज महल *

* छप्पय ४३ *

श्रीकामदेन्द्र मणि सुहृद वर सखा सरस सरकार के ।
छके रहैं दिन रैन नैन अरु बैन रसीले ।
युगल मंजु पद कंज मधुप मन में उन मीले ॥
मधुर नर्म प्रिय भाव वातसल रस के जे जन ।
तिन सों प्रेम उमाव प्रकासें दिव्य सु इहि तन ॥
सौन्दर्य सदा श्रीयुत कहैं शब्द ललित अति प्यार के ।
श्रीकामदेन्द्र मणि सुहृद वर सखा सरस सरकार के ॥

* श्री फकीरे राम जी *

* छप्पय ४४ *

भक्त कमल कुल भाष्कर संत फकीरे राम जू ।
नाम धाम में प्रीति अनौखी इनकी ऐसी ।
रसिक अनन्य उदार द्रव्य दृष्टी ही तैसी ॥
सिद्ध साधुता घनी घोर भव घाम न व्यापो ।
रामकोट श्री जन्मभूमि ढिग निज थल थापो ॥
राग भोग सेवा सरस होत सदा निष्काम जू ।
भक्त कमल कुल भाष्कर संत फकीरे राम जू ॥

* परमहंस श्रीसीताशरणजी दरबार लाल साहब *

* छप्पय ४५ *

श्री परमहंस सीता शरण त्याग तपोधन सिद्ध रिधि ।
कनक भवन के द्वार रहैं आनंद मोद में ।
लालहिं लाड़ लड़ाय ललित नित नए विनोद में ॥

एक समय वह प्रीति पारखी तसकर लीने।
आप विरह में बिकल भए तन मन अति खीने॥
बहुरि मिले जब रसिक मणि उत्सव कीने विविध विधि।
श्री परमहंस सीताशरण त्याग तपोधन सिद्ध रिधि॥

* श्री मधुर अली जी *

* छप्पय ४६ *

मधुर अली मधु माधुरी मधुकर ह्वै नित नित पियौ।
युगल कमलनी कमल सदा विकसित हिय सर में।
छके रहत दिन रैन प्रेम प्रीतम निर्भर में॥
नित लीला श्रृङ्गार रचैं श्री लली लाल कौ।
करैं नृत्य सिरमौर रसिक टीकौ सु भाल कौ॥
सौन्दर्य सरस इनके चरित कहत मोर भीजो हियौ।
मधुर अली मधु माधुरी मधुकर ह्वै नित नित पियौ॥

* श्री ज्ञाना अली जी *

* छप्पय ४७ *

श्री ज्ञाना अली गुमान से प्रीतम प्रान रिझाए हैं।
सिय जू कौ सहचरी भाव इन में सरसानौ।
पद रचना से प्रगट होत कैसौ रस छानौ॥
होरी में इक बार छैल ने फैल दिखाए।
मिले अंक भर तबैं जबैं इन माल खवाए॥
त्याग विराग सराहनी महल माधुरी पाए हैं।
श्रीज्ञाना अली गुमान से प्रीतम प्राण रिझाए हैं॥

* श्री सुधा मुखी जी *

* छप्पय ४८ *

श्रृङ्गार भाव के भोग सब सुधा मुखी जू ने करे।

प्रकृति परे जो देश तहां की रीति रसाई ।
नित नए लाड़ लड़ाय सजन सँग इनने पाई ।।
अष्टयाम रस लीन मीन मन इनको जानों ।
विरति विवेक निधान सार सुख ऐसो छानों ।।
मिथिला अवध विनोद के मोद मनो रग रग भरे ।
शृङ्गार भाव के भोग सब सुधामुखी जू ने करे ।।

* श्री कूबरदासजी राम गुलेला *

* छप्पय ४६ *

गोली गट्टा खेल जहँ राम लला जू नित करें ।
तहाँ रहै जे संत दास कूवर अनुरागी ।
लाड़ लड़ावें नित्त लाल के सँग बड़ भागी ।।
कूवर पै चढ़ जाँय चपल ह्वै चारौ भइया ।
ललक ललक चलचाहि देव लख यह दुलरइया ।।
झुक झुक झाड़ू देत हैं लेत लाहु सबसे परें ।
गोली गट्टा खेल जहँ राम लला जू नित करें ।।

* श्रीरामसखे जी महाराज *

* छप्पय ५० *

श्रीरामसखे रस माधुरी लई युगल सरकार की ।
पद रचना कर कहैं नित्य लीला कल केलैं ।
अनुज सखन सँग सदा सरित सरयू तट खेलैं ।।
अवध सरोवर माँह बनज बन रघुबंशी सब ।
प्रफुलित नहिं मुरझाँहिं मुदित लख राम रूप रब ।।
सौन्दर्य मधुप ह्वै मधु पियत कंठ मेल भुज यार की ।
श्रीराम सखे रस माधुरी लई युगल सरकार की ।।

* श्रृङ्गार शिरोमणि श्रीश्याम सुन्दरी शरणजी कनक भवन *

* छप्पय ५१ *

श्री कनक भवन सुख पुञ्ज के श्रीश्याम सुन्दरी शरण अलि ।
नित माधुर्य्य विहार प्रिया प्रीतम रस भीने ।
अवध महल पैसार भूल पग अनत न दीने ॥
लली लाल सुकुमार सलौने साँचे माने ।
भूषण भोग निहार सुरुचि रुचि उनकी जाने ॥
सौन्दर्य सुमन सों सेज रच चुन चुन कोमल कुसुम कलि ।
कनक भवन सुख पुंज के श्री श्याम सुन्दरी शरण अलि ॥

* श्रीरामशरणदास जी महाराज मौनी जी *

* छप्पय ५२ *

मौनी जी मन मार के मनन करी मन भावती ।
श्रीराम शरन प्रिय नाम धाम की निष्ठा भारी ।
दीन अधम हित दया द्रवें भंडारे भारी ॥
कलिमल धोय कृतार्थ किये केते जन नीके ।
लोक लाहु भर भूरि भरे भक्तन के हीके ॥
श्रीराम घाट पर राम ध्वनि मनो मघा झर लावती ।
मौनी जी मन मार के मनन करी मन भावती ॥

* श्रीतुलसीदासजी महाराज नयाघाट *

छप्पय ५३

श्री सरयू तट नए घाट पै तुलसिदास अति प्रेम से ॥
देखें दीन अधीन दरिद्री दुखिया जेते ।
अन्न दान सनमान करें नित पोषण तेते ॥
धनिक बहुत चेताय आपने धर्म करायो ।
सिय पिय जू की कृपा परम पद नीको पायो ॥

सहस वर्तिका आरती अबहुँ होय नित नेम सें।
श्री सरयू तट नए घाट पे तुलसिदास अति प्रेम सें॥

* नानक पंथी श्रीमाधौदासजी महाराज रानूपाली *

छप्पय ५४

रानूपाली में भए माधौदास महान है।
नाम धाम में प्रीति अनोखी इनकी ऐसी।
परम्परा निज पंथ पड़ी गुरुवर की जैसी॥
सिध्ध समृध्धी सहित प्रसिध्धी इन इननै पाई।
द्रवें दीन दुखियान करें संतन सिवकाई॥
अजहुँ दमोदरदास जू नीति प्रीति परधान हैं।
रानूपाली में भए माधौदास महान हैं॥

* श्री विद्यादासजी महाराज जानकीघाट *

छप्पय ५५

श्री बिद्यादास प्रसिद्ध ह्वै सिद्ध साधुता गुन लए।
रहैं जानकी घाट करैं संतन सिवकाई।
अन्तरिच्छ प्रत्यच्छ सिद्धि सब इननें पाई॥
एक समय तस करन आय के घेर लियो है।
तिन्है बाघ को रूप प्रगट ह्वै दरश दियो है॥
श्रीरामवल्लभाशरण जू इनहीं के साधक भए।
श्रीबिद्यादास प्रसिद्ध ह्वै सिद्ध साधुता गुन लए॥

* अनन्त श्री स्वामी रामवल्लभाशरण जी महाराज जानकी घाट *

छप्पय ५६

श्रीगुरु वशिष्ठ इहि कलि मनहु रामवल्लभाशरण भए।
प्रेमी परम उदार सरस अनुरागी पंडित।
ज्ञान बिराग बिचार भक्ति सिरमौर सुमंडित॥

कथा अमृत सनमान अवध में नित्त नेम सों।
संत करें रुचि पान कहैं जब आप प्रेम सों॥
चेतन हित भव सिन्धु के प्रगटे तारण तरण नए।
श्रीगुरु बशिष्ठ इहि कलि मनहु रामबल्लभाशरण भए॥

❀ छप्पय ५७ ❀

सरल सुहृद शुचि सौम्य युत विरति विवेकी प्रेम निधि।
अवध जानकी घाट बाट सिय पिय की जोहैं।
श्रीराम बल्लभा शरण सदा सुर तरु सम सोहैं॥
बसें वैष्णव बृन्द कमल कर तल की छाया।
भव रुज शोक वियोग तिन्हैं व्यापै नहि माया॥
कोटिन गुण कमनीय कल मल भाविक जे साधु सिधि।
सरल सुहृद शुचि सौम्य युत विरति विवेकी प्रेम निधि॥

* श्रीरामवल्लभा शरन जी महाराज सद्गुर सदन गोलाघाट *

❀ छप्पय ५८ ❀

श्री सद्गुरु पद रज के सदा अनुरागी जे अमल मति।
श्रीराम बल्लभा शरण रसिक प्रेमी उदार चित।
उत्सव अनँद बधाए करैं सिय पिय के नित प्रित॥
रस माधुर्य्य अनन्य भावना भक्ति आप की।
छाई जनु ऋतुराज भीति मेटत त्रताप की।
सौन्दर्य बसै इन चरण में मो मन अलि ज्यों कमल रति।
श्री सद्गुरु पद रज के सदा अनुरागी जे अमल मति॥

* श्री स्वामी गोमती दास जी महाराज हनुमत् निवास *

❀ छप्पय ५९ ❀

श्री हनुमत निवास हरि कृपा से फूल फलित इनने कियौ।

संत गोमती दास बड़े परमारथ प्रेमी।
सिद्ध तपोधन रासि अतिथि सेवा के नेमी॥
उत्सव अनँद बधाए करें सिय पिय के नित नए।
परिचय पुष्ट प्रमान अनेकन कविवर ने दए॥
मनों मनोरथ दान को पटो पवन सुत लिख दियो।
श्री हनुमत निवास हरि कृपा से फूल फलित इनने कियो॥

* श्री सीताराम शरण जी जयपुर *

* छप्पय ६० *

श्री सीताराम शरण रसिक बिरही आवेशी बड़े।
जयपुर वासी साधु निष्ठ श्री अवध अवनि में।
निवसे प्रेम अगाध आय आनंद भवनि में॥
सिय स्वामिनि पहुँचाइँ कहै ल्यावे को परिकर।
पुनि समाधिस्त रस लीन दिवस दस दस रह निरभर॥
रच्यो रसिक उर हार इन सुधा रत्न रुचि रुचि जड़े।
श्री सीताराम शरण रसिक बिरही आवेशी बड़े॥

अनन्त श्री विभूषित रसिक शिरोमणि श्रीरामकिशोर शरण जी महाराज कोठा वाले

* छप्पय ६१ *

उज्ज्वल रस अरु शान्त रस मनो एक सँग अवतरयो।
श्रीराम किशोर जु शरन भए जब से सिय पिय के।
उमगे रंग अनंग अंग अँग रसिकन हिय के॥
यहि तन तपन बुझाय लई इन राग रंग की।
भई भावना सिद्ध सजन के अंग संग की॥
सर्वेश्वरि श्री शशिकला स्वयम व्यूह दूसर धरयो।
उज्ज्वल रस अरु शान्त रस मनो एक सँग अवतरयो॥

❋ छप्पय ६२ ❋

श्रीरामकिशोर जु शरन के गुन अनन्त गौरव घनों।
रसिक अनन्य उदार सार सुख छान लियो है।
(श्री) चन्द्रकला जू स्वयम कृपा कर आप दियो है॥
उत्सव अनँद बधाए करैं उनके उमाव से।
रीति पुनीत रसाल रँगीले सरस भाव से॥
इनकौ चरित महान है लघु मति में थोरौ भनों।
श्रीरामकिशोर जु शरन के गुन अनन्त गौरव घनों॥

❋ छप्पय ६३ ❋

शान्ति शील अरु सरसता सकल शरन ह्वै रह गई।
निशि अरु दिवस सिरात प्रिया प्रीतम विहार में।
सुरत रँगीली रमत तहाँ नहिं लहत पार में॥
साकार सिद्धिहू भई इन्हैं सब यही अंग में।
जो जो सुख सरसाए सजन के संग रंग में॥
केतिक जीव कृतार्थ कर सत ऊपर आयू भई।
शान्ति शील अरु सरसता सकल शरन ह्वै रह गई॥

❋ अनन्त श्री सियाशरण जी महराज मधुकर ❋

❋ जप्पय ६४ ❋

श्री युगल चरण पंकज पगे सिया शरण मधुकर मनौ।
रसिक अनन्य उदार सार सुख में रह भीनें।
शील सुमति आगार कृपा में अतिसय पीनें॥
विरति विवेक निधान रसीले दृग हिय गहवर।
कहत सुनत पुलकात ललित लीला नित निरभर॥
सौन्दर्य ललित गौरव घनौ लघु मति में थोरौ भनौ।
श्री युगल चरण पंकज पगे सिया शरण मधुकर मनौ॥

* श्री रसरंग मणि जी महाराज *

* छप्पय ६५ *

सखा राम रसरंग मणि सिय पिय पद पंकज पगे।
छके रहैं दिन रैन मनहुँ छौना अलिनी के।
मधुर मधुर गुंजार केल कहैं लाल लली के॥
श्री भक्तमाल कल गान करैं कवि कोविद रस में।
श्रोता सुमति सुजान सहित आपउ ह्वै बस में॥
भाग भले इनके जगे जो ऐसे नाते लगे।
सखा राम रसरंग मणि सिय पिय पद पंकज पगे।

* श्रीरामबालक दास जी महाराज बड़ी छावनी *

* छप्पय ६६ *

महा मधुर रामायणी राम सु वालिक दास जू।
सरस विभूषित भाव कथा में नए नए भाषैं।
श्रोता सुमति सुजान करैं जो जो अभिलाषैं॥
कोमिल हृदय कृपालु मधुर वाणी मन हारी।
नित्य धाम की रीति मनो इन यहि तन धारी॥
महा काव्य गोस्वामि के सरस रसीले व्यास जू।
महा मधुर रामायणी राम सु वालिक दास जू॥

* महंत श्री पुरुषोत्तम शरन जी महाराज गोलाघाट *

छप्पय ६७

श्री पुरुषोत्तम शरन जू सरस सनेही रस भरे।
सदगुरु सदन महंत रँगीले राग रंग में।
अष्टयाम रस रीति गहैं गहरी उमंग में॥
अधुर भाषणी प्रेम प्रभा रग रग में छाई।
श्री गुरुवर की कृपा रसीली इनने पाई॥

कुशल खंड संदर्भ इन अपने श्रम सुन्दर करे।
श्रीपुरुषोत्तम शरन जू सरस सनेही रस भरे॥

* श्री जनक दुलारी शरण जी बावन महाराज *

* छप्पय ६८ *

श्री जनकदुलारी शरन जू बावनजी भाविक बड़े।
रसिक रँगीले हृदय न इन सम कोऊ देखे।
सगे सुजन श्री अवध और मिथिला के लेखे॥
स्वःसुख तत्सुख भाव भेद पर तर सुख भीने।
रसाचार्य आचार्य चरण में चित लव लीने॥
(श्री) सर्वेश्वरि जू की कृपा पौ बाश पांसे पड़े।
श्री जनकदुलारी शरन जू बावन जी भाविक बड़े॥

* श्रीरामशरन दास जी महाराज लस्गरी *

* छप्पय ६९ *

जे जमातिया संत हैं भ्रमत फिरे लसगर लिए।
श्रीराम शरन महराज बड़े सज्जन रस भोगी।
सद्गुरु सदन निवास किए तज भाव वियोगी॥
संगति रामकिशोर शरन जू की जब पाई।
सरस भाव शृङ्गार रह्यो रग रग में छाई॥
शान्ति स्वच्छता दर्शनी तिलक भाल उज्वल किए।
जे जमातिया संत हैं भ्रमत फिरे ल तगर लिए॥

* श्री लक्ष्मण शरण जी महाराज कामदकुंज *

* छप्पय ७० *

वयोवृध्ध सात्विक सुजन भाविक श्री लक्ष्मण शरन।
युगल नाम अरुधाम इष्ट में निष्ठा भरी।
कामद कुंज किलोल करी इन आनँद कारी॥

दया दान सनमान साधुता सरल सुभायन।
जीवन करें कृतार्थ गिनैं नहिं दाहिन बायन॥
अंत अनोखी गति लई जनम मरण संकट हरन।
वयोवृध्ध सात्विक सुजन। भाविक श्री लक्ष्मण शरन॥

* श्रीरामशोभा दास जी महाराज छावनी *

* छप्पय ७१ *

मुनि वृत्ति महंती इनहिं की उज्वल अमल अदाग है।
श्रीराम सुशोभा दास बड़ें परमार्थ पीनैं।
दृढ़ व्रत सेवा संत लिए कलि की गति छीनैं॥
विषय निरसता भोग सकल इन्द्रिन के त्यागे।
कुंज कुटी में प्रथक रहैं सिय पिय पग पागे॥
सुकृत कमलनो छावनी विकसित कीर्त्ति पराग है।
मुनि वृति महंती इनहिं की उज्वल अमल अदाग है॥

* श्री रघुवीर दास जी महाराज चित्रकूटी जमातिया *

* छप्पय ७२ *

श्री रघुवीर दास महाराज जू बड़े प्रतापी हो गए।
घूमें सदा जमात करें संतन की सेवा।
आप करें उपवास साधु सब पावें मेवा॥
रामायण नित नेम प्रेम से कथा कहत हैं।
श्रोता सुमति सुजान सहस्रन सुख लहत हैं॥
सब गुन शुचि सम्पन्न ह्वै भक्तन के मन मोलए।
श्री रघुवीर दास महाराज जू बड़े प्रतापी हो गए॥

* श्रीरामदास जी महाराज गरजन बाबा छावनी *

* छप्पय ७३ *

श्रीरामदास दसधा निपुन गरजन बाबा सब कहैं।

परमहंस वृति रहैं लहैं सुख नित्त धाम को।
एकहि तत्व निकार लियो इन युगल नाम को॥
राम कोट रनधानि जानि निज नित विहार कों।
करैं चौकसी चारु निशा में चार पार की॥
गर्ज प्रचार प्रचार करें जीवन किरतारथ।
बरषा शीत बयारि सहैं भूले सब स्वारथ॥
एक बार इन प्रीति परिखबे हेतु सगुन भए।
चोरन को वपु धार चतुर चूड़ामनि मिल गए॥
सजन भेंट सौंन्दर्य भइ ललक लाहु लोचन लहैं।
श्रीरामदास दसधा निपुन गरजन बाबा सब कहैं॥

* भक्तमाल के तिलककार श्री भगवान प्रसाद श्रीरूपकला जी *

* छप्पय ७४ *

रूपकला ह्वै सुख लियो श्री भगवान प्रसाद जू।
श्री युगल केलि कलकुंज नवल निर्मित सरयू तट।
तहाँ रमत रस पुंज अहर्निस सिय पिय रट रट॥
गोरंटी के विज्ञ्य किये बहु सुजन भक्त नय।
श्री भक्तमाल को तिलक रच्यो शुचि सुधा स्वाद मय॥
सौंन्दर्य सिया स्वामिनि दियो पियो प्रेम उन्माद जू।
रूपकला ह्वै सुख लियो श्री भगवान प्रसाद जू।

* श्री धर्म भगवान जी महाराज गोलाघाट *

* छप्पय ७५ *

नीति प्रीति उर साधुता इनहीं के पाले परी।
धर्म दास महराज धर्म भगवान कहावें।
बड़े विवेकी मधुर भाव सब से सरसावें॥
बालपने में करी कृपा इनपै रघुराई।

दियौ आपनो रूप राज रस की रसिकाई।
अपनायौ सिय स्वामिनी प्रीति लता फूली फरी॥
नीति प्रीति उर साधुता इनहीं के पाले परी।

* श्रीहनुमत निवास की सखी जी *

* छप्पय ७६ *

हनुमत निवास की सखी जी भली भावना मे रमी।
पुरुष भाव को भान इन्हैं व्यापो नहिं तन में।
कनक भवन की केलि कुंज सुख भावै मन में॥
नवल नाइका रीति प्रीति प्रीतम में राखैं।
नए नए भाव रसाल ख्याल कर करके भाखैं॥
लोक ललक बिवहार की रेखा एकउ ना जमी।
हनुमत निवास की सखी जी भली भावना में रमी।

* पं० श्रीसीताप्रसादजी महाराज बासुदेवघाट *

छप्पय ७७

रहैं बासुदेव घाट पै नए मंदिर में नेम से।
श्रीसीता परसाद बड़े पंडित विज्ञानी।
सख्य भाव रस रीति भली विधि इनने छानी॥
करें संस्कृत काव्य सरस्वति सिध्धी लीने।
तप उर त्याग विराग न इन सम काहू कीने॥
जंत्र मंत्र उर तंत्र से तोषें सब को प्रेम से।
रहै बासुदेव घाट पै नए मंदिर में नेम से॥

* महंत श्रीलक्ष्मणशरनजी महाराज जानकीघाट *

* छप्पय ७८ *

दम्पति के सम्पति सदा उभय भूति इन मान लइ।
श्रीलक्ष्मण शरन महंत जानकी घाट विराजैं।

सीधे सरल स्वभाव सौंज सिय पिय की साजैं ॥
अमित गुनन की गूढ़ कथा में थोड़ी भाखी ।
शरन मैथिली रमन करें सेवा रुचि राखी ॥
श्री गुरु चरण सनेह में मनोवृत्ति मनौ सान दइ ।
दम्पति के सम्पति सदा उभय भूति इन मान लइ ॥

* महंत श्रीरामउदार शरणजी लक्ष्मणकिला *

* छप्पय ७९ *

श्री रामोदार शरण बड़े गुरु निष्ठक परमारथी ।
श्री लक्ष्मण कोट महंत संत परमारथ पीनें ।
उत्सव अनँद बधाव प्रेम सों करें प्रवीने ॥
यथा नाम गुण तासु कीर्ति कमनीय शुभ्र अति ।
सुहृद सरलता जासु कहत रस भीनी मो मति ॥
दान देय सनमान कर प्रति पालै विद्यार्थी ।
श्री रामोदार शरण बड़े गुरु निष्ठक परमार्थी ॥

* शृङ्गार शिरोमणि श्रीसियाराम शरणजी प्रेमी *

छप्पय ८०

भाविक रसिक अनन्य सियराम शरण प्रेमी प्रवल ।
अष्टयाम नित करें गान अरु नृत्य प्रवीनें ।
रूप माधुरी मधुप रहैं तन मन रस भीनें ॥
श्री कृपा निवासी ग्रन्थ मर्म को जानै खासौ ।
दिव्य देश को सुःख आप यहि देह प्रकासौ ॥
श्री मिथिलेश लली जू की कृपा भयो भाग इनको सफल ।
भाविक रसिक अनन्य सियराम शरण प्रेमी प्रवल ॥

* श्री सत्याशरनजी महाराज श्रीसद्गुर सदन गोलाघाट *

छप्पय ८१

श्री सत्याशरन सुजान भए रस श्रृङ्गार महान के।
रहैं कानपुर माँह करें संतन सिवकाई।
इनकी रीत रसाइ काहु ने थाह न पाई॥
गुरु निष्ठा में निपुन नेम से पूजन आवैं।
सकल समृध्धी ल्याय चरन में सब अरपावैं॥
अंत अयोध्या वास कर पद पाये निर्वान के।
श्री सत्या शरन सुजान भए रस शृँगार महान के॥

* परमहंस श्रीरामसुन्दरदासजी गायक बासुदेव घाट *

छप्पय ८२

त्यागी अनुरागी बड़े परमहंस गाइक सरस।
राम सु सुन्दर दास प्रेम की मूरति मानौ॥
व्याह बधाई गीत गाय इननैं रस छानौ।
सांगीत कला के भए अनेकन इनके चेला।
रसावेस में अश्रुधार चल ठेलं ठेला॥
इनके गुन कहत्तन बनत होत हृदय में अति हरस।
त्यागी अनुरागी बड़े परमहंस गाइक सरस॥

* परमहंस श्रीरामदासजी महाराज दरबार लालबर साहब *

छप्पय ८३

श्री रामदास महराज जू परमहंस पक्के प्रवीन।
साँचौ सरल स्वभाय त्याग तप में अति पीनैं।
केतिक जीव कृतार्थ कृपा से अपनी कीनैं॥
संतन की सिवकाइ लाल साहब की सेवा।
तन मन धन सों करी त्याग सब देवी देवा॥

दसधा सुख में सरस नित रहैं रँगीली वृत्ति लीन।
श्री रामदास महराज जू परमहंस पक्के प्रवीन ॥

* श्री नेहलता रसिक जानकी शरण जी *

❀ छप्पय ८४ ❀

श्रीअवध पुरी आनंद मय तहाँ बसहिं जे मधुप मन।
नेहलता श्री रसिक जानकी शरण सुहृद वर।
भक्तमाल निर्माण करी बहु छंदन रस धर ॥
श्री रामायण के व्यास प्रिया प्रीतम अनुरागी।
पद रचना अभ्यास साधु शिरमौर सुरागी ॥
विकसित भरी पराग मय कीर्ति कमलनी हरि जनन।
श्री अवधपुरी आनंद मय तहाँ बसहिं जे मधुप मन ॥

* पं० श्री मेवारामजी मिथिला कुंज *

* छप्पय ८५ *

श्री अवध वास अनुराग से इन महान नीके किए।
श्री पंडित मेवाराम बड़े प्रेमी अनुरागी।
सहज सनेही युगल भावना के बड़ भागी ॥
मिथिला कुंज बनाय मैथिली के गुन गाए।
पर प्रपंच विनसाय सहज साकेत सिधाए ॥
योग यज्ञ तप त्याग कर मिलै न जो पद सो लिए।
श्रीअवध वास अनुराग से इन महान नीके किए ॥

* महंत श्री राम मनोहर दास जी छावनी *

* छप्पय ८६ *

श्रीराम मनोहर दास जू सुहृद छावना के महंत।
रहैं एक रस सदा संत सेवा व्रत लीनैं।
काहू सों मद मोह द्रोह कबहूँ नहिं कीनैं ॥

ऐसे कठिन कराल काल में असन दान कौ ।
निवहा नेम प्रमान मनो निधि ईश खान कौ ॥
छाय रही कीरति विमल राज रितू सी दिग दिगंत ।
श्रीराम मनोहर दास जू सुहृद छावनी के महंत ॥

* महंत श्रीरघुनन्दन शरन जी हनुमत निवास *

* छप्पय ८७ *

श्री रघुनन्दन शरन जू गुन गँभीर दिग्गज मनौ ।
जब से भए महंत संत सेवा व्रत लीने ।
अचल अवध कौ वास करें उत्सव रँग भीने ॥
श्री गुरु चरण उपास्य इष्ट में निष्ठा भारी ।
यदिपि परी बहु भीर डिगे नहि दृढ़ व्रत धारी ॥
शील सनेह सराहनी लघु मति मे थोरौ भनौ ।
श्री रघुनन्दन शरन जू गुन गँभीर दिग्गज मनौ ॥

* श्री सरयू शरन जी (शृङ्गारी) *

* छप्पय ८८ *

लीला स्वरूप शृङ्गार सुख इन महान नीके लियो ।
श्री सरजू शरन सुजान प्रान प्रीतमहिं रिझाए ।
नित नए लाड़ लड़ाय करें उत्सव मन भाए ॥
संत सुजन सुख दैन मनो अवतारइ इनकौ ।
अष्टयाम रस लीन मीन मन भीजो जिनकौ ॥
अचल अयोध्या वास कर गमन न पुन बाहर कियो ।
लीला स्वरूप शृङ्गार सुख इन महान नीके लियो ॥

* श्री सिया रघुनाथशरनजी महाराज हनुमत सदन *

छप्पय ८९

अचल अयोध्या वास कर फलाहार वृत से रहैं ।

शरण सिया रघुनाथ सदन हनुमत में भ्राजें ।
श्रीगुरु निष्ठा अवलम्ब लिए तत्सुख सब साजे ॥
जंत्र मंत्र नुष्ठान नाम धुनि नित्य नेम से ।
साधक जन सुख दैन करें साधन सुप्रेम से ॥
महराज गोमतीदास की प्रिय पध्धिति ए सब गहैं ।
अचल अयोध्या वास कर फलाहार वृत से रहैं ॥

* श्री फकीरेराम गादी के परम्परा के महंत *

* छप्पय ६० *

श्री फकीरे राम की गादा के जे भए महंत ।
श्री राम कान्ताशरन मैथिली शरन कहाए ।
तिनसे सीताराम शरन सब भाँति सुहाए ॥
सेवा उत्सव राग भोग शुचिता रसिकाई ।
शान्ति सतोगुण सिद्धि मनो इनहीं भर पाई ॥
अजहुँ साधुता सत्यता छाय रही है दिग दिगंत ।
श्री फकीरे राम की गादो के जे भए महंत ।

* श्री अवध विहारीदास जी महाराज प्रमोदबन बड़ी कुटिया *

* छप्पय ६१ *

श्री अवध विहारी दास जू कुटिया बड़ी महंत हैं ।
साँचे सरल स्वभाव करैं संतन सिवकाई ।
शत ऊपर भइ आयु तबहुँ मन नाहिं अघाई ॥
युगल नाम को जाप प्रेम से करत रहत हैं ।
माला कर में लिए ललक भर लाहु लहत हैं ॥
इनके गुन सारा हनी जे निरदंभी संत हैं ।
श्रीअवध विहारीदास जू कुटिया बड़ी महंत हैं ॥

* श्रीराम मनोहर प्रसाद जी बड़ी जगह *

* छप्पय ६२ *

बड़ी जगह गादी नवीं नवधा के नव रतन भए।
श्री महंत परसाद मनोहर राम रँगीले।
तेज प्रताप महान उजागर गुन गरवीले॥
श्री धनुर्धारि कौ विभव कियौ विस्तार रूप से।
संत सुजन सनमान करें श्रद्धा अनूप से॥
श्रीदीनबन्धु जू की कृपा अलभ लाभ नित नए लए।
बड़ी जगह गादी नवीं नवधा के नव रतन भए।

* अनन्त श्रीविभूषित विन्दुवा आचार्य्य परम्मपरागत (बड़ा स्थान) *

* छप्पय ६३ *

श्री प्रसाद रघुनाथ से रघुवर प्रसाद लौं जानिए।
नवौ नवेली भक्ति प्रसारी नवधा ऐसी।
विन्दु सम्प्रदाचार्य भनी दसधा में जैसी॥
धनुर्धारि निज इष्ट विभव विस्तार्‌यो नीकौ।
संतन कौ सर्वस्व भाव भक्तन के हीकौ॥
इनकी कीर्ति दिगन्त में उदय अस्त लौं मानिए।
श्री प्रसाद रघुनाथ से रघुवर प्रसाद लौं जानिए॥

* अनन्त श्रीरामरतनदास जी बड़ी जगह *

* छप्पय ६४ *

अधिकारी धनुधारि के बड़ी जगह में जे रहें।
श्री रामरतन के दास खास परिकर सिय जू के।
रास विलास उपास्य नवल नेही पिय जू के॥
पंडित उर प्रिय मिलन चाह उपजी चित माही।
सुघर छवीले छैल मिले द्रुम लतिकन छाँही॥

लख लोचन लोलुप भये मनिपरबत कीं महि गहे।
अधिकारी धनुधारि के बड़ी जगह में जे रहैं ॥

* अनन्त श्री रघुवरप्रसाद जी बड़ी जगह *

* छप्पय ६५ *

श्री रघुबर प्रसाद महराज जू बड़ी जगह के बड़ महंत।
श्री धनुधारी की कृपा भई इन पै अति रूरी।
परम्परा जस लखी करें सिवकाई पूरी ॥
पाषान भवन अति उच्च बनायो प्रभु को ऐसो।
अवध पुरी में कोई नहीं समता को जैसो।
वैभव सकल संभार के सेवें आवें जिते संत।
श्री रघुवर प्रसाद महाराज जू बड़ी जगह के बड़ महंत ॥

* अनन्त श्रीमंगलदासजी के शिष्य गिरधारीदासजी *

* छप्पय ६६ *

डाकौर निवासी संत जे मंगलदास महान भए।
इनके शिष्य प्रधान दास गिरधारी जानो।
अवध पुरी में आय भक्ति रस इननै छानो ॥
राघौ जी पधराए रंगीले राम घाट पै।
नित नये लाड़ लड़ाए छबीले छैल ठाट पै ॥
संतन की सिवकाइ कर अलभ लाभहू लूट लए।
डाकौर निवासी संत जे मंगलदास महान भए ॥

* श्री माधौदास जी रामायणी प्रमोदबन *

* छप्पय ६७ *

जे प्रसिद्ध रामायणी बन प्रमोद में रहत हैं।
माधव दास महान ज्ञान गुण सागर कहिए।
मानस मर्म रसाल प्रगट इनहीं सो लहिए ॥

पढ़ पढ़ केते भये धुरंधर व्यास विवेकी ।
राम चरित रस लान शरम जिन इनकी टेकी ॥
साकार शील सदगुन सदन इनहिं संत सब कहत हैं।
जे प्रसिद्ध रामायणी बन प्रमोद में रहत हैं॥

* महंत श्रीरामचरणदासजी बड़ी कुटिया *

छप्पय ६८

(बन प्रमोद कुटिया बड़ी दास चरण श्रीराम जहँ।)
नाम जाप निरदंभ करैं अति सरल भाव से।
पैकरमा कौ नेंम प्रेम आनन्द उभाव से॥
साष्टांग दंडौत साधु निष्ठा में पूरे ।
कथा रसिक प्रख्याति सर्व प्रिय सज्जन रूरे॥
ग्राम दिए काशी नरेश स्वीकार भए नहिं आप कहँ।
बन प्रमोद कुटिया बड़ी दास चरण श्रीराम जहँ॥

* अनन्त श्रीबलरामाचारी जी (विजय राघव *

* छप्पय ६९ *

(इष्ट धाम निष्ठा बड़ी धवल ध्वजा है फहराई।)
श्री बलरामाचारि स्वामि श्री वृन्दाबन से ।
कौशल पुरि पर वारि दियौ हिय तन मन धन से॥
परिचय पुष्ट प्रमान विजय राघव जू दीनै।
पंडित प्रवर महान वैष्णव श्रीमति पीनै॥
केतिक जीव कृतार्थ कर आप आपनी गति लई।
इष्ट धाम निष्ठा बड़ी धवल ध्वजा है फहराई॥

* अनन्त श्री अर्जुनदास जी (जमातिया) *

* छप्पय १०० *

(भारत में भिरमण कियो इन जमात लै संग में।)

श्री अर्जुनदास महान तपोबल सिद्धि दिखाई।
जनता के हित करन करी संतन सिवकाई॥
खाक चौक निरमान अवध में कीनो नीको।
त्यागी तपसी संत सबहिं के हित को टीको॥
त्याग विराग प्रभाव त्रय ताप न व्यापी अंग में।
भारत में भिरमण कियो इन जमात लै संग में॥

* श्री जानकीदासजी महाराज गुप्तारघाट *

छप्पय १०१

(गुप्तार घाट पै जज्ञ इन करी कला विस्तार कै)
श्री जानकीदास बड़े तपसी उर त्यागी।
भक्ति भाव शिरताज संत सेवी अनुरागी॥
भए गुप्त हरि सिध्ध गुप्त सिद्धी इन पाई।
जोग जुक्ति की रीति प्रीति प्रभु में सरसाई॥
निरदंभ निराली रहन से रहैं सदा मन मार कै।
गुप्तार घाट पै जज्ञ इन करी कला विस्तार कै॥

* श्री कामतादास जी महाराज हनुमान गढ़ी *

छप्पय १०२

(वयो वृध्ध अति ईत जे श्री कामता दास जू)
सुहृद सरल सम चित्त बड़े प्रेमी अनुरागी।
कथा अमृत रस पान करें नित प्रति बड़ भागी॥
संतन की सिवकाइ भक्ति नवधा इन पाई।
अपनी रीति रसाइ गढ़ी में इनहिं निभाई॥
कौन कहै इनकी कथा जे सदगुन की रास जू।
वयो वृध्ध अति ईत जे श्री कामता दास जू॥

* श्रीहरिनारायणदासजी महाराज प्रमोदबन श्रीजानकी निवास *

* छप्पय १०३ *

(श्री हरिनारायन दास जू तपसी उर त्यागी बड़े)
सिवकाना चेताय करें संतन सिवकाई ।
भजन भाव की रीत रँगीली इनने पाई ॥
बन प्रमोद में सृज्यो जानकी नव निवास है ।
भए दरश प्रत्यच्छ प्रथम जब भवो प्रकाश है ॥
पावस ग्रीषम कैसहू छत्ता के नीचे पड़े ।
श्री नारायन दास जू तपसी उर त्यागी बड़े ॥

* श्री कौशल किशोरदास जी महाराज बड़ी छावनी *

* छप्पय १०४ *

(संत सरल सज्जन बड़े बड़ी छावनी के महंत)
कौशल किशोर के दास भए गादी पर जब से ॥
पुर प्रवेश रस रास दरसहू त्यागे तब से ।
गो महिषी प्रतिपाल कृषी कौ धंदा ठानें ।
मुनि वृत सो मन मार रहैं नहिं विष रस जानें ॥
भजन भाव गंभीर जो को कह पावै गुन अनंत ।
संत सरल सज्जन बड़े बड़ी छावनी के महंत ॥

* अनन्त श्रीरामपदारथदासजी महाराज वेदान्ती जानकीघाट *

* छप्पय १०५ *

(सौशील्य माधुरी साधुता मनहुँ इनहिं में रम रई)
श्रीराम पदारथ दास वेदांती बड़े भाव से ।
कनक भवन सम केलि कुंज निरमई चाव से ॥
चरण कमल गुरुदेव बसाए निज हिय थल में ।
विहरें प्रकृति प्रदेश पद्मनी पल्लव जल में ॥

श्रीराम यज्ञ पध्धित सहित इनहीं से परगट भई।
सौशील्य माधुरी साधुता मनहुँ इनहिं में रम रई॥

* पं० श्री अखिलेश्वरदास जी महाराज रामघाट *

* छप्पय १०६ *

(बड़े विवेकी सुहृद वर श्रीअखिलेश्वर दास जू)
परम्परा गह लई सनातन अपनै घर की।
सेवा संत सुजान कृपा से श्री गुरु वर की॥
परम अकिंचन प्रवर प्रेम प्रीतम सरसाए।
उत्सव अनँद बधाए करैं मन भाए सुहाए।
अष्टा दस षट चार के तरल सरल जे ब्यास जू॥
बड़े विवेकी सुहृद वर श्रीअखिलेश्वर दास जू॥

छप्पय १०७

(श्री अखिलेश्वर दास जू महा मोद आँनद मई)
पंडित प्रवर महान ज्ञान विज्ञान उजागर।
शील सनेह निधान संत सेवी श्रध्धा कर।
निरालम्ब निरदंभ कथा अमृत बरसावैं।
साधु जनन उर भक्त भाविकन रुचि रुचि प्यावैं॥
श्री गुरु कृपा कटाक्ष की पूर्ण प्रसादी इन लई।
श्री अखिलेश्वर दास जू महा मोद आँनद मई॥

* रामायणी श्रीस्वामी रामसुन्दरदासजी महाराज छावनी *

* छप्पय १०८ *

(सरल सुहृद रामायणी श्री रामसुसुन्दर दास जू)
मानस मीन प्रवीन दीन दुखियन संतन की।
तन मन धन सों गुप्त करैं सेवा मन मन की॥

द्वादश काव्य रसाल भरैं झरना रसना से ।
करैं निरंतर पान भक्त जिज्ञासु प्यासे ॥
रहन सहन अरु साधुता छमता नमता रास जू ।
सरल सुहृद रामायणी श्रीराम सुसुन्दर दास जू ॥

* अनन्त श्रीप्रेमदास जी रामायणी विरक्त अस्थान्तर *

* छप्पय १०९ *

(श्री प्रेमदास रामायणी मारतंड मानस भए)
देश विदेशन जाय सभा में शोभा पावैं ।
कथा अमृत बरसाय भक्त श्रोतन सरसावैं ॥
केते गूढ़ रहस्य प्रकासैं परम प्रवीने ।
स्वः सुख सुखी स्वतंत्र रहैं अपने रँग भीने ॥
संत दर्शनी वेष में पूज्य भए जहँ जहँ गए ।
श्री प्रेमदास रामायणी मारतंड मानस भए ॥

श्रीसंतदासजी महाराज अधिकारी तपसी जी की छावनी रामघाट *

छप्पय ११०

(श्री तपसी जी छावनी इन महान नीके गही)
संतन की सिवकाइ करी तन मन से ऐसी ।
संतहु दास कहाए रहैं रहनीहू जैसी ॥
सम्प्रदाय की रीति भाँति जानै उर मानै ।
भंडारिन में जय बुलाय जस सब कौ भानै ॥
बिवहार कुशलता कीरती भली भांति भर के लही ।
श्री तपसी जी की छावनी इन महान नीके गही ॥

* श्रीराम शंकर शरन जी महाराज विवहुती भवन *

* छप्पय १११ *

(सरस व्याहुती भवन में श्रीराम शंकर शरन)

नित्य विवाह उछाह करें मिथिला की भाँती।
अगहन में आनंद उमग अंगन न समाती॥
वितरें वस्तु अनेक वसन वासन संतन में।
सिय वनरे की चसक चुभी चोखी तन मन में॥
रस रीति प्रीति इनकी मनो सदा सुहागिल मन हरन।
सरस ब्याहुती भवन में श्रीराम शंकर शरन॥

* गुरु शिष्य श्रीरामकिशोरदासजी तथा श्रीहरिहरदासजी (जन्म स्थान) *

* छप्पय ११२ *

सीधे सज्जन संत जे रामकिशोर सु दास जू।
जन्म स्थान महंत सरल मित भाषी कहिए।
इनकी रीति रसाइ कहाँ लौं गढ़ के कहिए॥
जिनके हरिहर दास शिष्य गादी पै सोहैं।
विनय शील उर नम्र भेष में सबको मोहैं॥
रहन सहन गंभीरता अपने रस की रास जू।
सीधे सज्जन संत जे रामकिशोर सु दास जू॥

* श्रीरामदास जी महाराज राजगोपाल *

* छप्पय ११३ *

(श्रीराज गोपाल स्थान के जे महंत नीके भए)
श्रीराम दास जू रँगे रहैं अपनी रंगत में।
भूल न जावें कबहुँ काहु की दुःस संगत में॥
विद्यारथि प्रतिपाल करे विद्यालय पोषन।
गहैं वैष्णव धर्म त्याग तपहू को तोषन॥
भजन भावना रीति के स्वाद सरस इनने लए।
श्री राजगोपाल स्थान के जे महंत नीके भए॥

* श्रीमौनीजी करपात्री श्री मिथिला वाले *

* छप्पय ११४ *

(श्री मौनी जी करपात्री मिथिला में प्रख्यात्त हैं)
परुपकार परमार्थ छानके धेय बनायो ।
त्याग विराग महान इष्ट अनुराग सवायो ॥
केला के कोपीन अंग पर वसन विहीनें ।
सूकड़ पाकड़ खाय रहैं रँग रस में भीनें ॥
सिय पिय से हिल मिल रहैं सख्य भाव के नात्त हैं ।
श्री मौनी जी कर पात्री मिथिला में प्रख्यात्त हैं ॥

* अनन्त श्रीसीताराम शरण जी महाराज (श्रीलक्ष्मणकिलाधीस) *

* छप्पय ११५ *

(रसिक रास रस भेदिया रस श्रृङ्गार महान के)
कोविद कला प्रवीन करें सम्पादन सब रस ।
परम्परा प्राचीन सम्प्रदाइय चाहिय जस ॥
अधिपति रसिकाचार्य किला लछमन गादी के ।
व्यास विवेकी प्रवर मान मथ प्रति वादी ॥
श्रीसीताराम शरन भले कुशल वाध्य अरु गान के ।
रसिक रास रस भेदिया रस श्रृङ्गार महान के ॥

* छप्पय ११६ *

(सद्ग्रन्थन को सार मथ रस श्रृङ्गार निकार लयो)
श्री सीताराम शरणय बड़े अनुरागी भागी ।
भोग समृध्धी दई सकल सिय जू जो मागी ॥
तहूँ नम्रता विनय दया दीनन पैं ऐसी ।
जहाँ जाँयँ बरसाँयँ सरस रसना से तैसी ॥

कैसहु विमुख विजाति जन उनहू को मन शुद्ध भवो।
सद्ग्रन्थन को सार मथ रस शृङ्गार निकार लवो ॥

* अनन्त श्रीशत्रुहन शरण जी श्रीरसमोद कुंज *

* छप्पय ११७ *

रसिक रँगीले रस भरे श्रीशत्रुघन शरन जू।
युगल नाम युग लक्ष नेम सों जपें निरंतर।
सरयू तट एकांत कुटी में कुंज केलि कर ॥
भक्तमाल कौ भाष्य कियौ रसिकन कौ नीको।
फलाहार व्रत रहैं सुजस कहँ लाल लली को ॥
इनहिं न व्यापी ताप त्रय ऐसे तारन तरन जू।
रसिक रँगीले रस भरे श्रीशत्रुघन शरन जू ॥

* पं० श्री मुक्तीदासजी महाराज हनुमानगढ़ी *

* छप्पय ११८ *

भक्त बड़े भाविक बड़े पंडित मुक्ती दास जू।
श्रीहनुमान गढ़ी में रहैं लहैं रसिकाई मन में।
कैसहु संग कुसंग छुवो नहिं इनके तन में ॥
मानस के मरमज्ञ नम्रता ऐसी इन में।
प्रथम दंडवत करें भेष को देखें जिनमें ॥
प्रीत रीत पालें भली जे सद्गुन की रास जू।
भक्त बड़े भाविक बड़े पंडित मुक्ती दास जू ॥

* रामायणी श्रीराम मोहिनी शरन जी फकीरेरामजी का स्थान *

* छप्पय ११९ *

सुहृद सरस रामायणी राम मोहनी शरन जू।
श्री फकीरे राम कुंज में रहैं रँगीले।
नीति प्रीति रस रीति निवाहैं गुन गरबीले ॥

काव्य रसायन ग्रन्थ गुसाईं जू के भाखैं ।
श्रोता सुमति सुजान सुधा सम नित प्रति चाखैं ।।
संगीत कला अरु वाद्य में सब जन के मन हरन जू ।
सुहृद सरस रामायणी राम मोहनी शरन जू ।।

* अनन्त श्रीविभूषित शृङ्गार रस भोक्ता श्रीविदेहजा शरनजी महाराज *

* छप्पय १२० *

रसिक रँगीले संत जे अपने रस में रग मगे ।
श्री विदेहजा शरन सहचरी रूप सलौने ।
शील सनेह स्वभाव सरस आईं जनु गौने ।।
श्री मानस राम चरित्र कहैं शृङ्गार भाव सें ।
मर्म उपासक मीन सजातिन मिलें चाव सें ।।
विधि प्रपंच सहजहिं सदा इनहिं देखि दूरहिं भगे ।
रसिक रँगीले संत जे अपने रस में रग मगे ।।

* अनन्त श्रीराजकिशोरीवर शरनजी (परमानन्द) जयपुर मन्दिर *

छप्पय १२१

(श्रीराज किशोरीवर शरन परमानंद प्रवीन हैं)
सरल स्वभाय सरोष दोष नहिं एको व्यापे ।
काव्य कला में कुशल्ल किते सदग्रन्थ अलापे ।।
बीरध्वज की शरण लई इन बाला पन से ।
सिय जू के पग लाग त्याग वैभव सब तन से ।।
ध्वजधारी शृङ्गार रस अवध धाम सर मीन हैं ।
श्रीराज किशोरी वर शरन परमानंद प्रवीन हैं ।।

* स्वामी श्रीजानकी बल्लभशरनजी बलिया वाले *

* छप्पय १२२ *

(श्री जानकि बल्लभ शरन को बलिया वाले सब कहैं)

रहे अचारी प्रेम भाव शृङ्गारउ भायौ ।
मधुकर जी के शरन भए तब सब रस पायौ ॥
रँगे प्रीत रस रीत दोपहर मौन रहत हैं ।
कनक भवन की केलि कुंज कौ सुःख लहत हैं ॥
भई सिध्ध जो भावना गहरी गहनी से गहैं ।
श्री जानकि बल्लभ शरन को बलिया वाले सब कहैं ॥

* महंत श्रीरामकृपालशरनजी सद्गुरु सदन गोलाघाट *

*** छप्पय १२३ ***

श्रीराम कृपाल शरन भले सदगुरु सदन महंत भए ।
गुरु वर ज्ञान कृपान गहैं गहरी गहनी में ।
छुऐं न छाया आन रहैं अपनी रहनी में ॥
समय वितक्रम कियौ आप पै विपदा आई ।
तहूँ न तन कौ डिगे रहे जमके अस्थाई ॥
वैराग्य विमलता साधुता इनके गुन काहू न लए ।
श्रीराम कृपाल शरन भले सदगुर सदन महंत भए ॥

* श्री रामगोपालदास जी भइया (जानकीघाट)

छप्पय १२४

(भइया जी भाविक बड़े दास राम गोपाल जू)
करबी कौ अस्थान त्याग अधिकारी पद को ।
करें अयोध्या वास छुए नहि कौनहु मद को ॥
निज भ्राता संबंध किशोरी जू ने दीनौ ।
श्री लक्ष्मी निधि कौ रूप राजसी इनने लीनौ ॥
सगे सजन सारे इन्हैं मानहिं रामहु लाल जू ।
भइया जी भाविक बड़े दास राम गोपाल जू ॥

* परमहंस श्रीमंगलदास जी महाराज बशिष्ठ कुंड *

* छप्पय १२५ *

श्री परमहंस परमारथी मंगल दास महान हैं।
आवें जेते दीन दुखी त्रय ताप तपाये।
योग सिध्ध बल तिन्हैं तोष पोषत संत भाये॥
अनुभव गूढ़ रहस्य अलौकिक कहैं नवीनो।
ज्ञान विराग निधान भक्ति दसधा में भीनो॥
प्रत्यच्छ देव दरशन करें इन सम कोउ न आन हैं।
श्री परमहंस परमारथी मंगलदास महान हैं॥

* अनन्त श्रीसारभौम बासुदेवाचार्य्य जानकीघाट *

* छप्पय १२६ *

(विद्वान बड़े उर दार्शिनिक सारभौम सब कोउ कहैं)
विनय शील सम्पन्न गुनन की गाथा ऐसी।
को कर सकै बखान दिगंतन व्यापी जैसी॥
वेद पुरानन शास्त्र ज्ञान के तत्व निकारो।
निरगुन सगुन सराह आपनो रूप सम्हारो॥
निर्दंभ निराले संत जे इनकी समता ए लहैं।
विद्वान बड़े उर दार्शिनिक सार भौम सब कोउ कहैं॥

* श्रीराम जीवन शरन जी महाराज ऋणमोचनघाट *

* छप्पय १२७ *

(शरन राम जीवन लियो आचारज रस रीत को)
इनको शील स्वभाव भावना भजनहु नीको।
करें संत सिवकाइ और सब लागत फीको॥
श्री लक्ष्मण किला प्रसिद्ध सिद्ध दोहुन की मूरत।
पधराई जो प्रगट भावना सब की पूरत॥

आदर्श जानकीवर भवन गुरु निष्ठा परतीति को।
शरन राम जीवन लियो आचारज रस रीति को॥

❀ अनन्त श्री महावीरदास जी श्रीराम हजूरी जी का मन्दिर जानकीघाट ❀

❀ छप्पय १२८ ❀

(आचारज निष्ठा बड़ी इनहीं की साराहनी)
श्री रामानन्दाचार्य्य अवध में इन पधराए।
श्री महाबिर दास महंती को पद पाये॥
वयो वृद्ध अति शील साधुता शुचिता ऐसी।
श्रीराम हजूरी रीत सरस चल आई जैसी॥
श्री युगल नाम को जाप कर चले महा मग दाहनी।
आचारज निष्ठा बड़ी इनहीं को साराहनी॥

❀ अनन्त श्रीराम मनोहरशरनजी बावन जी का स्थान ❀

❀ छप्पय १२६ ❀

(श्रीराम मनोहर शरन जू बावन जू के संग में)
रसिकाई की रीति प्रीति पोली जीवन भर।
भक्त जनन चेताय भक्ति सरसाई घर घर॥
कुशल नीत बिवहार करें संतन सिवकाई।
परमारथ में प्रथम रेख इनकी दरसाई॥
इष्ट उपासन भाव सब रँगे एकही रंग में।
श्रीराम मनोहर शरन जू बावन जू के संग में॥

❀ श्रीराम प्रसादी शरन जी महाराज सियावर कुंज ❀

❀ छप्पय १३० ❀

श्रीराम प्रसादी शरन जू बड़े सुहृद सज्जन भले।
सिय वर कुञ्ज बनाय रहैं अपने रँग राते।
द्वन्द दोष सब त्याग नहीं माया मद माते॥

निरमल रहनी रहैं गहैं रस रीति पुरानी।
अपनी निधि निरद्वन्द भली विधि इननें छानी॥
श्री सिय वर की कृपा बल फंद न माया के चले।
श्रीराम प्रसादी शरन जू बड़े सुहृद सज्जन भले॥

* श्री कमलाशरन जी महाराज रायगंज अयोध्या *

* छप्पय १३१ *

(श्री कमला शरन महान भए भक्ति भावना प्रेम के)
रायगंज में भवन बनायो इनने ऐसो।
सिय पिय के हित लाड़ लड़ायो अपनो जैसो॥
सरल भाव से रहैं गहैं रसिकन की रीती।
संतन में सद्भाव प्रेम स करें प्रतीती॥
वृद्ध भये तबहूँ रहैं दृढ़ वृत अपने नेम के।
श्री कमला शरन महान भए भक्ति भावना प्रेम के॥

* श्री जयकरनदास जी महाराज हनुमानगढ़ी *

* छप्पय १३२ *

(हनुमान गढ़ी के रत्न जे श्री जै करन दास जू)
परुपकार में प्रीति रहे इनकी उरभानी।
दुखिया जो कोइ जाय ताह तोषैं मन वानी॥
परिकरमा श्रीराम कोट कौ नित नेम से।
युगल नाम को जाप करैं इक लच्छ प्रेम से॥
औरौ गुन कमनीयता शुभ सदगुन की रास जू।
हनुमान गढ़ी के रत्न जे श्री जै करन दास जू॥

* अनन्त श्रीसुखरामदासजी श्रीतुलसीदासजी का स्थान नयाघाट *

* छप्पय १३३ *

(श्री सुखरामदास महराज जू तुलसिदास अस्थान के)

पंडित और प्रवीन ब्रह्म निष्ठा में पूरे ।
अग्नि होत्री बने रहैं सँग में गँठ जोरे ॥
मुनि पध्धिति इन गही गहन उर खूब निबाही ।
उज्वल अमल अदाग राग रंचहु नहिं चाही ॥
बिवहार कबहुँ नहिं इन किए कहूँ खान उर पान के ।
श्रीसुखराम दास महराज जू तुलसिदास अस्थान के ॥

" अनन्त श्रीसीतारामाचारी जी नजर बाग *

* छप्पय १३४ *

(सुहृद सरल चित नित रहत हर्षित हिय अनुराग मय)
श्री सीतारामाचारि सरस प्रिय भाषी पंडित ।
कथा कहत अति ललित रसिक श्रोतन मन मंडित ॥
अवध वास के हेतु शान्ति प्रद सदन बनायो ।
सौम्य सकुल तहँ निबस नँदिंनि मानस सुख पायो ॥
महा भाग भूषण भवन इनहिं न व्यापी ताप त्रय ।
सुहृद सरल चित नित रहत हर्षित हिय अनुराग मय ॥

* अनन्त श्रीजानकी वल्लभशरणजी मंगल भवन *

* छप्पय १३५ *

(बड़े दर्शनी संत श्री जानकि वल्लभ शरन जू)
मंगल भवन महंत भावना भक्ति सुहाए ।
रजवाड़े चेताय सुजन जनहू सरसाये ॥
शिष्य रँगीले सर्व एक से एक निराले ।
केल कुतूहल रंग ढंग के लाले पाले ॥
नीति प्रीति बिवहार सब सबके मनको हरन जू ।
बड़े दर्शनी संत श्री जानकि बल्लभ शरन जू ॥

* श्री जनार्दनदास जी महाराज तपसी जी की छावनी के महंत *

छप्पय १३६

तपसी जी की छावनी इन महान सेवन करी ।
श्री जनार्दनदास महंती पद पै आए ।
तबसे भयो प्रकाश सती सेवक चेताए ॥
सकल समृद्धो ल्याय करी संतन सिवकाई ।
अपने त्याग विराग भक्ति की ध्वज फहराई ॥
सदाचार सदभावना कीर्ति लता फूली करी ।
तपसी जी की छावनी इन महान सेवन करी ॥

* परमहंस श्रीदाशरथीदास जी श्रीअयोध्याजी *

छप्पय १३७

श्री दाशरथि दास को परमहंस सब कोइ कहैं ।
रहैं राजसी वेष लेस नहिं राजस तम को ।
सरस सात्वकी हृदय रँगो नहिं मम अरु हमको ॥
किते जनन के महा मनोरथ सफल किए इन ।
श्रृध्धा भक्ति अनन्य आपकी करी सुजन जिन ॥
दरस परस संगति करत चकित चित्त सौ ह्वै रहै ।
श्रीदाशरथि दास को परम हंस सब कोइ कहै ॥

* अनन्त श्री कार्तिकेय स्वामी जी गुप्तारघाट *

छप्पय १३८

(श्री कार्तकेय स्वामी बड़े अपने मत के पुष्ट हैं)
गए जहाँ जहँ आप निरालो पदवी पाई ।
तत्व भावना भक्ति रही इनमें सरसाई ॥
जो जन इनको लिए शरन ते पार भए हैं ।
निरगुन सगुन स्वरूप ज्ञान इन मान लए हैं ॥

गुप्तार घाट पै वास कर रहत सदा संतुष्ट हैं।
श्री कार्तकेय स्वामी बड़े अपने मत के पुष्ट हैं।

* अनन्त श्री पुजारी महाबीरदास जी बड़ी जगह *

* छप्पय १३९ *

श्री महाबिर दास को बड़े पुजारी सब कहैं।
श्री धनुधारी निज इष्ट मान सेवा इन कीनी।
गुरु निष्ठा में प्रवल भावना भक्ति नवीनी॥
उत्सव अनंद बधाए मनावें अति उमाव से।
संत जनन सुख देन करैं सतकार चाव से॥
सेव्य सुखद अनुभव दए ताही में भीने रहैं।
श्रीमहाबिर दास को बड़े पुजारी सब कहैं॥

* अनन्त श्रीरघुबरदास जी सीढ़ीपुर स्थान *

* छप्पय १४० *

नीति निपुन सदगुन सदन सीढ़ीपुर अस्थान के।
श्री रघुवर दास महंत परम अनुरागी भागी।
परुपकार परमार्थ करैं सब के हित लागी॥
युगल भावना भक्ति स्वयम अरचा सेवा की।
इनकी प्रीति प्रतीत रँगीली रस की छाकी॥
रहैं आपनी रहन सों राग विरागहु ज्ञान के।
नीति निपुन सदगुन सदन सीढ़ीपुर अस्थान के॥

* श्री रूपकला कुंज के दाम्पत्य महंत श्रीरामभूषण शरण जी *

* छप्पय १४१ *

श्री रूपकला की कुंज के जे महंत खासे भए।
भूषन श्री रघुवंस शरन रस रीति प्रीति में।
साँचे सरल स्वभाव झुके नहिं कहुँ अनीति में॥

श्री रूपकला जू सरस भावना ऐसी कीनी।
इनकी माँग सुहाग भाल पूरी भर दीनी॥
दम्पति दोउ सराहनी अलभ लाभ इनने लए।
श्री रूपकला की कुंज के जे महंत खासे भए॥

* श्री माधौदास जी तथा श्रीरामनरायनदासजी शृङ्गार भवन *

* छप्पय १४२ *

गुरु भाइ दुहू गौरव घनौ पंडित प्रवर महान हैं।
श्री नरायन दास व माधौ दास कहावैं।
केते ग्रन्थ प्रकाश गूढ़ आसय दरसावैं॥
विद्या दान सुजान करें निरहेतुक मन से।
सुहृद सुशील निधान साधुता सोहै तन से॥
शृङ्गार भवन सरकार कौ करत सदा गुन गान हैं।
गुरु भाइ दुहू गौरव घनौ पंडित प्रवर महान हैं॥

अनन्त श्रीसियाशरण मधुकर के शिष्य श्रीरामप्रियाशरनजी मधुकरिया युगल जोड़ी

* छप्पय १४३ *

जोड़ो युगल कहाय के भाग भले इनके जगे।
राम प्रिया के शरन सहचरी सीता दोऊ।
इनकी समता सहज साँचहू लहै न कोऊ॥
मधुकर जी के शरन मधूकरि वृति लिए हैं।
रसिकाई की रीत प्रीत सब धरैं हिए हैं॥
एकहि सँग तन त्याग के, स्वःस्वरूप सुख में पगे।
जोड़ी युगल कहाय के भाग भले इनके जगे॥

* श्री अयोध्याशरन जी महाराज बधाई भवन *

छप्पय १४४

श्री अयोध्या शरन जू गुरु निष्ठा में पीन है।

नेम लिए प्रति बर्ष बधाई करैं सुहाई ।
तेहि में भोजन वस्त्र करैं संतन सिवकाई ॥
नइ निकुंज को नाम बधाई भवन धराए ।
ऐसे संत सुजान सरल सबके मन भाए ॥
हनुमत निवास महाराज के सुहृद शिष्य अति दीन हैं ।
श्री अयोध्या शरन जू गुरु निष्ठा में पीन हैं ।

* श्री गमला बाबा *

* छप्पय १४५ *

धरे रहैं गमला बहुत नाना विधि फुलवाद के ।
गमला बाबा बड़े रँगीले राम रास के ॥
रंग रंग के ढंग सजैं सिय पिय विलास के ।
मुनि पध्धिति सो रहैं करैं झूलन को उत्सव ।
जावें जेते संत तिन्हे ध्यावें उठ नव नव ॥
मदमाते झूमत रहैं झोकन सों इहलाद के ।
धरे रहैं गमला बहुत नाना विधि फुलवाद के ॥

* श्री रघुबरदासजी महाराज छोटी कुटिया *

छप्पय १४६

श्री रघुबर दास महंत जू छोटी कुटिया के भये ।
बड़े धीर अरु सुजन समृध्धी सब सरसाई ।
भजन भावना रीति प्रीति प्रभु में इन पाई ॥
सब में सहज सनेह देह सुख दुख सम मानै ।
सरल भाव से रहैं नीति बिवहारहु जानै ॥
गुन गाथा साराहनी भूरि भाग सब सुख लए ।
श्री रघुबरदास महंत जू छोटी कुटिया के भये ॥

* अनन्त श्रीरामस्वरूपदासजी इच्छा भवन स्वर्गद्वार *

* छप्पय १४७ *

स्वर्गद्वार के रत्न जे राम स्वरूप सुदास जू।
इच्छा भवन महंत नीति अरु प्रीति सवाए।
अपने बल पुरुषार्थ समृध्धी सकल बढ़ाए॥
श्रीहनुमंत लाल के दरस मंगला करें नेम सें।
शत अवधी की आयु तबहुँ पग चले प्रेम सें॥
भजन भाव इनको भलो नेह निपुन गुन रास जू।
स्वर्गद्वार के रत्न जे राम स्वरूप सुदास जू॥

* बिजावर निवासी परमानन्द लटौरिया जी *

छप्पय १४८

आचारी वैष्णव भले परमानन्द लटौरिया।
उज्जवल रहनी रहैं कहैं सब निर्मल बानी।
संत सुजन सों प्रीति सदा साँची कर मानी॥
सत संगति में सुमत नीति में निपुण सयाने।
कर वृन्दाबन बास बहुर कामद गिरि आने॥
पुनि अवध जाय तन त्याग किय भए महल के पौरिया।
आचारी वैष्णव भले परमानन्द लटौरिया॥

* पं॰ प्रवर श्री छेदीरामजी जोत्तषी *

* छप्पय १४९ *

दइवज्ञ्य बड़े विद्वान हैं पंडित छेदीराम जू।
मुनि पध्धिति से रहैं सदा निरदंभ निराले।
शान्ति शिरोमणि सिध्धि परी सब इनके पाले॥
आवें जेते सुजन तिन्हैं त्रइ काल भाष के।
करें सबै संतोष अनिष्टन सबै नाष के॥

इनके सम एही भए सरल सुहृद निषकाम जू।
दइवइय बड़े विद्वान हैं पंडित छेदोराम जू॥

* श्री जयकरनदासजी महाराज पुजारी हनुमान बाग *

❀ छप्पय १५० ❀

आदर्श संत सेवा करी इन महान नीके भली।
श्री हनुमान बाग के प्रमुख जैकरनदास पुजारी।
अष्टयाम नित नाम कीर्तन के वृत धारी॥
निरालम्ब निष्काम मूरती सौ सौ राखैं।
तहूँ न माने हिचक मारुती कौ बल भाखैं॥
अपनी पारस परस के अभ्यागत रुचि पाली पली।
आदर्श संत सेवा करी इन महान नीके भली॥

❀ छप्पय १५१ ❀

स्वामी श्री महराज को दास जयकरन सब कहैं।
रहैं अयोध्या माहिं जहां हनुमन्त सुखदानी।
नाम धुनी में प्रीत प्रेम सें इननै ठानी॥
सुहृद सुशील स्वभाव साधु संतन की सेवा।
जपें जपावें नाम न जानैं देवी देवा॥
नए नेह अनुराग में रस शृङ्गार राते रहैं।
स्वामी श्रीमहराज को दास जयकरन सब कहैं॥

* श्री जयरामदास जी महाराज बड़े पुजारी श्रीहनुमान बाग *

❀ छप्पय १५२ ❀

श्री जैरामदास महराज को बड़े पुजारी सब कहैं।
सुमति साधुता पूर्ण प्रेम परमारथ पोनें।
संतन की सिवकाइ करें तन मन धन दीनें॥

नीति नम्रता निपुन सुहृद सबके प्रिय ऐसे ।
शीतल मन्द सुगन्ध सरस सु समय में जैसे ॥
गुरुदेव इष्ट आराध सुख इनके सम एही लहैं ।
श्री जैराम दास महराज का बड़े पुजारी सब कहैं ॥

* श्री हनुमान शरन जी (नए सखा) *

* छप्पय १५३ *

नए सखा के नाम से जे महान नीके भए ।
हनुमान शरन जू नाम बड़े अनुरागी प्रेमी ।
अपनै रस की रीत गहन में गहरे नेमी ॥
वैराग रँगीली रीत निबाहो अपनौ ऐसौ ।
उज्जवल अमल अदाग कहो संतन को जैसो ॥
अंत इष्ट के धाम को युगल नाम जपते गए ।
नए सखा के नाम से जे महान नीके भए ॥

* श्री पुजारी अयोध्यादास जी श्रीहनुमान बाग *

* छप्पय १५४ *

श्री हनुमान बाग में प्रथम ए भए पुजारी रस भरे ।
श्री अयोध्या दास राम धुनि नाच गाय कें ।
करें प्रेम सें खूब उमग उर में बढ़ाय कें ॥
अष्टजाम उर नेंम नवाही इनहिं चलायौ ।
देस विदेसन आज ध्वजा तेहि कौ फहरायौ ॥
संतन की सिवकाइ कर अलभ लाभ लूटे खरे ।
श्री हनुमान बाग में प्रथम ए भए पुजारी रस भरे ॥

सिद्ध शिरोमणि अनन्त श्रीविभूषित स्वामी घनश्यामदास स्थान खरवेरुवा जिला रायबरेली

छप्पय १५५

परम्परा श्रीं विन्दु में भए सिद्ध जे संत हैं ।

राय बरेली जिला खरिवरुआ ग्राम कहावे।
श्री घनश्याम दास की कीर्ति तहाँ ध्वज सी फहरावें॥
इनकी समाधि पै अजहुँ मनोरथ सब कोउ पावे।
शरद पूर्णमा दिवस खूब मेला भर जावे॥
मुनि पध्धिति गुन गनन के कहत मिलत नहिं अंत हैं।
परम्परा श्री विन्दु में भए सिद्ध जे संत हैं॥

* सम्मिलित महानुभाव *

* छप्पय १५६ *

अवध पुरी के रत्न जे सब संतन सरदार हैं।
रघुबरप्रसाद श्री बड़ी जगह गादी के अधिपति।
श्री रामानुज दास राज गोपाल सुमत्ति अति॥
खाकी श्री भगवान दास भाविक समाज के।
श्रीराम पदारथ दास सजाती सवइ काज के॥
मो मति लघु इन गौरव घने कथनो कथें अपार हैं।
अवध पुरी के रत्न जे सब संतन सरदार हैं॥

* अनन्त श्रीरामानुजदास जी राज गोपाल *

* छप्पय १५७ *

श्री रामानुज दास जू सज्जन सुमति सुशील हैं।
राज गुपाल स्थान महंती इनने पाई।
जब से भये महंत रीत सब खूब निभाई॥
बोल चाल बिवहार कुशलता ऐसी मीठी।
कबहुँ न करकस बात कहैं जो लागै सीठी॥
ज्ञान मान विद्वानहू भजन भाव गरवील हैं।
श्रीरामानुज दास जू सज्जन सुमति सुशील हैं॥

* महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी छावनी *

*** छप्पय १५८ ***

श्री मनीराम महाराज की सुखद छावनी के महंत।
दास नृत्य गोपाल बड़े सौसील्य सुहृद वर।
विद्या विनय दयालु दोनताई के सर वर॥
संतन को सिवकाइ करें तन मन सों नीकी।
इनकी गुन गरवाइ कहत रुचि उपजत ही की॥
यह अकाल गति गहन है तबहुँ विमुख नहि जात संत।
श्री मनीराम महाराज की सुखद छावनी के महंत॥

* अनन्त श्रीजानकी जीवनशरनजी दरबार लाल साहब *

*** छप्पय १५९ ***

तीन पुस्त की भावना इनहीं के द्वारा फली।
श्री जानकि जीवन शरन महल में महल बनायो॥
अपने तप बल ध्वजा लाल साहब फहरायो॥
पद रचना रस भाव अनौखो इनकौ ऐसो।
पूर्वा चार्य प्रधान लखायौ अनुभव जैसो॥
नीति निपुन परमार्थ मय प्रीति रीति रँग रस रली।
तीन पुस्त की भावना इनहीं के द्वारा फली।

* श्रीकमल नयनाचारी जी विजय राघव *

*** छप्पय १६० ***

निरलोभी निरदंभ है कमल नयन स्वामी भले।
प्रथम तपस्या करी बद्रिका आश्रम जाके।
पीछे भए महंत विजय राघव में आके॥
सम्प्रदाय की रीति करें अनुभव एकांती।
शील सतोगुन रूप विराजी इनमें शांती॥

इष्ट विजय राघव मिले गुरु निष्ठा फूले फले।
निरलोभी निरदंभ हैं कमल नयन स्वामी भले॥

* परमहंस श्रीरामचन्द्रदास जी रामघाट *

* छप्पय १६१ *

बाचाल विनोदी हास्य रस परमहंस श्रीरामचन्द।
जहँ जहँ सभा समाज होत संतन की सादर।
तहँ तहँ आप प्रधान मंच पर पावहिं आदर॥
करहिं निरूपण तत्व वैष्णव धर्म प्रचारैं।
सोहैं सुन्दर भेष पञ्च माला उर धारैं॥
श्रीराम घाट पै रास सुख दियो इनहिं आनन्द कन्द।
बाचाल विनोदी हास्य रस परमहंस श्रीरामचन्द॥

* श्रीराम उदारदासजी मोझा *

* छप्पय १६२ *

श्री मौनी जी महराज के प्रिय अनन्य जे जानिए।
माझा की गादी अबाद संतन को सेवा।
नाम धुनी नित नेम करावें अचल अभेवा॥
आवें जेते संत तिन्हैं अपनावैं ऐसे।
मनो महा निधि मिली सरित सरजू में जैसे॥
श्री रामोदार सुदास जू गुरु निष्ठा पर मानिए।
श्रीमौनीजी महराज के प्रिय अनन्य जे जानिए॥

* अनन्त श्रीबासुदेवदासजी बड़ी कुटिया *

* छप्पय १६३ *

श्री बासुदेव दास जू भागवान भक्तहु भले।
जब से भये महंत बड़ी कुटिया में सोहैं।
अपने शील स्वभाव गुनन में सबको मोहैं॥

अस्थान उन्नती करी संत सिवकाई करके।
उज्जवल रहनी रहैं साधुता उर में धर के॥
इनके गुन गंभीर हैं गैल न गहवर की चले।
श्री बासुदेव दास जू भागवान भक्तहु भले॥

* रामायणी श्रीकान्तशरनजी गोलाघाट *

* छप्पय १६४ *

श्रीकांत शरन रामायणी मानस के मरमी बड़े।
श्री रामायण विनय पत्रिका तिलक कियो है।
सद्ग्रन्थन को सार आपने भलो लियो है।
रहनी विमल विवेक बड़ी उज्जवल अदाग है।
भजन भाव को रीत गहैं पध्धिति विराग है॥
इनकी सुमति सराहनी अहं अटारी ना चढ़े।
श्रीकांत शरन रामायणी मानस के मरमी बड़े॥

* अनन्त श्रीसियावरशरनजी (मुनी जी) सियापिया निवास *

* छप्पय १६५ *

सिय पिय निवास के मुनी जो सियवर शरन पुनीत हैं।
पय अहार कर रहैं लहैं सुख सिय पिय जू कौ।
लोक विषय बिवहार न जानै कछु काहू कौ॥
करें संत सिवकाइ भक्ति अपनी मन भाई।
इनकी प्रीति प्रमान रीति सबको सुखदाई॥
ऐसे सुहृद सराहनी सब काहू के मीत हैं।
सिय पिय निवास के मुनी जी सियवर शरन पुनीत हैं॥

* अनन्त श्री हरिहर दास जी जन्म स्थान *

* छप्पय १६६ *

श्री हरिहर दास महंत जू जन्म अस्थान प्रधान हैं।

बिवहार कुशल अरु नम्र दीनता इनमें ऐसी।
संत सुजन में प्रीत भावना भक्ती तैसी॥
परम्परा टकसार रहन उर सहन सलोनी।
इनकी गुन गरवाइ कहौं जितनी सब नौनी॥
लोक लाहु परलोकहू जे सब विधि दोउछान हैं।
श्रीहरिहरदास महंत जू जन्म अस्थान प्रधान हैं॥

* श्रीस्वामी मधुसूदनाचारी जी अशर्फी भवन अयोध्या *

* छप्पय १६७ *

श्रीमधु सूदन आचारि जू अवध पुरी में आय कें।
अपने भजन प्रभाव आपनी प्रभा प्रकाशी।
विद्यारथि प्रतिपाल भवन निरम्यौ सुखरासी॥
श्री अरचा विग्रह प्रेम आप कौ शोभित ऐसौ।
शरद समय क्षो इन्दु मनौ राका निशि जैसौ॥
कीरति विजय विभूति इन देश विदेशन पाय कें।
श्रीमधु सूदन आचारि जू अवधपुरी में आय कें॥

* भक्तमाली श्रीरामशरनदासजी महाराज रामघाट *

* छप्पय १६८ *

श्रीराम शरन के दास जू भक्तमालि भाविक सरस।
श्रीराम घाट में भलौ ठाट अलवेलौ ठान्यो।
मन्दिर नव निरमान कियो सो सब ने जान्यो॥
देश विदेशन जाय कथा अमृत बरसावैं।
संतन की सिवकाइ करें जो संपति पावैं॥
वैराग विमलता साधुता कहतन में होवै हरस।
श्रीराम शरन के दास जू भक्तमालि भाविक सरस॥

* महंत श्रीरामसूरत शरण जी सद्गुर सदन गोलाघाट *

छप्पय १६९

श्रीसद्गुरु पद रज के रसिक श्रीरामसूरत शरन।
जब से भये महंत करी संतन सिवकाई।
ऐसो कठिन कुकाल रीत सब तबहुँ निभाई॥
उत्सव अनंद बधाए करें सिय पिय के ऐसे।
परम्परा लख लए भाव रसिकन के जैसे॥
सब सराहना योग गुन भये सुफल चारउ चरन।
श्रीसद्गुर पद रजके रसिक श्रीराम सूरत शरन।

* श्री हरिनाम दास जी कथावाचक व्यास (छावनी) *

छप्पय १७०

श्री हरिनाम दास अनुराग से कथा छावनी में कहैं।
रहैं रँगीली रहन काहु से कछु न चहै हैं।
विमल विवेक विराग पध्धिती खूब गहे हैं॥
सेवक सतो चिताय समृध्धी ल्यावें जेती।
रहैं बाटिका मध्य विलस के अपनी तेती॥
स्वछंद सलौने स्वाद सब मन मन के नित नए लहैं।
श्री हरिनाम दास अनुराग से कथा छावनी में कहैं॥

* महत श्रीसियाशरनजी महाराज बावन जी का स्थान श्रीवैदेही बल्लभ कुंज *

* छप्पय १७१ *

श्रीबावनजी महाराज के मनोराज को सिय शरन।
पूरन कियौ उदार हृदय श्रध्धा सरसाई।
नवल निकुंज बनाय अंग प्रत्यंग सजाई॥
अलंकार शृङ्गार सकल श्री बल्लभ जू के।
समय समय अनुहार किए नहिं एकउ चूके॥

सेवक सती समाज के निज निपुनाई हिय हरन ।
श्रीबावनजी महाराज के मनोराज को सिय शरन ॥

* महंत श्रीवैदेही शरनजी (श्रीहनुमत निवास *

* छप्पय १७२ *

श्री वैदेही शरन जू हनुमत निवास के भए महंत ।
लरकाईं से प्रीति गुरू चरनन में कीनी ।
शील सुभाव विनीत निराली पध्धिति लीनी ॥
मर्यादा अस्थान निभावत नीके ढँग से ।
सब कौ कर सनमान रमावें अपने रँग से ॥
भजन भावना रीतहू करें सबइ जो करें संत ।
श्री वैदेही शरन जू हनुमत निवास के भए महंत ॥

* श्री वैदेही शरन जी महाराज पंच महला सिमथर वाले *

* छप्पय १७३ *

जे अनन्य रस रास के भाविक बड़े महान हैं ।
सिमथर से इत आय अवध में भए अस्थाई ॥
पच महला में नवल कुंज नीकी बनवाई ।
केते जीव कृतार्थ करैं रसिकाई दे कें ।
अपने प्राणाधार संग प्रीतम को लेकें ॥
श्री वैदेही शरन जू गुन गौरव की खान हैं ।
जे अनन्य रस रास के भाविक बड़े महान हैं ॥

* अनन्त श्री पं० रामकुमारदास जी (मणिपर्वत) *

छप्पय १७४

अष्टादस षट चार अरु सदग्रन्थन संचय कियौ ।
श्रीराम कुमार सुदास बड़े अनुरागी त्यागी ।
निर्दंभी निर्लोभ सुमति सिय पिय पग पागी ॥

मानस तत्व निधान काव्य कौशल रसिकाई ।
मनि पर्वत की मनो महानिधि इनने पाई ।
बिवहार वृति से विलग ह्वै परमारथ भीजो हियो ।
अष्टादस षट चार अरु सदग्रन्थन संचय कियो ॥

* अनन्त श्री रामसेवक दास जी चतुर्भुजी भक्ती आश्रम *

* छप्पय १७५ *

चतुरभुजी जे संत हैं राम सुसेवक दास जू ।
प्रेमी रसिक उदार सार सुख में सरसानैं ।
रहैं निराली रहन अपनपौ अपनों छानैं ॥
भाव भावना तत्व उपासक रीति प्रीति के ।
लीन्हैं अंश निकार आपनी रुचि सुरीत के ।
दीन हीनता पद लिए सब सदगुन की रास जू ।
चतुरभुजी जे संत हैं राम सु सेवक दास जू ॥

* श्री सनकानन्दगिरि स्वामी नयाघाट *

* छप्पय १७६ *

स्वामी सनकानन्द गिरि भागवान भोगी भले ।
नए घाट पर नयौ आश्रम आप बनायौ ।
बहु विभाग विस्तरे औषधालय खुलवायौ ॥
सबकी सेवा करें नीत अरु प्रीत रीत से ।
कहौं कहाँ लौं महत गाय गुन कौन गीत से ॥
शक्ति शिरोमणि की कृपा सदा रहैं फूले फले ।
स्वामी सनकानंद गिरि भागवान भोगी भले ॥

* श्रीमाधौदास जो महाराज पुजारी छावनी *

* छप्पय १७७ *

सुहृद पुजारी पूज्य जे दयालू माधौ दास जू ।

सरल सुशील स्वभाव छावनी में इनहीं कौ।
छाया छत्र समान संत सेवा में नीकौ॥
कुशल नीति बिवहार भजनहू में भर पूरे।
इनके गुन अनमोल इनहिं में रम रए रूरे॥
त्रय महंत सिवकाइ के भए पात्र विश्वास जू।
सुहृद पुजारी पूज्य जे घालू माधौ दास जू॥

* अनन्त श्रीश्याम सुन्दर दास जी (नम्र रामायणी) *

छप्पय १७८

जे नम्र बड़े रामायणी श्याम सु सुन्दर दास जू।
महा मनोहर मधुर भाव से कथा कहत जब।
श्रोता सुजन समाज सरस रस डूब जात तब॥
व्यंग विनोद अपार अलापें रंग रंग के।
को कर सकै बखान सुलच्छन अंग अंग के॥
श्री सद्गुरु कृपा कटाच्छ से भये सदगुन की रास जू।
जे नम्र बड़े रामायणी श्याम सु सुन्दर दास जू॥

* भक्तमाली श्रीचन्द्रकला शरण जी गोलाघाट *

* छप्पय १७९ *

भक्तमालि जे रसिक वर चन्द्रकला जू के शरन।
साँचे सरल स्वभाव नम्रता रग रग व्यापी।
रहन सहन रस रीत मनहुँ इनहीं में थापी॥
मिली महल की टहल कथा कहवे की खासी।
सुनें युगल सरकार सुलभ सब अवध निवासी॥
सद्ग्रन्थन को सार सब दान करत भव भय हरन।
भक्तमालि जे रसिक वर चन्द्रकला जू के शरन॥

* अनन्त श्रीजानकीशरणजी (मधुकर) श्रीचारुशीला कुंज जानकीघाट *

* छप्पय १८० *

रसिकाई शृङ्गार रस दृढ़ अनन्य ह्वै इन लई।
मधुकरिया मन मस्त जानकी शरन कहावैं।
अपने मन की रीत भली विधि कह समुझावैं॥
भाव भावना ग्रन्थ कथा कहैं नित्य नेम सों।
माइ वाइ हू रहैं टहल सब करैं प्रेम सों॥
केलि कुंज निर्मान कर चारुशिला जू की नई।
रसिकाई शृङ्गार रस दृढ़ अनन्य ह्वै इन लई॥

* श्री अंजनीनन्दन शरनजी (मानस पीयूष के रचयिता *

* छप्पय १८१ *

संत चरन अमृत सदा शीत प्रसादी इन लई।
अंजनि नंदन शरन भक्त भाविक अनुरागी।
मानस पियूष निरमयौ इनहिं नै सरबस त्यागी॥
भक्तमाल कौ नेम सुनहिं उर प्रभुहिं सुनावैं।
रुचि रुचि व्यंजन बनै भोग छप्पन लगवावैं॥
वैराग विमल उर दीनता सहज सुभाइन बन गई।
संत चरन अमृत सदा शीत प्रसादी इन लई॥

* अनन्त श्रीबासुदेवाचार्य्य ब्रह्मचारी *

* छप्पय १८२ *

श्री बासुदेव आचार्य को ब्रह्मचारि सब कोउ कहैं।
इनकी रीति प्रचंड खंड खंडन में नाचो।
सेवा संत समाज करी साहित्यक साँचो॥
रहैं निराली रहन साधुता शुचिता ऐसी।
जैसी पत्र पुरैन नीर में निमही तैसी॥

भजन भावना स्वात्म सुख गुप्त भाव सों लहत हैं।
श्री वासुदेव आचार्य को ब्रह्मचारि सब कोउ कहत हैं॥

* श्रीरामबालकाचार्य्य योगेश्वर (गुजराती)

* छप्पय १८३ *

श्रीराम बालकाचार्य्य को योगेश्वर सब कोइ कहैं।
गुरजर देश प्रधान तहाँ के जे बड़ भागी।
सकल समृध्धी सहित महंती तहँ की त्यागी॥
करें अवध को वास संत सेवा मन भाई।
ज्ञान भक्ति बैराग सभ्यता रग रग छाइ।
परोपकार परमार्थ कर मुनि पध्धिति गहरी गहैं।
श्रीराम बालकाचार्य्य को योगेश्वर सब कोइ कहैं।

* श्री रामनरायनदास जी श्रीरघुनाथ कुंज *

* छप्पय १८४ *

श्री रघुनाथ कुंज में रमत हैं राम नराइन दास जू।
बड़े दर्शनी संत रहैं अपनी रहनी में।
संतन की सिवकाइ गहैं गहरी गहनी में॥
भजन भावना प्रीत रीत जानै सब ऐसी।
गुरुवर दई लखाय लखक इन लई है तैसी॥
ममता मोह विनास लइ हरि चरनन की आस जू।
श्रीरघुनाथ कुंज में रमत हैं रामनराइन शरन जू॥

* अनन्त श्रीरमई बाबा (स्वर्गद्वार) *

* छप्पय १८५ *

श्री रमई बाबा सुहृद सरल भाव से रहत हैं।
श्रीहनुमत विहार की कुंज बनाई अपनी खासी।
सेवा संत सुजान करें मन मन अभिलासी॥

भजन भावना रीति मनाई मन ही मन में।
रहैं निराली रहन रीति से रतन जतन में॥
जो कछु गुन गौरव मिलै ताह तान के गहत हैं।
श्री रमई बाबा सुहृद सरल भाव से रहत हैं॥

* अनन्त श्रीराम मनोहरशरण जी ऋणमोचनघाट *

* छप्पय १८६ *

श्री राममनोहर शरन जू बड़े मन हरन संत हैं।
रिनमोचन के घाट महंती पद पै सोहैं।
अपने शील स्वभाव सुजन जन मन को मोहैं॥
बिवहार कुशलता भक्ति भावना इनकी खासी।
परोपकार में प्रीति रहैं तन मन सों दासी॥
इनके गुन गंभीर सब गिनती करैं अनन्त हैं।
श्री राममनोहर शरन जू बड़े मन हरन संत हैं॥

* अनन्त श्री झुंझुनिया बाबा ऋणमोचनघाट *

* चप्पय १८७ *

झुंझुनिया बाबा बड़े स्वाँगी सिद्ध महान हैं।
सरयू तट सियराम किला अरु घाट बनायौ।
धर्मसाल को रूप दलानन में दरसायौ॥
रहैं नाइका भेष सकल श्रृङ्गार साज के।
अपनी प्रभा प्रकाश करैं सब ढोल बाज के॥
मगह गयादिक देश में इनको मान प्रधान हैं।
झुंझुनिया बाबा बड़े स्वाँगी सिद्ध महान हैं॥

* अनन्त श्रीमहाबीरदास जी (गायनाचार्य्य) *

* छप्पय १८८ *

गाइक जे माइक नहीं गुन गन श्रीसरकार के।

श्री महाबिर दास गाइनाचार्य्य कहावें ।
संत सुहृद रस रास महारस में सरसावें ॥
बहु व्यंजन स्वादिष्ट पवावें संत जनन को ।
कर पूजा सनमान धारना करें मनन को ॥
वाद्य बजावे विविध विधि सहचरि सिय दरबार के ।
गाइक जे माइक नहीं गुन गन श्री सरकार के ॥

* अनन्त श्रीअभिरामदासजी (मानस कोकिल)

छप्पय १८९

मानस कोकिल मन हरन संत सुहृद सब कहत हैं ।
अभिराम दास जू नाम नवल नेही अनुरागी ।
सरस माधुरी मुग्ध करत श्रोतन बड़ भागी ॥
वाणी इनकी परम सुहावन सरस रसीली ।
कोकिल कंठ लजात कहत जब कथा रँगीली ॥
इनकी समता साधुता केतिक कोउ न लहत हैं ।
मानस कोकिल मन हरन संत सुहृद सब कहत हैं ॥

* श्रीवंशीधराचार्य उड़िया बाबा (श्रीराम कोट)

* छप्पय १९० *

उड़िया बाबा अवध में आय विराजे भाव सें ।
श्री वंशीधर आचार्य आपकौ नाम सुहायौ ।
ज्ञान विराग निधान भक्ति कौ भाव सवायौ ॥
सकल कला कौशल्य नम्रता साधु सुजन से ।
भूल न माने भेद कभूँ काहू में मन से ॥
ध्यान धारना इष्ट में नित नइ करें उमाव सें ।
उड़िया बाबा अवध में आय विराजे भाव सें ॥

*** श्रीराम प्रसाददास जी रामायणी (छावनी) ***

*** छप्पय १६१ ***

शील सराहन जोग है दास राम परसाद कौ।
बैठ छावनी मध्य कथा रामायण बाँचैं।
कौनउ वाद विवाद व्यर्थ के नाच न नाचैं॥
शान्त साधुता रीत रहे संतन में ऐसें।
सरस सरोवर मध्य पद्मनी पल्लव जैसें॥
ऐसे परप सुशील शुचि अहं न कछु उनमाद कौ।
शील सराहन जोग है दास राम परसाद कौ॥

*** अनन्त श्रीजानकी जीवन शरणजी (गुजराती) विजय राघव ***

*** छप्पय १६२ ***

सुहद संत रामायणी गुजराती बाबा सरस।
श्रीजानकि जीवनशरन विजय राघव रस भीने॥
नित नए लाड़ लड़ाय करें शृङ्गार नवीने।
गुरजर देश चेताय समृध्धी सब विधि ल्यावैं।
ऐसे रसिक उदार सुजन संतन को ध्यावैं॥
सजे साज सिय पीय के उमग उमग हिय में हरस।
सुहद संत रामामणी गुजराती बाबा सरस॥

*** श्रीराम पूजा शरन जी महाराज दिव्यकला कुंज नयाघाट ***

*** छप्पय १६३ ***

श्री रूपकला जू की कृपा भले भाग इनके जगे।
राम सु पूजा शरन बड़े सज्जन स्वभाव के।
दिव्य कला जस नाम दिव्य तस सरस भाव के॥
देखें दुखिया दीन तिन्हैं सनमानै सब विधि।
तैसइ दइ सरकार इन्हैं सब सिद्धि रिद्धि निधि॥

रहन सहन सब सौम्य शुचि युगल चरण पंकज पगे।
श्री रूपकला जू की कृपा भले भाग इनके जगे ॥

* अनन्त श्रीजानकी बल्लभशरनजी बावन जी का स्थान *

* छप्पय १६४ *

श्री जानकि बल्लभ शरन जू बावन जी के भए महंत।
इनकौ शील स्वभाव नम्रताई अति मीठी।
कबहुँ कहीं नहिं वृथा काहु की मीठी सीठी ॥
भजन भाव सम्पत्ति आपनी गुप्त धरत हैं।
भोग राग भंडार समइया खूब करत हैं ॥
सेवें सेवक रुचि सदा औरहु आवें जिते संत।
श्री जानकि बल्लभ शरन जू बावन जी के भए महंत।

* अनन्त श्रीसियानाथशरनजी पुरुषोत्तम भवन गोलाघाट *

* छप्पय १६५ *

सियनाथ शरन सरबोर हैं अपनी रीत रसाल में।
गुरु वर के निज नाम भवन निरमान्यो नीकौ।
अपने रूप स्वरूप छाँड़ सब जानैं फीकौ ॥
ऐसे परम प्रवीन युक्ति की रहन रहत हैं।
ना काहू में लीन न खाटी मीठ कहत हैं ॥
सद्‌गुरु कृपा कटाक्ष की परी सुरेखा भाल में।
सियनाथ शरन सरबोर हैं अपनी रीति रसाल में ॥

* सुहृद संत गाथा *

छप्पय १६६

परुपकार परमार्थ में जे सब संत महान हैं।
श्री अवधेश कुमार शास्त्री सब गुन आगर।
सिरी विसंभर दास तैसहीं हैं नव नागर ॥

चारुशिला के सरन राम विद्यालय खोले।
रहैं सदाँ सदवृत्ति कुपथ में कबहुँ न डोले॥
लघु मति मो नहि कह सकत सद् सुभाव की खान हैं।
परुपकार परमार्थ में जे सब संत महान हैं॥

* अनन्त श्रीरामशरन जी (वैद्य) *

* छप्पय १६७ *

निरदंभ निराले जे रहैं भोगी अपने भाग के।
श्रीराम शरन जू वैद्य बड़े तपसी त्यागी हैं॥
इनकी रीति विनीत रसाइन रस पागी हैं।
जावें जेते संत दीन दुखिया रोगी बन।
तिनको औषधि देयँ तोष पोषैं नित तन मन॥
आदर्श सुहृदता के सरस भक्ति भाव बैराग के।
निरदंभ निराले नित रहैं भोगी अपने भाग के॥

* ब्रह्मचारी श्री भागीरथ राम जी *

* छप्पय १६८ *

श्री भागीरथ राम को ब्रह्मचारि सब कोउ कहैं।
बड़े विवेकी विरत अवध कौ ध्यान धरावें।
सुजन जनन चेताय तीर्थ उद्धार करावें।
श्री भरत कुंड पै मूर्ति भरत जी की पधराई।
धर्म कार्य में रहै प्रीति इनकी सरसाई॥
निरदंभ निराली रीत से भजन भाव सुख लहत हैं।
श्रीभागीरथ राम को ब्रह्मचारि सब कोउ कहैं॥

* अनन्त श्रीविश्रामदासजी (हनुमानगढ़ी) *

* छप्पय १६६ *

सुहृद सरलता साधुता इनकी लगत सुहावनी।

श्री विश्रामदास महराज बड़े परमारथ प्रेमी।
श्री हनुमानगढ़ी में रहैं शान्ति समता के नेमी ॥
पट्टी श्री हरिद्वारि महंती इन पे आई।
जैसी जँहँ की रीति तौन तैसी दरसाई ॥
भक्ति भावना हृदय की सुफल भई मन भावनी।
सुहृद सरलता साधुता इनकी लगत सुहावनी ॥

* अनन्त श्रीगिरनारी बाबा रामघाट *

* छप्पय २०० *

श्री गिरनारी बाबा बड़े भजन भाव दृढ़ नेम के।
ठौर ठौर मंदिर बनाय संतन हित दीने ॥
अवधपुरी में प्रगट राम विद्यालय कीने ॥
वयो वृद्ध दृग हीन तबहुँ देसाटन जावें।
भक्त जनन चेताय समृद्धी सब विधि ल्यावें ॥
निरद्वन्द निराले नित रहैं विवस न काहू प्रेम के।
श्री गिरनारी बाबा बड़े भजन भाव दृढ़ नेम के ॥

* अनन्त श्रीसाकेत विहारी शरण जी मौनी पापमोचनघाट *

* छप्पय २०१ *

श्री साकेत विहारी शरन जू रसिक रँगीले रस भरे।
रहैं सदा व्रत मौन करें भक्ती मन भाई।
सद्‌गुरु सदन समीप कुटी सरजू तट छाई ॥
बहु उपासना ग्रन्थ लिखत अरु मनन करत हैं।
चुन चुन के प्रिय भाव हृदय में रहत धरत हैं ॥
इन्हैं भावना सिध्ध भइ जो जो इन अनुभव करे।
श्रीसाकेत विहारी शरन जू रसिक रँगीले रस भरे ॥

* भक्त प्रवर श्रीरामायणी शरण जी मानस कुंज गोलाघाट *

* छप्पय २०२ *

श्री रामायणि शरन जू बड़े नम्र अति दीन हैं।
मानस कुंज बनाय अवध में बास करत हैं।
कथा अमृत बरसाय सुजन जन ताप हरत हैं॥
तैसइ शील स्वभाव सरल पतनी इन पाई।
दिन अरु रैन सिरात करत सिय पिय सिवकाई॥
इनकी सुरति सराहनी सर वर जैसा मीन हैं।
श्री रामायणि शरन जू बड़े नम्र अति दीन हैं॥

* श्रीसियबल्लभ शरन जी श्रीरघुनाथदास जी *

* छप्पय २०३ *

रसिक रँगीले संत जे श्रीसिय बल्लभ सरन जू।
रस सिंगार की रीति प्रीति सों इननैं पाई।
लिख लिख कें सदग्रन्थ धरी अपनी मन भाई॥
रघुनाथ दास जू संग रहैं सदभाव प्रेम सें।
है अनन्य रस रास लखें नित्त नए नेम सें॥
अवध बास निष्ठा लिए सबके प्रिय मन हरन जू।
रसिक रँगीले संत जे श्रीसिय बल्लभ सरन जू॥

* श्रीजगदेवदासजी महाराज नयाघाट *

* छप्पय २०४ *

उद्योगी अति मुदित मन तन तायो इन तान के।
नए घाट पै नई कुंज निरमान कराई।
दास बड़े जगदेव कहावें सुख सरसाई॥
ऐसी अपनी रीति निवाही जुगति भुगति सें।
जैसे जल में मीन रहै, अपनी शुभ गति सें॥

इनकी रीति सराहनी कही कछुक मैं छान के।
उःद्योगी अति मुदित मन तन तायो इन तान के॥

* सेठ श्रीमोहनलाल (सपत्नीक) *

छप्पय २०५

बसें बासुदेव घाट पै जे दम्पति द्यालू बड़े।
लक्ष्मी मोहन लाल रसिक रस राते माते॥
युगल कृपा के पात्र संत सेवी सरसाते।
लाखन की सम्पत्ति समर्पण करी सजन पैं।
बड़ी अनोखो प्रीति लखी इन भाव भजन पैं॥
नव निकुंज निरमान के सरबस दै द्वारे पड़े।
बसें बासुदेव घाट पैं जे दम्पति द्यालू बड़े॥

* भक्त प्रवर श्रीबैजू बाबू कनक भवन *

* छप्पय २०६ *

श्री कनक भवन सरकार के रुचि के अनुभव जे करैं।
वित नए भोग लगाय करें संतन सिवकाई।
पतिनिहु को सौभाग अवध में सदगति पाई॥
गृह सम्पति सब त्याग महल कौ बास करत हैं।
दुखियन को दुख देख तोष तिन ताप हरत हैं॥
बैजू बाबू बस किए युगल ध्यान हिय में धरैं।
श्री कनक भवन सरकार के रुचि के अनुभव जे करैं॥

* समस्त श्री रामायणी *

* छप्पय २०७ *

मानस के मरमज्ञ जे कहे जात रामायनी।
प्रथक नाम नहिं लिखत बंदना सबकी करियत।
उनही कौ आधार धारना हिय में धरियत॥

देस विदेसन जाय करें जीवन किरतारथ।
प्रगटें भाव अनंत रसीले रस परमारथ ॥
इनकी गाथा अकथ है भाव भक्ति अनपायनी।
मानस के मरमज्ञ जे कहे जात रामायनी ॥

* श्रीरामजी दास सखा जी श्रीहनुमान वाटिका *

* छप्पय २०८ *

सखा राम जी दास को वीरमणी पदवी भई।
शांति शील शुचि सुमति रहैं अपने रस राते।
प्रिय के संगै मोद विनोदहु नित नये पाते ॥
श्रीकनकभवन कौं नेम लिये निज प्रिय दरसन कौं।
अष्टयाम में लाड़ लड़ावें अपनै मन कौं ॥
श्रीहनुमान बाटका में रहैं लोक लालसा मिट गई।
सखा राम जी दास की बीर मणी पदवी भई ॥

* श्री जैरामदासजी अध्यक्ष संत सेवा श्रीहनुमान बाग *

* छप्पय २०९ *

शील सरलता साधुता इनकी लगत सुहावनी।
जैराम दास जू करें संत सेवा सुखदाई।
श्री हनुमान बाग की प्रभा खूब इननें दरसाई ॥
भजन भाव भर पूर कुशल बिवहार देश में।
सब के प्रिय हितकारि निराले संत भेष में ॥
गुन गन गाथा सरस है सबइ सुजन मन भावनी।
शील सरलता साधुता इनकी लगत सुहावनी ॥

* सामूहिक संत *

* छप्पय २१० *

अवध सरोवर में भले जे सरोज सम सुख लहैं।

सीतारामहुँ दास राम प्रिय दास कहावें।
श्री विकरमा दास अम्बरहु दास सुहावें॥
पावन दिव्य स्वरूप इनहिं की प्रभु ने कीनो।
अचल अयोध्या वास सकल सुख सजके दीनो॥
श्रीराम टहल के दास को अपने मन को सब कहैं।
अवध सरोवर में भले जे सरोज सम सुख लहैं।

* सामूहिक संत *

* छप्पय २११ *

हनुमान बाग के संत जे भजन भावना लीन हैं।
रघुबीर दास उर प्रिया दास बल्लभ वैदेही।
राम गुपालहु दास रसिक रस रास सनेही॥
औरौ सुजन महान प्रिया प्रीतम अनुरागी।
सकल गुनन की खान सुहृद सज्जन बड़भागी॥
युगल नाम रसना रटैं मानौ जल गत मीन हैं।
हनुमान बाग के संत जे भजन भावना लीन हैं॥

* श्री हनुमान बाग के सामूहिक संत *

* छप्पय २१२ *

श्री हनुमान बाग में जे रहैं ते सब संत महान हैं।
करें कीर्तन नित्त अहिर्निशि युगल नाम कौ।
निरालंब निरबाह लिए अवलंब धाम कौ॥
श्री जै करन दास पुजारी तहाँ विराजैं।
सहन शील सम्पन्न सौंज सेवा सब साजैं॥
इनकी समता को लहै जे सदगुन की खान हैं।
श्रीहनुमान बाग में जे रहैं ते सब संत महान हैं॥

* श्री हनुमान गढ़ी के समूह संत *

* छप्पय २१३ *

जे संत सराहन जोग हैं अपने अपनें रंग में।
देव नरायन दास रसीले बड़े दयालू ।
राम सुलोचन दास रंगीले रंग कृपालू ॥
श्रीराम खिलावन दास कृपा कपि वर की पाई।
जन्म भूमि अभिराम दास उद्धार कराई ॥
श्री जमुनादास महान हैं सब समाज के संग में।
जे संत सराहन जोग हैं अपने अपने रंग में ॥

* श्रीहनुमान गढ़ी के सामूहिक संत *

* छप्पय २१४ *

जे संत सबै साराहनी इनके भोग सुभोग हैं।
भगवान दास बलराम दास बाँके अनुरागी।
राम सुलोचन दास बनारसि दासहु भागी ॥
रामदास उर दास मुनीश्वर राम पियारे।
राम सुबालिक दास महाबिर दासहु न्यारे ॥
परोपकार परमार्थ में देत सर्व सहयोग हैं।
जे संत सबैं साराहनी इनके भोग सुभोग हैं ॥

* श्री किशोरी सरन जी मधुकर *

* छप्पय २१५ *

श्री किशोरी सरन हैं मधुकरिया मन भाव ते।
परोपकार में प्रीत बड़े बिवहार कुशल हैं।
रस सिंगार की रीत गहैं गहरी हिय थल हैं ॥
भाव भावना भक्ति रंगीली इनकी ऐसी।
रसिकन की जो रीति भरे तन मन में तैसी ॥

सिय पिय के रस रास सुख मन माने सब पावते ।
श्री किशोरी सरन हैं मधुकरिया मन भावते ॥

✱ श्रीराम पुकारदासजी मधुकर (श्रीहनुमान बाग ✱

छप्पय २१६

सेवा दुखिया दीन की जे महान नीके करें ।
मधुकर राम पुकार दास की रहनी ऐसी ।
शान्ति पूर्वक गहैं रीति रसिकन की तैसी ॥
नाम जाप को नेम मौन कबहूँ ह्वै जावैं ।
सत्संग रंग में छके स्वाद मन मानो पावैं ॥
सकल वासना त्याग के एक धारना उर धरें ।
सेवा दुखिया दीन की जे महान नीके करें ॥

✱ श्री अवध विहारी दास जी मधुकर (माझा) ✱

✱ छप्पय २१७ ✱

अवध विहारी दास जू माझा में नीके रहैं ।
नित नए मोद विनोद लखें सुंदर सिय पी के ।
मागि मधूकरि खाँयँ मस्त जैसे गुर घी के ॥
शान्ति सरलता अमल अनोखी इनकी देखी ।
प्रीतम प्रेम प्रधान राह दूसर नहिं देखी ॥
एक धारना ध्यान की दृढ़ करके गहरी गहैं ।
अवध विहारी दास जू माझा में नीके रहैं ॥

✱ सामूहिक मधुकर ✱

✱ छप्पय २१८ ✱

मधुकरिया जे संत हैं तिनकी रीत रसाल है ।
सरजू सीता सरन राम प्रिय सरन रसीले ॥
राम गुलामहु सरन रास रस के चसकीले ।

दीन घाल उर संत सरन की रीति रंगीली ऐसी।
रसिकन की रसकाइ गाइ ग्रंथन में जैसी ॥
लाल दास सुकदेव की सरस सलोनी चाल है।
मधुकरिया जे संत हैं तिनकी रीत रसाल है ॥

* श्री हनुमत निवास के कृपा पात्र संत *

छप्पय २१९

श्री महाराज गोमतीदास के चरन सरन जिननैं लए।
श्री हनुमान टेकरी राम जानकी सरन बनाई।
सिवकाना चेताय संत सेवा मन भाई ॥
तैसइ हनुमत सरन भवन हनुमत बनवायौ।
भजन भाव की रीत स्वाद भक्ती कौ पायौ ॥
श्री हनुमत निवास के वंस में ते महान नीके भए।
श्री महाराज गोमतीदास के चरन सरन जिननैं लए ॥

* अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीसूर किशोर जी महाराज (श्रीमिथिलाजी) *

* छप्पय २२० *

श्री सूर किशोर महान भए मिथिला में कीरति छई।
मानौ नृपति विदेह आपनी प्रभा पठाई।
श्री सिय जू में सुता भाव की भक्ति समाई ॥
एक समय अति विरह बिकल ह्वै अवधहिं आए।
सरजू तट पै प्रगट दरस दुहिता के पाए ॥
नाशामणि नहिं देख के निज कर नथ पहिरा दई।
सूरकिशोर महान भए मिथिला में कीरति छई ॥

* अनन्त श्री सूरकिशोर जी के शिष्य श्री प्रागदास जी महाराज (श्रीमिथिलाजी) *

* छप्पय २२१ *

प्रागदास प्रिय भाव के भए निराले संत हैं।

श्री सिय जू में निज भाव बिहिन कौ इनने मानो।
बिहनोई बनबास श्रवण सुन दुख दरसानो॥
व्याकुल विरह विभोर चले पग पनही लेकें।
बीचहिं में प्रिय आय मिले गलबहियाँ देकें॥
सजन मिलन सुख जो भए सो सब कहैं अनन्त हैं।
प्रागदास प्रिय भाव के भए निराले संत हैं॥

* अनन्त श्री रसिक शिरोमणि श्री रसिकअली जी रसिक निवास मिथिला *

* छप्पय २२२ *

बन प्रमोद रस माधुरी पान कियो श्री रसिक अलि।
अष्टयाम शृङ्गार रास रस के अधिकारी।
युगल केलि की कलित ललित लीला बपु धारी॥
प्रिया प्रीतम कौ प्रेम प्रगट कलियुगहिं दिखायौ।
साकेत सुःख कौ हेतु सरस वाणी ह्वै गायौ॥
सौंन्दर्य लता फूली रहत कहत चरित इनके अमलि।
बन प्रमोद रस माधुरी पान कियो श्रीरसिक अलि॥

* सिद्ध शिरमौर श्रीमौनीजी जिनके मिथिला अवध के बहुत पद प्रख्यात हैं *

* छप्पय २२३ *

परमहंस प्रेमी रसिक मौन मुदित नित प्रति नए।
युगल विहार निहार ललित पद रचना कीनी।
सुमन वृष्टि नभ भई लई जब तान नबीनी।
सेवा गोकुल दास करी रुचि मन सों साँची।
सम्पति विभव विलास अजिर बिन मागे नाची॥
आनँद बन तन त्याग पुनि दरशन रेवा तट दए।
परमहंस प्रेमी रसिक मौन मुदित नित प्रति नए॥

* अनन्त श्रीरामशरणजी महाराज नवाही *

* छप्पय २२४ *

श्रीरामशरण सिय पिय सखा परमहंस रस रंग में।
रसिक अनन्य उदार सुहृद श्रीस्वामिनि जी को।
जन्म महोत्सव सार करें प्रति सम्बत् नीको॥
युगल केलि के ललित भणित पद भाव सुभूषित।
रहत नवाही नवल प्रेम प्रेमिन हिय पूषित॥
शत ऊपर आयू तबहुँ रही उमग अङ्ग अङ्ग में।
श्रीरामशरण सिय पिय सखा परमहंस रस रंग में॥

* अनन्त श्रीनारायणदास जी महाराज रत्न सागर मिथिला *

* छप्पय २२५ *

विशालाक्ष आजानु वाहु श्रीमिथिलापुर के महंत।
श्री नारायणदास रत्न सागर पै रस निधि।
संसकार रस रास बड़े विख्यात सुसब विधि॥
श्री विवाह उत्साह करें बड़ धूम धाम से।
बहुत जीव निःचाहु करें किरतार्थ नाम से॥
पुरी प्रभाव पुनीत अति जानत जे अति शुद्ध संत।
विशालाक्ष आजानु वाहु श्रीमिथिलापुर के महंत॥

* अनन्त श्रीसियारामदासजी महाराज सिद्ध बाबा सीतामढ़ी *

* छप्पय २२६ *

सियराम दास जू सिध्ध भए सीतामढ़ी विराज के।
कनक भवन में रहें पुजारी प्रथम कहावें।
नित नए लाड़ लड़ाय प्रान प्रीतमहिं रिझावें॥
सिय जू की भइ कृपा लक्ष्मण तट पै ऐसी।
करी संत सिवकाइ सिध्ध सरसाई तैसी॥

वयो वृध्ध ह्वै गए हैं पिया मिलन सुख साज के।
सियराम दास जू सिध्ध भए सीतामढ़ी विराज के॥

* अनन्त श्री सियालाल शरण जी महाराज सीतामढ़ी *

* छप्पय २२७ *

श्री सिय जू के पद पद्म की प्रेमलता भ्रमरी भईं।
पियें मस्त मकरंद किये नव वेष निरालौ।
परमहंस सियलाल शरन व्रत हलो न हालौ॥
केते ग्रन्थ अलाप अलौकिक अनुभव पोनें।
कर्म उपासन ज्ञान सान सब इक मइ कीनें॥
रस शृङ्गार समार के आनँद बन बन ठन गईं।
श्री सिय जू के पद पद्म की प्रेमलता भ्रमरी भईं॥

* अनन्त श्रीगुप्तरामजी महाराज अग्नि कुंड मिथिलाजी *

* छप्पय २२८ *

श्रीजनक लली पद कंज के गुप्त राम मधुकर भए।
रसिक अनन्य उदार सुहृद प्रेमी कोमल चित।
मिथिला मोद विहार लखें सिय पिय कौ नित प्रित॥
संतन की सिवकाइ भावना भक्ति आपकी।
भव भय देत मिटाय सुजन जन मन त्रताप की॥
प्रिय पराग रस में पगे स्वाद मधुर मधु के लए।
श्री जनक लली पद कंज के गुप्त राम मधुकर भए॥

* परमहंस श्रीस्वामी महाबीरशरनजी महाराज (मैलवारा)

* छप्पय २२९ *

परमहंस प्रेमी बड़े श्रीमहाबिर शरन जू।
मिथिला जी के निकट मैलवारा में ब्राजैं।
अपनी रीति रसाइ भजन की सुन्दर साजैं॥

सरल सुशील महान अवध में आय रहत हैं।
सबसे सरल सुभाव शील में स्वाद लहत हैं॥
सेवक शिष्य समाज में सबके तारन तरन जू।
परमहंस प्रेमी बड़े श्री महाबिर शरन जू॥

* अनन्त श्रीरामदुलारी शरणजी महाराज छोटी कुटिया सीतामढ़ी *

* छप्पय २३० *

छोटी कुटिया सिध्ध की सीता मढ़ी सनाम है।
श्री रामदुलारीशरन तहाँ के मालिक मुखिया।
करें संत सिवकाइ नहीं देखें कोउ दुखिया॥
ऐसो प्रेम प्रगाढ़ लली अरु राम लला में।
राग रंग रसिकाइ वाद्य अरु गान कला में॥
नइहर पीहर इष्ट इन अवध सु मिथिला धाम हैं।
छोटी कुटिया सिध्ध की सीता मढ़ी सनाम है॥

* अनन्त श्रीरामदुलारीशरण जी महाराज विहार कुण्ड *

छप्पय २३१

लीला स्वरूप रस माधुरी इनहीं ने साँची लई।
श्री रामदुलारी शरन सुहृद श्रृंगार भाव के।
बड़े रँगोले रसिक लड़ावैं लाड़ चाव के॥
सर्वेश्वरि श्री चन्द्रकला जू को उत्सव कर।
द्रवें द्रव्य अरु वस्त्र प्रसादी दोना भर भर॥
मिथिला कुंड विहार की इन्हें महंती मिल गई।
लीला स्वरूप रस माधुरी इनहीं ने साँची लई॥

* अनन्त श्रीराम सनेहीदासजी महाराज (श्रीजानकी मंदिर मिथिला) *

* छप्पय २३२ *

श्री रामसनेहीदास पै कृपा किशोरी जू करी।

श्री चरितामृत लिखे जानकी जू को जैसौ।
विद्या को अध्यन करो नहिं कबहूँ ऐसो॥
त्याग विराग महान रीत सब रस की जानै।
आचारज गुरुदेव इष्ट में निष्ठा मानै॥
सुहृद सुजनता साधुता भूर भूर इनमें भरी।
श्रीराम सनेहीदास पै कृपा किशोरी जू करी॥

* अनन्त श्री अवधकिशोरदासजी महाराज (रामानन्द आश्रम मिथिला) *

* छप्पय २३३ *

श्री अवध किशोरहुदास जू गुरु निष्ठा के रूप है।
नम्र सुशील स्वभाव वैष्णव कुल के भूषण।
अवध जनकपुर धाम धियावें तज सब दूषण॥
आश्रम रामानंद बनायो सिय नइहर में।
तैसइ निज गुरुदेव भवन भूषित पीहर में॥
साहित्य साधुता बेष में इनके भाव अनूप हैं।
श्री अवध किशोरहुदास जू गुरु निष्ठा के रूप है॥

* श्रीगौरांग महाप्रभु *

* छप्पय २३४ *

श्री गरांग महा प्रभु गुनन की कथा रसीली कहत में।
श्री कृष्ण कला की प्रभा प्रगट इनमें दरसानी।
राग रंग रस केलि परकिया भाव समानी॥
गौड़ देश चेताय सम्प्रदा करी निराली।
राधा रमन उपास्य देव वृन्दाबन माली॥
इन वृजांगना रीति की कहत थांह नहि लहत में।
श्री गौरांग महाप्रभु गुनन की कथा रसीली कहत में॥

(अनन्त श्रीस्वामी वल्लभाचार्यजी)

❋ छप्पय २३५ ❋

श्री वल्लभ कुल आचार्य की महिमा अपरम्पार है ।
तइ लंग देस से आय देस गुर जर चेत्तायो ।
श्री कृष्ण रसा मृत्त सार छान कें सबै पिवायो ॥
श्री गोकुल विठ्ठलनाथ गुसाईं भए प्रधान हैं ।
पुत्र प्रयौत्र महान इनहिं के गुनन खान हैं ॥
श्रीनाथ द्वार गोकुल अजहुँ पुष्टि मार्ग आगार है ।
श्री वल्लभकुल आचार्य की महिमा अपम्पार है ॥

❋ श्री वृन्दाबन के प्रमुख आचार्य ❋

छप्पय २३६

श्री वृन्दाबन के संत जे अंश कला अवतार हैं ।
स्वामी श्री हरिदास विहारी जू प्रगटाये ।
निधि वन रास विलास खूब पाए मन भाए ॥
श्री हित हरिवंस सुस्वामि कुंज सेवा में सज के ।
श्री राधा बल्लभ मिले मेंड़ मर्यादा तज कें ॥
तैसइ राधा रमन जू गोपाल भट्ट उर हार हैं ।
श्री वृन्दाबन के भक्त जे अंश कला अवतार हैं ॥

❋ दुलहा भेष के अनन्य उपासक विवाह पद्धति प्रचारक श्रीरामाजी ❋

❋ छप्पय २३७ ❋

श्री रामा जी के रंग की कथनी कथतन ना बनैं ।
दुलहा भेष रसेश इन्हैं भायौ सरसायौ ।
वही भेष मे सजे सजन निज रूप दिखायो ॥
तब से उत्सव व्याह चलाई पधिधति ऐसी ।
राम सु शंकर शरन गही गरवीली जैसी ॥

नम्रताइ उर दीनता रसना से कोउ का भनैं ।
श्री रामा जी के रंग की कथनी कथतन ना बनैं ॥

* श्री कौशलेन्द्र स्वामी *

* छप्पय २३८ *

श्री कौशलेन्द्र स्वामी बड़े कला कुशल वेदान्ती ।
मात्त गेंड़ के निकट आश्रम खूब वनायौ ।
सिरी सम्प्रदा रीत वैष्णव धर्म वड़ायौ ॥
जेहि समाज में जाँय उच्च पद पावें नीको ।
सुन इनको सिध्धांत और सब लागे फीको ॥
आकर्षण मन सबइ को होवे पावैं शान्ती ।
श्री कौशलेन्द्र स्वामी बड़े कला कुशल वेदान्ती ॥

* श्री कन्हइदासजी (व्यास) श्रीरामकोट विभीषण कुंड *

* छप्पय २३९ *

श्री कन्हइदास को व्यासजी सबै सुजन जन कहत हैं ।
शान्त शील अनुराग भाव में पगे रहत हैं ।
श्री रामायण रस मोद कथाहू खूब कहत हैं ॥
करें वधाई गान मान उत्सव सियवर को ।
संत जनन में प्रेम करें जैसे कोउ घर को ॥
रसिकन की संगति करें अलभ लाभ सब लहत हैं ।
श्री कन्हइदास को व्यासजी सबै सुजन जन कहत हैं ॥

* श्री अवधसरनजी महाराज बड़ा स्थान श्रीजानकीघाट *

* छप्पय २४० *

श्री करुण सिन्धु कृपालु के वंस विभूषन जे भए ।
श्री अवधसरन शृङ्गार भाव के रसिक रँगीले ।
शील सनेह सुजान प्रेम पथ के गर्वीले ॥

रसिक उपासिक सुजन तिन्है ध्यावें तन मन से ।
उमगत उर इहलाह श्रृवन सुन सरस वचन से ॥
सज सुहाग साकेत गए लूट लाहु इन नैन लये ।
श्री करुणा सिन्धु कृपालु के वंस विभूषन जे भए ॥

* श्री गंगादासजी महाराज जगन्नाथजी वाले *

* छप्पय २४१ *

छोटे छता में भले गंगादास महंत जू ।
जगन्नाथ की पुरी संत सेवा सुख लेवें ।
सरल सुशील स्वभाव भक्ति वैरागहु धेवें ॥
फला हार वृत रहैं गहैं टकसार भेष की ।
इनहि न व्यापी व्यार और कछु अन्य देस की ॥
लीला स्वरूप में दरस दए सिय स्वामिनि के कंत जू ।
छोटे छत्ता में भले गंगादास महंत जू ॥

* श्री जगन्नाथदासजी महाराज उड़िया जमातवाल *

* छप्पय २४२ *

श्री जगन्नाथ के दास जू बड़े प्रभाव शाली भए ।
पांच सात सौ संत सदा घूमें जमात में ।
राजा रंकहु छके देख इन करामात में ॥
ज्ञान विरागहु छान भक्ति कौ करें विवेचन ।
औरहु कथा रसाल राजनीतहु को रेचन ॥
रिद्धि सिद्धि सौभाग सर्व मनहु मोल इनही लए ।
श्री जगन्नाथ के दास जू बड़ प्रभाव साली भए ॥

* श्री राजारामशरणजी शास्त्री श्री हनुमत सदन *

* छप्पय २४३ *

श्री राजारामशरणय को सबै शास्त्रीजी कहैं ।

सरल सुहृद शुचि सौम्य साधुता इनकी सोहै ।
जेते सुजन महान देख सबको मन मोहै ॥
गुरुदेव कृपा कर कमल करी जब इनपै छाया ।
स्वच्छ स्वरूप बनाय छुटाई छन में माया ॥
अब अनुराग बिराग को स्वाद सरस नित नवोल हैं ।
श्री राजारामशरण्य को सवै शास्त्रीजी कहैं ॥

* श्री कासीदासजी महाराज विभीषण कुंड श्रीरामायणभवन निर्माण करता *

* छप्पय २४४ *

श्री कासिदास महाराज की कीरति अति कमनीय है ।
श्री अवध धाम में काम करो इन सबसे ऊपर ।
श्री रामायण भागौत भवन बनवायो भूपर ॥
पाषाँण स्वच्छ में अंक लिखे ऐसे सुन्दर हैं ।
मानों सुर मुनि बृन्द बसे अपने निज घर हैं ॥
इनके दरसन करत ही हरषत सवको हीय है ।
श्री कासिदास महाराज की कीरति अति कमनीय है ॥

* श्री त्रयडंडी स्वामीरामनरायना चारी (कौशिल्याघाट) *

* छप्पय २४५ *

श्री रामनरायन चार्य जू त्रय डंडी स्वामी बड़े ।
श्री कौशिल्याघाट रहें अस्थान बनाके ।
श्री सम्प्रदा रीति प्रीति सें कबहुँ न थाके ॥
स्वागत संत समाज करें आदर सें ऐसो ।
भेद न मानै कभूँ आन पथ गामिन कैसो ॥
विद्वान सम्प्रदा गृन्थ सब इन महान नीकें पड़े ।
श्री रामनरायन चार्य जू त्रय डंडी स्वामी बड़े ॥

* अनंत श्री वलभद्राचारीजी (विभीषण कुंड) *

* छप्पय २४६ *

श्री वलभद्रा चारी बड़े त्यागी अनुरागी सरस।
श्री सम्प्रदा रीति गहैं टकसार पुरानी ॥
ऐ लवार आचार्य भावना इन नें छानी।
तौताद्री अस्थान सुआमी अवध पधारे ॥
तव समर्थ अस्थान आपनौ वोझा उतारे।
उज्जल निरमल भाव सें गए परम पद हिय हरष।
(श्री) वलभद्राचारी बड़े त्यागी अनुरागी सरस ॥

* महात्मा श्रीहरिचरनदासजी जुगल जोड़ी (स्वर्गद्वार) *

छप्पय २४७

श्री हरि चरनदास जू दम्पति अति भाविक बड़े।
लर कांईं से विभव विश्वकौ त्याग कियौ है।
अवध आय सद भाव स्वच्छ बैराग लियौ है ॥
मुनि पध्धिति से रहैं गहैं अपनी गुरुताई।
नाकौ नउँ विवहार काउ सें प्रीति दृढाई ॥
भजन भावना रीतिहू अपनें मनकी सब पड़े।
श्री हरि चरनदास जू दम्पति अति भाविक बड़े ॥

* श्री भिक्षुकानंदजी स्वामी *

* छप्पय २४८ *

श्री भिक्षुकानंद जू बड़े रँगीले रस भरे।
माग मधू करि खाँयँ गाँयँ गुन लाल लली के।
लेयँ मंगला मोह गोद लैं छैल छलीके ॥
ऐसे रसिक सुजान रूपरस रस रस पीवैं।
छके रहैं दिन रैन छटा छिन छिन लख जीवें ॥

पद पीयूष प्रिय भाव के चुन चुन कें हिय में धरे।
श्री भिजुकानंद जू बड़े रँगीले रस भरे॥

* अनंत श्रीस्वामी मधु सूदनाचारीजी (चँदवारा जिला वाँदा) *

* छप्पय २४६ *

दिव्य देस से अव तरे जे भाविक भगवान के।
चँदवारा अस्थान जिला वाँदा के स्वामी।
श्री मधुसूदन आचारि स्वरूपन के अनुगामी॥
रसिक अनन्य उदार प्रेम की मूरति मानौ।
ह्वै अनन्य रससार जुगल जोड़ी कौ छानौ॥
सरसानें निज नेह कें झके न द्वारें आन के।
दिव्य देस से अव तरे जे भाविक भगवान के॥

* श्रीरामा चारी स्वामीजी महाराज (नजरबाग) *

* छप्पय २५० *

श्री रामाचारीजी बड़े कृपा पात्र भगवान के।
श्री जगन्नाथजी जाय जीर्ण उद्धार करायौ।
सम्पृदाय की रीति वैष्णव धर्म दिखायौ॥
रहैं निराली रहन ज्ञान बैराग छान कें।
काहू सें नहि मोह द्रोह दुनियाइ मान कें॥
तैसइ स्वामि त्रि विःकरम द्रबें दान सनमान के।
श्री रामाचारीजी बड़े कृपा पात्र भगवान के॥

* रीमानिवासी श्रीराम हर्षणदासजी महाराज *

* छप्पय २५१ *

दास राम हषण बड़े प्रेमी रसिक उदार हैं।
श्री सिय जू की कृपा इन्है निज भ्राता मान्यौ।
तैसइ भाव विभाव उमग इनके उर आन्यौ॥

लिखी प्रेम रामान अपूरव भाव दिखाए।
वहनोई नेश्रा यमनो अपनउँ लिखवाए॥
ज्ञान विराग शुशोलता भजन भाव आगार हैं।
दास राम हर्षण बड़े प्रेमी रसिक उदार हैं॥

* श्री लक्ष्मणशरणजी (कोठावालिन की सेवा में) *

* छप्पय २५२ *

श्री रस मोद लता के सरन में लक्ष्मणसरन महान हैं।
तन मन से सिवकाइ करी इन ऐसो सज कें।
छिन पल विलग न होंयँ कभूँकँहुँ सेवा तज कें॥
अपनी भक्ती भाव समर्पण इननें करदइ।
(श्री) सिय स्वामिन की कृपा प्रसादी हिय में धरलइ॥
जहां जाँय सेवा करें द्रवें दिव्य जल दान हैं।
श्री रस मोद लता के सरन में श्रीलक्ष्मणसरन महान हैं॥

* श्री प० राम स्वरूपसरनजी (हनुमत निवास) *

* छप्पय २५३ *

श्री हनुमत निवास की छाँहँ की बाँहिं गहैं जे रहत हैं।
श्री पंडित राम स्वरूपसरन सब गुन अगार हैं।
भाव भक्ति सम्पन्न सँभारें गुरु दुआर हैं॥
श्रीराम कुंज में कथा कहैं जब अवसर आवे।
ज्ञान विरागहु छान भाव भक्ती कों भावे॥
सबके प्रिय सबके हित् सुख सुहाग कों लहत हैं।
श्री हनुमत निवास की छाँह की बाँहँ गहैं जे रहत हैं॥

* मठिया वाले श्रीसिद्ध गिरजी महाराज (नयाघाट) *

* छप्पय २५४ *

नए घाट पै सिद्धि गिरि मठिया में प्रख्यात भए।

दया दान सनमान साधुता इनकी ऐसी ।
कोक रस के बखान सिद्धि इन खाँभइ जैसी ॥
जावें जे ते भक्त मनोरथ अपनों लेके ।
तिन्हैं सकुल कर देंय आशिषा अपनी देके ॥
अजहुँ महेश्वरानंद गिरि गुन गौरव सब वही लए ।
नए घाट पर सिद्धि गिरि मठिया में प्रख्यात भए ॥

* श्री सहदेव झा *

* छप्पय २५५ *

पंडित श्री सहदेव झा सपत्नीक सज्जन बड़े ।
विद्या विनय विवेक टेक अपनी गह राखो ।
भूलन मिथ्या कबहुँ काहु की गाथो भाखो ॥
शोशील्य सुजनता दोउ भरें अपनी रग रग में ।
संत सुजन मिल जाँय शीश नावें उन पग में ॥
मुनि वृत्ति इनहि की मन हरन नहि कौनउँ छल बल पड़े ।
पंडित श्री सहदेव झा सपत्नीक सज्जन बड़े ॥

* श्री पं० आध्याप्रसाद (श्रीलक्ष्मणकिला) *

* छप्पय २५६ *

श्री आद्या परसाद जू अवध धाम सेवन करें ।
श्री लक्ष्मण किला निवास शान्त सो शील्य भले हैं ।
त्यागन निज सिध्धांत आन मग कबहुँ चले हैं ॥
ऐलवार आचार्य पद्धिति खूब गहें हैं ।
जीवन जनम सुधार सार सुख लाहु लहें हैं ॥
विद्या विनय विवेकहू रोभ रोभ रग रग भरें ।
श्री आद्याप्रसाद जू अवध धाम सेवन करें ॥

❀ श्री जोगीराज श्रीरामदासजी महराज (चिरगाँव) ❀

❀ छप्पय २५७ ❀

श्री रामदासमहाराज जू जोगीराज महान हैं।
शील सतो गुण शान्ति संत सेवा वृत लीनी ॥
केतिक सिद्धि प्रसिद्धि तपोबल इननें कीनी ॥
श्री विग्रह पधराय समृद्धी सकल सजाई।
भक्त ग्राम चिरगाँव तहाँ रहि ध्वज फहराई ॥
भक्ति ज्ञान वैराग की सरस रसीली खान हैं।
श्रीरामदास महँराज जू योगीराज महान हैं ॥

❀ विहार कुंड के संत सेवी श्रीरामदासजी (मिथिला) ❀

❀ छप्पय २५८ ❀

श्री रामदासमहाराज कें सेवा संत प्रधान है।
कुंड विहार प्रधान मनोहर मिथिला नगरी।
तहाँ निकुंज बनाय भक्ति सर साई अगरी ॥
निज कर सें किंकर्य्य करें सब मोद मान कें।
अपनी सजन सगाइ साधु सेवाहि जान कें ॥
इन कौशील स्वभाव सब जो जानै सो मान है।
श्री रामदास महँराज कें सेवा संत प्रधान है ॥

❀ श्री नरसिंहदासजी (अहमदाबाद) ❀

❀ छप्पय २५९ ❀

अष्ट सिद्ध नव निद्धिहू इन पाई भर पूर है।
श्री नरसिंहदास महान संत सेवा व्रत धारी।
अन्न वस्त्र कर दान द्रवैं भंडारे भारी ॥
दूध दही घृत तक्र सबै देवैं मन मन को।
पालन पोषन करें खूब तैसइ गो धन को ॥

दुखियन के दुख हरन को मनो सजीवन मूर है।
अष्ट सिद्धि नव निद्धिहू इन पाई भर पूर है ॥

* श्री भगवताचार्य्यजी (अहमदाबाद) *

* छप्पय २६० *

विद्वान बड़े ज्ञाता बड़े सुजन सराहन जोग हैं।
श्री भगवताचार्य समप्रदा के भूषण हैं।
भाष्यकार वहु ग्रन्थ लिखे सब निरदूषण हैं।
इनकी कीर्ति महान देश देशन में छाई।
ज्ञान विराग निधान भक्ति पाई मन भाई ॥
षट ऋतु के षट रोग से जे नित रहत निरोग हैं।
विद्वान बड़े ज्ञाता बड़े सुजन सराहन जोग हैं ॥

* श्री मथुरादासजी महाराज (कटाव) *

* छप्पय २६१ *

शान्ति शिरोमणि धीर वर श्री मथुरादास महान भए।
भक्ति भावना रीत आप की ऐसी गहरी।
संतन की सिवकाइ लता लौनी है लहरी ॥
केती कीर्ति प्रकाश भई गुरजार कटाव में।
भक्त सुजन सरसाय सुखद भइ रंक राव में ॥
इष्ट धाम मिथिला अवध भाव भावना छान २ लए।
शान्ति शिरोमणि धीर वर श्री मथुरादास महान भए ॥

श्री प्रागदासजी (कुदरहा) *

* छप्पय २६२ *

श्री प्रागदास महाराज जू जोगीराज महान भए।
रहैं कुदरहा थान करें जीवन किरतारथ।
सिद्ध समृध्धी पाइ रहैं तवहूँ निःस्वारथ ॥

अवध आय तन त्याग परम पद ऐसो पायो।
नेति नेति कर जाहि निगम आगमहू गायो॥
वयो वृद्ध अति होय के अलभ लाभ इन छान लिए।
श्री प्रागदास महराज जू जोगी राज महान भए॥

* श्री संत निवास के संत श्रीजयरामदासजी मनीरामदासजी भगवतदासजी *

* छप्पय २६३ *

निव सें संत निवास में संत सुजन जे प्रेम से।
जयरामदास महराज बड़े रँग रस के भोगी।
मर्म तत्व कौ भोग करें जैसें कोउ जोगी॥
रस सिंगार की रीति भरी इनके रग रग में।
भूल न जावें कबहुँ काहु के कैसहु मग में॥
तैसइ हैं मनिराम जू भगवतदासहु नेंम से।
निव सें संत निवास में संत सुजन जे प्रेम से॥

* श्री पुजारीगनपतप्रसादजी (कनक भवन) *

* छप्पय २६४ *

श्री कनक भवन सरकार की सेवा कौ सुख इन लियौ।
श्री गनपतपरसाद पुजारी कृपा पात्र भए।
कुंज केल के सुःख इन्है सिय जू नै सव दए॥
करें जो कौनहुँ प्रश्न पेस सरकार द्वार में।
ताकौ उत्तर मिलै तुरत सब एक वार में॥
ए सव सुनी न कहत हम स्वयम देख अनुभव कियौ।
श्री कनक भवन सरकार की सेवा कौ सुख इन लियौ॥

* श्री रामपालदासजी (सनीप मंगल भवन) *

* छप्पय २६५ *

कृपा पात्र जे संत है, रामपाल के दास जू।

श्री अवधपुरी में आय कुटी निरमान करो है ।
भक्ति विरागहु ज्ञान मान कें हृदय धरी है ॥
शान्त शील शुचि सत्य दीनता इनकी ऐसी ।
संत सुजन की रीति सराही मुनि जन जैसी ॥
आकास वृत्ति से रहत हैं गहत न कौनउँ आस जू ।
कृपा पात्र जे संत हैं रामपाल के दास जू ॥

* अनन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीसियारामशरणी महाराज (गुरुधौली) *

* छप्पय २६६ *

श्री सियरामशरन जू रसिक हैं बड़े रँगीले रास के ।
गुरुधौली अस्थान महंती पद पै सोहैं ।
अपने शील स्वभाव संत रसिकन मन मोहैं ॥
प्रिय प्रीतम के भाव भरे इनके रग रग में ।
भूल न भटके कबहुँ राग द्वेसहुँ के मग में ॥
भरे मनोरथ रहत हैं इनहिं अयोध्या वास के ।
श्री सियरामशरण जू रसिक हैं बड़े रँगीले रास के ॥

* श्री भीषमदासजी महाराज (पटना) *

* छप्पय २६७ *

भूर भाग इन सरल चित साधू सेवा वृत लई ।
स्वामी भीषमदास कथा रस लोभो मधुकर ।
पंच षष्ट सत संत वसें तहँ चतुर मास भर ॥
झूलन को उत्साह करें प्रति सम्वत गह के ।
वाँकी पुर अस्थान शिहिर पटना में रह के ॥
अवध आय तन त्याग किय दुहूँ लोक कर अमृत मई ।
भूर भाग इन सरल चित साधू सेवा वृत लई ॥

* परवताधीस श्रीसियारामशरणजी महाराज (चित्रकूट) *

* छप्पय २६८ *

सियराम शरण रस मय रसिक परम हंस परबताधीस।
निश्छल सरल स्वभाव सदा सिय पिय पद पागे।
कोविद कर कल न्याव प्रणत जन मन अनुरागे॥
चित्रकूट श्री अवध त्याग कहुँ अनत न जावैं।
संत सुजन सनमान दान दें अति सुख पावैं॥
सौंन्दर्य सदा इन चरण की भूरि धूरि मो पूरि शीस।
सियराम शरण रस मय रसिक परम हंस परबताधीस॥

* अनन्त श्री सिया बिहारीशरणजी महाराज (चित्रकूट जानकी कुंड) *

* छप्पय २६९ *

श्री सिया विहारी शरन जू चित्रकूट में रहत हैं।
रसिक अनन्य उदार भावना इनकी ऐसी॥
त्याग तपस्या मूर्त्ति रसीली रसना जैसी।
अष्टयाम की रीति रहैं सेवा में भीने।
अन्याश्रय की ओर कोर दृग कबहुँ न कीने॥
शृंगार भाव अशि धार चढ़ि हेम महल सुख लहत हैं।
श्री सिया विहारी शरन जू चित्रकूट में रहत हैं॥

* अनन्त श्री रणछोरदासजी महाराज (बड़ी गुफा चित्रकूट) *

* छप्पय २७० *

श्री रनछोरदास महराज जू चित्रकूट में रहत हैं।
करैं संत सिवकाइ नेत्र दानहुँ करवावैं।
विद्यालय खुलवाय दीन दुखियनहु खवावैं॥
श्री जानकि कुंड प्रसिद्ध सिद्ध इनने कर पायो।
भजन भाव वैराग साधुता सोउ सवायो॥

गाथा गुनन अपार हम कहत पार नहिं लहत हैं।
श्री रनछोरदास महराज जू चित्रकूट में रहत हैं॥

* अनन्त श्रीरामचन्द्रदासजी (पंजाबी भगवान) चित्रकूट जानकी कुंड *

* छप्पय २७१ *

श्री रामचन्द्र के दास जू पंजावी भगवान हैं।
वाला पन में बने रूप सुन्दर अलवेले।
भक्त जनन सुख देन खेल वहु इनने खेले॥
उठी लहर वैराग जानकी कुंड विराजे।
चित्रकूट में करें भजन गुरु निष्ठा साजे॥
सेवा संतन की लिए सब को सव सुखदान हैं।
श्रीरामचन्द्र के दास जू पंजावी भगवान हैं॥

* श्री नागिरीसिंहजी (ग्राम साँकन) *

* छप्पय २७२ *

श्री नागिरीसिंह जू साँकन ग्राम सनाम हैं।
रस सिगार को भाव खूब इनमें सर सानो।
रोम रोम रग माहिं मनो रितुराज फुलानो॥
रसिक जनन सों प्रीति भाव संतन में मानें।
सव उपासना भेद भक्ति के इननें छाने॥
भाव भावना महल की सेवत आठो जाम हैं।
श्री नागिरीसिंह जू साँकन ग्राम सनाम हैं॥

* श्री नृप नंदनसरनजी (हाकिमसिंह साँकन वाले) *

छप्पय २७३

रस मोद लता के सरन में श्रीनृप नंदन सरन जू।
साँकन ग्राम निवास त्याछ श्रीअवधहिं आए।
प्रेमी भक्त महान करें सेवा मन लाए॥

संतन की सिवकाइ रहै मन भाइ भलो है ।
हाकिमसिंह सनाम जहाँ इन जनम थली है ॥
कुल भूषन दूषन रहित प्रगटे तारन तरन जू ।
रस मोद लता के सरन में श्री नृपनंदन सरन जू ॥

* श्री देवराज स्वामी (जगन्नाथपुरी) *

* छप्पय २७४ *

वैराग्य विमल विग्यान की मरयादा जे महा मुनि ।
देवराज श्री स्वामि वसें पुरुषोत्तम नगरी ।
इनहिं नमामि नमामि गुनन की गाथा अगरी ॥
श्री जगन्नाथ जू कह्यो कलेवर वदलो सँग में ।
सुनत त्रपाद विभूति रंग छायो अँग अँग में ॥
षट मास अवधि वीते मुदित कियौ पयान भइ गगन धुनि ।
वैराग्य विमल विग्यान की मरजादा जे महा मुनि ॥

* रयपुरा निवासी जिला छपरा 'श्री कान्हरदासजी' *

* छप्पय २७५ *

अन्न दान सनमान कर अन्न पूरना वस करी ।
स्वामी कान्हरदास संत सेवा व्रत धारी ।
साधु बड़े प्रख्यात कृपा के भए अधिकारी ॥
कस्मर को परगनो जिला छपरा गंगा तट ।
रैपूरा अस्थान बनायो जनु वनसीं वट ॥
वृन्दावन रस माधुरी भूर भाग इनके भरी ।
अन्न दान सनमान कर अन्न पूरना वस करी ॥

* श्री रामगुलामशरणजी रामायणी (मिर्जापुर) *

* छप्पय २७६ *

नेमी प्रेमी दृढ़ व्रती हनुमत पद पंकज भ्रमर ।

रामगुलाम सु विप्र सुहृद सज्जन अनुरागी ।
मानस राम चरित्र उपासक शुचि बड़ भागी ॥
सुता व्याह के हेतु तिया कटु वाणी बोली ।
दूजे दिन विन वेध मिलो मुक्ता अनमोली ॥
मध्य सुर सरित आय के बाँह गही श्री कपीवर ।
नेमी प्रेमी दृढ़ व्रती हनुमत पद पंकज भ्रमर ॥

* श्री रामदासजी वेगू सराय *

❀ छप्पय २७७ ❀

जे सावधान ह्वै शुचि रुचिर राग भोग में प्रेम निधि ।
विष्णु पुरी मुंगेर जिला वेगू सराय के ।
रामदास उर्मिला आश्रित श्याम नाय के ॥
द्राविड़ उर तैलंग त्रास के पंडित पूरे ।
औरौ भक्ति रहस्य शास्त्र अवलोके रूरे ॥
श्री उमा शारदा कृपा पात्र भूर भाग पाई सुसिधि ।
जे सावधान ह्वै शुचि रुचिर राग भोग में प्रेम निधि ॥

* हरिहरप्रसादजी के शिष्य श्रीप्रमोदबन विहारीशरनजी *

❀ छप्पय २७८ ❀

श्री प्रमोदवन विहारीशरण हरिहर प्रसाद के शिष्य भल ।
गंगा तट के प्राँत पूर्व आदिक प्रदेश में ।
वहुत जीव तहँ करें आप ने शुद्ध वेष में ॥
चित्रकूट श्री अवध रहैं नित यही रीति से ।
काष्ट गुफा में गुप्त लहैं सुख प्रेम प्रीति से ॥
सूखौं पेड़ रसाल इन हरित वगौरा कियौ कल्ल ।
श्री प्रमोदबन विहारीशरण हरिहरप्रसाद के शिष्य भल ॥

❋ श्री टीमकदासजी (विहार) ❋

❋ छप्पय २७६ ❋

श्री सीतारामीय जू हरि हर प्रसाद के कृपा पात्र।
टीकमदास सु साधु सख्य रस के अधिकारी।
काशी जी में रहैं कमदस्थान पुजारी॥
भक्ति जोग सम्पन्न संस्कृत वंग भास के।
पंडित बड़े अनन्य सदाचारी उपास्य के॥
पूरब मिथिला देश के चेताए इन जीव मात्र।
श्री सीतारामीय जू हरिहर प्रसादा के कृपा पात्र॥

❋ श्री राधाकृष्णाचारीजी 'कथावाचक' (छपरा जिला) ❋

❋ छप्पय २८० ❋

मनौ कृष्ण करुणा प्रगट कलि करालता कील दइ।
श्री राधा कृष्णाचारि सरल चित अति मिठ भाषी।
मुग्ध रहत नर नारि श्रवन सुन कथा सुधा सी॥
विमुखन बृत्ति समार सार सुख में सरसावैं।
कोमिल हृदय उदार सिन्धु भव पार लगावैं॥
उपदेश अकिंचन कीरती अवनि अकाश विकास भइ।
मनौं कृष्ण करुणा प्रगट कलि करालता कील दइ॥

❋ श्रीरामलखनदासजी (खाकी) ❋

❋ छप्पय २८१ ❋

खाकी जी के वंस में रामलखन के दास जू।
बड़े दर्शनी संत कुशल विवहार देस में।
परुपकार परमार्थ सँभारें शुद्ध भेष में॥
भजन भावना रीति प्रीति प्रभु में सरसाई।
जैसी श्री गुरुदेव पध्धिति इन्है लखाई॥

आदर सुजन समाज में सब सदगुन की रास जू।
खाकी जी बंस में रामलखन के दास जू॥

* स्वामी श्रीमन्नारायणाचारीजी (भागलपुर) *

* छप्पय २८२ *

जे श्रीमन्नारायण आचारी स्वामी सरस।
भागलपुर अस्थान वैष्णव वल ब्रह्मचारी।
कृपा पात्र श्री रंग वेंक्टेश्वर के भारी॥
पंडित परम विरक्त भक्ति श्रद्धा बिश्वासी।
शास्त्र रसिक सरवज्ञ्य मृदुल चित अति मित भासी॥
भव भय नहिं व्यापी तिन्हैं जिन इनके कीनै दरस।
जे श्रीमन्नारायण आचारी स्वामी सरस॥

* श्री मधुसूदन स्वामीजी प्रेम बुद्दुर दक्षिण के *

* छप्पय २८३ *

श्री बर बर मुनि निष्ठा निपुन रसिक बड़े रसराज के।
श्री मधुसूदन स्वामि प्रेम बुद्दुर में भ्राजें।
आवेशी बसुजाम नेह नव कुंजन साजें॥
विरही हृदय उदार त्याग की मूरति मानौ।
सजग प्रीति परिचार वैष्णव कुल कौ जानौ॥
जाचक तत्व त्रपान नित सदा सजाति समाज के।
श्री बर बर मुनि निष्ठा निपुन रसिक बड़े रसराज के॥

* श्री स्वामीरामदासजी (बदनपुर) *

छप्पय २८४

स्वामी श्री परमारथी रामदास रहैं वदन पूर।
कठिन प्रदेश महान जहाँ के वासी जड़ अति।
दियो भागवत वेष तिन्हैं कर शुद्ध साधु मति॥

करे अनगनित जीव आप ने द्वार कृतारथ।
कलि में भल नहिं और जान यासों परमारथ।
त्रय ताप भीम भव रोग के संजीवन जे अमिय मूर ॥
स्वामो श्री परमारथी रामदास रहैं वदन पूर ॥

* भागलपुर निवासी श्री हंसकलाजी *

* छप्पय २८५ *

संत चरण अम्मृत रसिक शृंगारी जे साधु चित।
गुडहट्टा अस्थान शिहर भागल पुर वासी।
हंस कला निज नाम रास के खास उपासी ॥
नाम जाप नुष्ठान करें झूलन को उत्सव।
नेम प्रेम परधान साधु सेवा कर नव नव ॥
श्री सीतापति पद कमल मन अलि ह्वै तहँ वसहिं नित।
संत चरण अम्मृत रसिक शृंगारी जे साधु चित ॥

* महन्त श्रीसरयूदासजी महाराज (अमरा ग्राम) *

* छप्पय २८६ *

श्री सरयूदास महंत के संत पाँच सौ सँग रहैं।
अमरा के अस्थान अमृत संजीवन ब्राजें।
राम राज्य रघु श्रेष्ठ इष्ट यह धुनि सों ग्राजें ॥
विन्ध देश में जाय अपूरव घटना कीनी।
कोढ़ी मृतक जिवाय विमल काया कर दीनी ॥
सौन्दर्य कहत इनके चरित अंग उमग आनँद लहैं।
श्री सरयूदास महंत के संत पाँच सौ सँग रहैं ॥

* शहर राठ जिला हमीरपुर के निवासी दाम्पत्य चेतनदास तथा सहजो वाई वैस्य *

* छप्पय २८७ *

इन दम्पति के भाव ने भूषित मो मन को कियो।

सहजो चेतनदास संत सेवा व्रत लीने।
ता दिन करे उपास मिले नहिं जो रस भीने॥
पाँच टका की पुंजी वनिजवाही में ठाने।
सुजन पाहुँने आए धरी नथ तिय की गाने॥
प्रभु ल्याए पहिराइ सोइ निज कर सों भीजो हियो।
इन दम्पति के भाव ने भूषित मो मन को कियो॥

* संत सेवी परक भक्त वंशी वाले भागवत निष्ठा प्रवीन छत्रपूर *

* छप्पय २८८ *

वंशी वाले संत पै वार वार बलि जाऊँ मैं।
प्रेमी परम कृपालु दयालुता दान प्रवीनों।
कहै जो कोउ सियराम ताहि तन मन धन दीनों॥
पतिनी कौ पट वेंच करी संतन सिवकाई।
आप स्वयम रस राय आय अम्बर पहिराई॥
तव से प्रभु सम्पति दई भई सिद्ध सब ठाँव मैं।
वंशी वाले संत पै वार वार बलि जाऊँ मैं॥

* स्वामी श्री जयराम देवजी (वृन्दावन) *

* छप्पय २८९ *

श्री जयरामदेव महँराज की गुन गाथा रस मई है।
प्रभु के प्रिय अनुराग प्रेम के भरे सरोवर।
रोम रोम सर साय रहैं लव लीन बरोवर॥
लिखे अनेकन गृन्थ श्री रामा नन्दायन।
सिय स्वामिन की जन्म कथा तैसइ सुख दाइन॥
वृन्दा वन में वास कर अवध आस लग रई है।
श्री जयरामदेव महँराज की गुन गाथा रस मई है॥

* श्री वियोगी हरिजी (हरिप्रसाद) *

* छप्पय २६० *

रहस वाटिका प्रेम की हरि के उर अंतर छई।
साहित सुमन नवीन भए विकसित बहु भाँती।
औरौ गुनन प्रवीन वेलि द्रुम नाना जाती॥
सींचत सरस सनेह मेह अनभवी अगोचर।
विनय पत्रिका तिलक तोषनी कियो रसिक वर॥
मेटत ताप वियोग की शुचि सुगंध सौन्दर्य मई।
रहस वाटिका प्रेम की हरि के उर अंतर भई॥

* श्री विन्दु कवि (वृन्दावन प्रेमधाम) *

* छप्पय २६१ *

आनंद अमृत रस विन्दु ह्वै कंद भयो व्रज चंद कौ।
लेखक चतुर प्रवीन कला कौशल में भूषण।
सुमति सुभाग नवीन जगे भागे सब दूषण॥
बाणी कौ रस रसिक मधुर मधुकर ह्वै लीनौ।
कृष्ण रसामृत सार भली विधि भाविक चीनौ॥
पुनर्महा माया प्रवल परो न पालौ फंद कौ।
आनंद अमृत रस विन्दु ह्वै कंद भयो व्रज चन्द कौ॥

* कवि कुल भूषण श्रीशारदजी *

* छप्पय २६२ *

शारद में शारद कला वाला पन से प्रगट भइ।
काव्य कुशल साहित्य देस में नए निराले।
लिखें लेख सिध्धान्त रहैं रुचि सवके पाले॥
अवध धाम में जन्म प्रीति इनकी अनन्य है।
ऐसे सुजन महान कहत सव इन्हैं धन्य है॥

लोक लाहु परलोक निधि मन भाई सो सवइ लइ।
शारद में शारद कला वाला पन से प्रगट भइ ॥

* श्रीरगड़ेदासजी आडवंददासजी हर किस्म की बोली बोलने वाले *

(प्रहलादघाट के महात्मा)

छप्पय २६३

इनके भाव विभाव को भोग करें भगवान सब।
रहें घाट प्रहलाद करें संतन की सेवा।
कोउ न जावै विमुख करावें सवै कलेवा॥
नइ नइ बोली वोलि रिझावें रामलला को।
समुझ न पावै कोउ आपकी अजब कला को॥
रगड़ेदास कहाय कें आडवंद के दास अब।
इनके भाव विभाव को भोग करें भगवान सब॥

* समूह संत *

* छप्पय २६४ *

जे संत स्वर्ग सुख भोग कें अवधपुरी में अवतरे।
इछा भवन महंत भए छवि रामदास जू।
रामचरन के दास भरें अभिलास खास जू॥
श्री शत्रुधनसरन बड़े भोले भाले हैं।
मनो पवन के सुअन इन्हे पोसे पाले हैं॥
दास मुनी स्वर दयालु अति नीति प्रीति फूले फरे।
जे संत स्वर्ग सुख भोग के अवधपुरी में अव तरे॥

* परम भागवत श्री रघुनाथसिंह लटौरिया ब्रह्मण (दतिया निवासी) *

* छप्पय २६५ *

श्री राम रसिक रघुनाथ सिंघ सिय पिय पद पंकज पगे।
लीला उत्सव करें सदा सन्तन सिवकाई।
प्रेमी परम उदार भावना भक्ति सवाई॥

पद रचना रस रास रंग में अंग उमायो।
सरजू तट तन त्याग माँग सौभाग भरायो॥
अबहुँ पुत्र औ पौत्रहू सरस रीति में रँग मगे।
श्री राम रसिक रघुनाथ सिंघ सिय पिय पद पंकज पगे॥

* श्री राम शास्त्रीजी (विजावर) *

* छप्पय २६६ *

सज्जन सुमति सुशील शुचि कोविद कल महराष्ट कुल।
राम शास्त्री विद्य चार षट अष्टादस के।
औरौ काव्य रसाल रसिक मधुकर नव रस के॥
दम्पति अति अनुराग सरल सहजहँ स्वभाव से।
जगत्जाल कौ त्याग कियौ आनँद उमाव से॥
लियौ शरण काशीश जो भव सरिता कहँ पुष्ट पुल।
सज्जन सुमति सुशील शुचि कोविद कल महराष्ट कुल॥

* जिला बाँदा ग्राम गिरवाँ निवासी श्रीपं० 'शिवनाथजी पौराणिक' *

* छप्पय २६७ *

गिरवाँ के शिवनाथ जू पौराणिक पंडित बड़े।
श्री बालमीक शुकदेव व्यास वाणी के गाइक।
सज्जन सुमति सुशील बचन मानस औ काइक॥
जग जीवन कौ हेतु सफल कीनो इन नीकौ।
प्रगट करायौ पान रसिक रस रसिकन हीकौ॥
सदा शिष्य झुक झूमकन नित्त शीस नावहिं खड़े।
गिरवाँ के शिवनाथ जू पौराणिक पंडित बड़े॥

* श्री रामचरनजी गया बाल (विजावर राज्य) *

* छप्पय २६८ *

बने रहैं चेला सदा यदिपि गुरू सब कोउ कहैं।

औगुन सुनै हजार ताहु कबहूँ नहिं मानै ।
गुन को कर भंडार सुजस को सदा बखानै ॥
ऐसे रसिक उदार दीन पग पर पर ध्यावै ।
जो कोउ मिलिवे जाय राम रस ताहि पियावें ॥
सौन्दर्य गाय गुण गण विमल मो मन नहि समता लहै ।
बने रहैं चेला सदा यदपि गुरु सब कोउ कहैं ॥

*** छप्पय २६६ ***

कुंज केलि रस माधुरी पान कियो जौ लौं जियो ।
श्याम देव आचार्य श्याम श्यामा रस प्यायो ।
प्रेमी श्री सियराम अवध सम्बंध करायो ॥
राम प्रियो प्रिय नाम सहचरी सेवा दीनी ।
प्रगटे नित नए भाव चाव सों चाह नवीनी ॥
भगवंत संत गुन गाय पुन साकेत महल नित सुख लियो ।
कुंज केलि रस माधुरी पान कियो जौ लौं जियो ॥

* भक्तवर छत्री कुल भूषण संत सैवी खुमानसिंह (पायक विजावर निवासी) *

*** छप्पय ३०० ***

पाइक कुल भूषण कितौ दूषण सकल विहाय कै ।
हरि जस सुन हरषाहिं कंठ गद-गद ह्वै आवै ।
रोमावलि रह छाय नयन सो नीर बहावै ॥
दीनन कौ ह्वै दास करी सेवा सन्तन की ।
जहँ लौं मिलै उकास करै परवाह न धन की ॥
सौन्दर्य सरस इनके चरित कहाँ कहाँ लौं गाय कै ।
पाइक कुल भूषण कियो दूषण सकल विहाय कै ॥

छप्पय ३०१

कियौ गमन साकेत को संत कृपा बल पाय के।
माया करो गुमान खुमानहिं सब विधि घेरौ।
बहु विपति के बान सहे मन तनक न फेरौ॥
क्षत्री स्वभाव की सान कुटुम की आन मेट के।
लियौ अवध कौ वास सन्त पद कमल भेंट के॥
कछु दिन तहँ रह लूट सुख चित्रकूट पुनि आय के।
कियौ गमन साकेत को संत कृपा बल पाय के॥

* श्री मनसुखजी (मन्टेनसर विजावर) *

छप्पय ३०२

मनसुख नाम प्रताप से मन सुख ह्वै मन में रह्यो।
एक लक्ष कौ नेम प्रेम सों नाम जाप कौ।
करैं मानसी भाव भीति त्यागें त्रताप कौ॥
श्री रामायण उर विनय गीत कवितावलि कौ रस।
पियौ हियौ सरवोर भयौ चाहिय जस॥
सौन्दर्य सुमति उपजी सुखद लूट लाहु जीवन लह्यो।
मन सुख नाम प्रताप से मन सुख ह्वै मन में रह्यो॥

* श्री रामनेत दीवान महाराष्ट्र कुल भूषण (विजावर) *

* छप्पय ३०३ *

वल्लभ कुल रस माधुरी दम्पति मिल नीके पिये।
श्रीराम नेत दीवान विजावर राज्य खास के।
पंडित बड़े प्रमान नीत वेदान्त भाष्य के॥
श्री बृन्दाबन रस रसिक करें शृंगार समइया।
प्रेमी परम उदार खच के रोक रुपैया॥

सौन्दर्य भट्ट तैलंग भल निरमल मन भीजे हिये।
वल्लभ कुल रस माधुरी दम्पति मिल नीके पिये ॥

* पं० रामदासजी (विजावर निवासी) *

* छप्पय ३०४ *

रामदास रस रँग रहें ब्रह्म सच्चिदानन्द के।
वेदान्त वाक्य में प्रीति रीति सब जग की जानैं।
गीता गौरव घनौ रसिक प्रेमिन सनमानैं ॥
सारा सार विचार तत्व कौ करें निवेरौ ।
ऐसें विरति उहार तियाहू कौ मन फेरौ ॥
युग जीवन नीकौ निभो भीति न माया द्वन्द के।
रामदास रस रँग रहे ब्रह्म सच्चिदानन्द के ॥

* 'रसिक श्याम' श्री मन्नूलालजी का इस्तकुल भूषण (विजावर) *

* छप्पय ३०५ *

कलिकाल प्रशंसित वंश ए चित्र गुप्त नय धीस कौ।
मुन्नूलाल प्रधान भए तेहि में रस भीने ।
ऐसे सुज सुजान सदा तन मन रस लीने ॥
कुशल लोक पर लोक नाम की निष्ठा भारी ।
मात भ्रात पर प्रीति तिया की रुचि सों न्यारी ॥
संसार तरन तारन सृज्यो वोहित कोट तेतीस कौ।
कलिकाल प्रशंसित बंश ए चित्र गुप्त नय धीस कौ ॥

* श्री रशिक श्याम *

* छप्पय ३०६ *

श्री रसिक श्याम रस रीत की दृढ़ प्रतीत प्रीतम दई।
जावक युग पद दियौ दिव्य देविन अन्तर ह्वै ।
भुज वँद कंकन अंक अलंकृत रेखन त्रय द्वै ॥

यह उज्वल रस भिन्न रहसः त्रय से जानौ।
श्री जनकलली पद कमल अमल अलिनी इन मानौ॥
काल क्रिया व्यापी नहीं सुरति सरक साकेत गई।
श्री रसिक श्याम रस रीत की दृढ़ प्रतीत प्रीतम दई॥

❋ कायस्थ कुल भूषण श्रीदेवीप्रसादजी मास्टर (प्रीतम) विजावर स्टेट ❋

❋ छप्पय ३०७ ❋

रसिक श्याम प्रीतम प्रवल प्रेमी युयल विहार के।
राम उपासक एक खास श्री जनक लली के।
सरस सरोवर हृदय मधुप रस राज थली के॥
काव्य सु सुमन विशाल विमल गुन लली लाल के।
रुचि रुचि पुहुवें माल भक्त भूषण सुभाल के॥
पहिरावहिं सौन्दर्य उर दोहुन दुहू निहार के।
रसिक श्याम प्रीतम प्रवल प्रेमी युगल विहार के॥

❋ कायस्थ कुल भूषण श्री गजाधरप्रसाद पोस्टमास्टर (विजावर) 'प्रेम' ❋

❋ छप्पय ३०८ ❋

प्रेमी प्रेम प्रधान भल युगल विमल रस रँग रह्यो।
श्यामा श्याम उपास्य रसिक श्री वृन्दावन कौ।
सजल नयन पुलकात चरित सुन आनँद घन कौ॥
श्री रामायण जब कहत रँगीली सान वान सों।
कोकिल कंठ लजात अनूठी तान गान सों॥
सौन्दर्य सुहृद सज्जन सुमति ललित माधुरी सुख लह्यो।
प्रेमी प्रेध प्रधान भल युगल विमल रस रँग रह्यो॥

❋ कायस्थ कुल भूषण श्रीउल्फतरामजी तहसीलदार विजावर ❋

❋ छप्पय ३०९ ❋

उल्फत उल्फत राय को मो मन लख फूलो रहै।

सत्य दीनता युक्त सुहृद निरमल मन नीके।
प्रेमी युगल विहार मानसी भाविक ही के॥
नाम जाप को आप करें नित गुप्त रीति से।
मानस राम चरित्र रमें सज्जन सु प्रीति से॥
सौन्दर्य सुमन शृंगार रस मधुर मधुप भूलो रहै।
उल्फत उल्फत राय की मो मन लख फूलो रहै॥

* कायस्थ कुल भूषण श्री हरि सेवकजी विजावर *

* छप्पय ३१० *

हरि सेवक हरि रँग रहे दम्पति सम्पति पाय कै।
राज नीति में निपुन सुजन ब्यिवहार देश में।
भजन करें भल भाव संत सज्जन सु वेष में॥
रसिक रँगीले भए युगल रस वस में ऐसे।
मनहुँ नलिन वन माहि अलिनि अलि भूले जैसे॥
सदा सिया वर केल के अधिकारी अधिकाय कैं।
हरि सेवक हरि रँग रहे दम्पति सम्पति पाय कैं॥

* श्री कायस्थ कुल भूषण श्रीरामनरायनलाल (छत्र पुर) *

छप्पय ३११

रामनराइन नरन में नरहरि कैसो दास भवो।
विरति निरति दृढ़ नेम प्रेम को पंथी साँचो॥
संत सुमति में प्रीति मीति सज्जन रँग राचौ।
दयाल देश को दृष्य बाग में रमखो ऐसे।
मनहुँ मधुर मधु पियौ मस्त मधुकर ह्वै जैसे॥
सदा श्याम श्यामा कृपा प्रीतम प्रेम प्रकाश भवो।
रामनराइन नरन में नर हरि कैसो दास भवो॥

* श्री कुअर प्यारे जू विजावर निवासी (प्रमुखराज कर्मचारी) *

* छप्पय ३१२ *

श्री प्यारे जू प्रिय भक्त हैं विरज विहारीलाल के।
साधु संत में प्रीति भजन की रीति समारें।
नीति निपुन विवहार करें सब भार उतारें॥
अपनों मन मुरझाय लियो इन जगत जाल से।
परें न कौनउं फद गृसेंनहिं काल व्याल से॥
जे अनन्य ह्वै रहत हैं शरणागत प्रतिपाल के।
श्री प्यारे जू प्रिय भक्त हैं विरज विहारीलाल के॥

* कायस्थकुल भूषण श्री मोहनलाल (विजावर) *

* छप्पय ३१३ *

सूर मदन मोहन मनौ प्रगटे मोहनलाल जू।
कर्म कान्ड में प्रीति अनोखी इनकी ऐसी।
दया दान सनमान सुहृद सज्जन में तैसी॥
रसिक रास सम्बंध लियो श्री अवध जाय के।
प्रेमी भक्तो प्रधान रह्यो हिय हरस छाय के॥
श्री युगल नाम कौ जाप कर लिए रहत कल माल जू।
सूर मदन मोहन मनौ प्रगटे मोहनलाल जू॥

* दौले खां दिलसेर खां पठान (बिजावर निवासी) *

* छप्पय ३१४ *

दौले खाँ दिलशेर खाँ प्रेमी बड़े पठान हैं।
अवध और बृजराज गुनन को सुन श्रृवनन सें।
होवें प्रेम विभोर सुरति भूलें तन मन से॥
प्रेम अश्रु परवाह वहे नैनन से न्यारौ।
इनको भाव रसाल लगे सबही खाँ प्यारौ॥

गए परम पद प्रेम से अब सब रस खाँ छान हैं।
दौले खाँ दिलशेर खाँ प्रेमी बड़े पठान हैं ॥

* सोलापुर निवासी 'सेठ मुरलीधरजी' *

* छप्पय ३१५ *

धनिक दिव्य धन मुदित मन मुरलीधर मानस मराल।
नित्या नित्य विवेक सार श्री बैष्णव सेवा।
कीन्हो तत्व निकार त्याग अरचादिक देवा ॥
गुप्त गुनन गम्भीर सदन सोलापुर साजैं।
अंगन अंग सुधीर तिलक द्वादस नित राजैं ॥
शुभ गुन स्वाती सुवन चुनि इनहिं न व्याप्यो कलि कराल।
धनिक दिव्य धन मुदित मन मुरली धर मानस मराल ॥

* ब्रह्म वेत्ता स्वामी *

* छप्पय ३१६ *

जे सन्त सुतंतर भाव के इनकी गाथा गूढ़ है।
प्रभू दत्त ब्रह्मचारि अखंडानन्द निराले।
कार्तकेय करपात्रि गेरुआ वस्तर वाले ॥
ब्रह्म वेत्ता और जिते जो भए हैं होवैं।
ते सब सुजन महान मलिनता सब की धोवैं ॥
कथनो कथतन ना बनै मो मति गति अति मूढ़ है।
जे सन्त सुतंतर भाव के इनकी गाथा गूढ़ है है ॥

* ब्रह्मनिष्ठ सामूहिक सन्त *

* छप्पय ३१७ *

राज ऋषी वेदान्त निधि विज्ञानी जे संत जन।
राम तीर्थ निर्भयानंद पूरण विरजा नँद।
विरति विवेका नंद सर्वदा नँद आनद कँद ॥

केवल अनन्य सुन्दर अखंड दादू हरि दासा।
श्याम देव सीआर शिवगण चारि विलासा॥
श्री सुदर्शना चार्य्य जू ब्रह्म निष्ठ वच काय मन।
राज ऋषी वेदान्त निधि विज्ञानी जे संत जन॥

* महान सिद्ध सन्त सामूहिक *

* छप्पय ३१८ *

इन संतन के चरण तल भूप भूमि लोटत रहैं।
श्री जगन्नाथ के शोर लक्ष्मण दास सुहंसा।
रामलला जू साव गरीवन दासौ मंसा॥
जगन्नाथ उड़िया अलौनिया अजवदास भए।
रामा ललुआ मौन जयंता सूरदास नए॥
ज्ञान विराग सुभक्ति वल इन्द्र विभव फोपट कहैं।
इन संतन के चरण तल भूप भूमि लोटत रहैं॥

* सामूहिक सन्त *

छप्पय ३१९

साधु तपोधन सिध्ध जन परम हंस जे कृपा पात्र।
राम कृष्ण बन मौज द्वारका दास पतौरा।
संत केसवा नंद टाट साहिव इन्दौरा॥
मानिक बाबा ताज हजारींदास अजय गढ़।
अंजनि सिध्ध अगाध रहैं सिय स्वामिनि के मढ़॥
स्वातम सुथल विकसित कमल कलि प्रवलअज्ञय व्यापीन रात्र।
साधु तपोधन सिध्ध जन परम हंस जे कृपा पात्र।

* सामूहिक सन्त *

छप्पय ३२०

इन सव के मन मीन हरि चरण कमल मन मीन गति।

श्री नारायणदास रसिक रघु वंस दास जू ।
राम नरायन मौन तपोधन सत्य रासि जू ॥
माखनदास सु संत मधुर माखनहूँ से अति ।
लालदास सुम्मेर साधुता मुग्ध सु उन्नति ॥
सरल सुहृद अति दीन भर पूर प्रेम में पीन मति ।
इन सब के मन मौन हरि चरण कमल मन मीन गति ॥

* श्री ठाकुर गुरुदत्तजी भूत पूर्व (सिटी मजिस्ट्रेट फैजाबाद) *

* छप्पय ३२१ *

इनकी भक्ति सराहनी राज काज करते भए ।
(श्री) गुरुदत्तसिंह जू करी संत सेवा मन भाई ।
दम्पत्ति बड़े दयालु अहंता कबहुँ न आई ॥
देखें दुखिया दीन करें सेवा तन मन से ।
औरहु कर्म सुधर्म सजावें अपने धन से ॥
सत्त पथ अपनो छांड़ के कबहुँ कुपथ में ना गए ।
इनकी भक्ति सराहनी राज काज करते भए ॥

* साधू बाई श्रीराम प्यारी सहचरी *

* छप्पय ३२२ *

श्री राम प्यारी रस भरी साधू बाई सब कहैं ।
त्याग विराग सुशील शान्ति की मूरति मानो ।
चित्रकूट की सिद्धि प्रगट इनही को जानो ॥
छहू रसन की छाँह छुई नहिं ब्याह करायो ।
बारेहि ते हर हेरि हिये हीरा पधरायो ॥
कहत अकथ सुनतन सुखद इनकी समता ए लहैं ।
श्रीराम प्यारी रस भरी साधू बाई सब कहैं ॥

* नन्नीवाई भक्त वंशी वाले जी की पुत्री *

* छप्पय ३२३ *

दुहुता संत कृपालु की नन्नी वाई नाम की।
साँची सहज स्वभाव कहों कहँ लों सरलाई।
वहीं भावना भक्ति वही प्रियता रसकाई ॥
एक समय इक नृपति महल में परछुत लीनी।
युगल नाम धुनि करी आप सब विधि सें होनी ॥
नग्न भई पट दै दियौ झनक सुनत सियराम की।
दुहुता संत कृपालु को नन्नी वाई नाम की ॥

* श्री किशोरीजी (गुप्तार घाट) *

* छप्पय ३२४ *

इन्हैं किशोरीजी सदा सबै सुजन जन कहत हैं।
शील शान्ति उर सरल भाव की मूरति मानौ।
कार्तिकेय की शिष्य स्वच्छ कमला सी जानौ ॥
अष्टयाम अनुराग भावना भरी रहत हैं।
युग युग जाम सिरात नहीं चित चेत रहत है ॥
भाविक भक्त विभोर ह्वै इनके दरशन लहत हैं।
इन्हैं किशोरीजी सदा सबै सुजन जन कहत हैं ॥

* श्री युगल सहचरी तथा श्री वैदेही सहचरीजी (माई वाड़ा रामघाट) *

* छप्पय ३२५ *

श्री युगल किशोरी के सहित वैदेही सहचरी जू।
इन पर कृपा महान भई सिय पिय की साँची।
सरयू के मग उमग उमग माझा में नाची ॥
लगै समाधी पड़ी रहैं वे सुध रस भीनी।
होवे केलि किलोल वही पद रचना कीनी ॥

परम अकिंचन अति अनन्य नित माग खाँय मधुकरी जू।
श्री युगल किशोरी के सहित वैदेही सहचरी जू ॥

* श्री मतीप्रागदासजी (माई बाड़ा रामघाट) *

❀ छप्पय ३२६ ❀

श्री प्रागदासी भली माई बाड़ा में रहैं।
उज्वल अमल अदाग भाग इनको अति रूरौ।
त्याग विराग महान भावना भजनहुँ पूरौ ॥
जेती आवें माइ वाइ तिनको प्रति पालें।
अपने योग प्रभाव कर्म की मेंट कुचालें ॥
अवध वास नीके निभो टकसारी पध्धिति गहैं।
श्री प्राकदासी भली माई बाड़ा में रहैं ॥

* लालमती बाई (श्री अयोध्याजी) *

* छप्पय ३२७ *

श्री लालमती लड़ ल्याय कै लली लाल सुख पाए हैं।
अग्र भवन बनवाय प्रिया प्रीतम पधराए।
रसिकन की सब रीत करें उत्सव मन लाए ॥
रुचि रुचि व्यंजन बनै सजन को भोग लगावें।
साधु संत सनमान करें उर तिन्हैं पवावें ॥
तीनउ पन इन ताय के प्रिय प्रीतम गुन गाए हैं।
श्रीलाल मती लड़ ल्याय कै लली लाल सुख पाए हैं ॥

* श्री वैदेही बल्लभकुंज के श्रीसियाशरनजीकी कृपापात्र श्रीलक्ष्मी बाई *

* छप्पय ३२८ *

श्री सिया शरन जू की कृपा लक्ष्मी वाई पर भई।
चित्रकूट में जाय कछू दिन भजन कियो है।
तहँ से फिर पुनि आय अवध को वास लियो है ॥

नव निकुंज वनवाय प्रिया प्रीतम पधराए।
सेवक सती विताय वृती वंधान लगाए॥
भाव भावना रीतिहू इन उपासना की लई।
श्री सिया शरन जू की कृपा लक्ष्मी बाई पर भई॥

* श्रीमती लक्ष्मी बाई (विहार निवासी अचल अयोध्या वास करवे वाली) *

* छप्पय ३२६ *

आदर्श प्रेम वैराग को लक्ष्मी वाई भल भईं।
पती पुत्र परवार सकल सुख संपति त्यागी।
अवध वास के हेत लगन सिय पिय सों लागी॥
नृत्य गान कर प्रीति रीति सों भाव बतावें।
रसिक शिरोमणि राज कुँवर को रिझा रिझा ललचावें॥
वृद्ध भई रंग रस रईं वहुर न फिर घर में गईं।
आदर्श प्रेम वैराग की लक्ष्मी वाई भल भईं॥

* श्री सिया सहचरीजी (हनुमत निवास) *

* छप्पय ३३० *

श्री सिया सहचरी जू भईं मुल्ला वाई नाम की।
प्राकृत पति संयोग भयो बहु अल्प काल कौ।
बहुर रसिकनी जाय लियो रस अवध लाल कौ॥
तन मन में सरसान नृत्य औ गान करैं जब।
संत सभा सुख मान आप पैं सुमन झरैं तब॥
कमल नयन की कृपा वल नित्त निवासिनि धाम की।
श्रीसिया सहचरी जू भईं मुल्ला वाई नाम की॥

* श्रीमती रामसखीजी (रास कुंज गोला घाट) *

* छप्पय ३३१ *

श्री राम सखी रस भावना करें युगल सरकार की।

अष्टयाम नित नेम सजैं सेवा सिय पिय की ।
नइ नइ रीत रसाल रमावें अपने हिय की ॥
संतन की सिवकाइ कथा अमृत नित पीवें ।
साकार दिव्य सुख स्वाद सजन कौ लै लैं जीवें ॥
लीला ललित अपार है इनके लाड़ दुलार की ।
श्री राम सखी रस भावना करैं युगल सरकार की ॥

* श्री सन्पति कुँवरजी स्वामी श्रीसीतारामाचारीजी की पत्नी (अयोध्या) *

छप्पय ३३२

सम्पति सदगुन सदन मनौ बैङ्कटेश पद कलल अलि ।
श्री रामानुज स्वामि बंश की भई समाश्रय ।
कपला कोमिल हृदय सरस भीज्यो तत्वत्रय ॥
प्राकृत पति नैमित्त नित्य मनहीं मन ध्याए ।
तन त्यागत की वेर पारषद प्रगट दिखाए ॥
श्री कनक भवन रसराज की रमत रँगीली कुंज गलि ।
सम्पति सदगुन सदन मनौ वेङ्कटेश पद कमल अलि ॥

* श्रीमती जनककिशोरी सहचरी श्रीराम सखी की शिष्या (श्रीअयोध्याजी) *

* छप्पय ३३३ *

श्री जनक किशोरी सहचरी गुरु निष्ठा में पीन हैं ।
श्री राम सखी को शिष्य बड़ी सेवा में सांची ।
करै सकल किंकर्य सजन के आगे नाची ॥
कबहुँ लगे संयोग दरश सद्गुरु नहिं पावें ।
दो दो दिवस सिराहिं अन्न जलहूँ नहिं खावें ॥
पाँचइ कचा पास कर अलभ लाभ इन लीन है ।
श्री जनक किशोरो सहचरी गुरु निष्टा में पीन है ॥

* श्रीमती चन्द्रकला सहचरीजी (श्रीजानकी रसिक कुंज सीतामढ़ी) *

* छप्पय ३३४ *

श्री चन्द्रकला सहचरी जू सीतामढ़ी सनाम हैं।
रसिकन की मन हरन रीति इनमें सरसानी।
प्रिय पाहुन का भाँति करें सेवा मनमानी॥
दुलहा राजकुमार इनहिं अपनायो गह के।
लली लाल में लाड़ लड़ावें घर में रह के॥
इन्हें भावना सिध्द्ध भइ सब प्रकार निषकाम हैं।
श्री चन्द्रकला सहचरी जू सीतामढ़ी सनाम हैं॥

* श्रीमती सीता सहचरीजी (बावनजी महाराज की शिष्या) *

* छप्पय ३३५ *

श्री बावनजी के शरन में जे सीता सहचरि भईं।
भजन भावना रीति दई गुरुवर ने जैसी।
नाम धाम में प्रीति भई इनकी सब तैसी॥
विरज विहारी इष्ट देव पितु के इन पाए।
उनहू को श्री अवध वास इनने करवाए॥
अपनौ मत विचलाय के कबहुँ न कौनउ मग गईं।
श्री बावनजी के शरन में सीता सहचरि भईं॥

(श्रीस्वामी जगदेवदासजी महाराज की शिष्या श्रीकनक भवन की नव निर्माण कर्त्ता ओरछा टीकम गढ़, आधीश्वरी महारानी श्रीवृषभानु कुँवरि जू देव्यः)

* छप्पय ३३६ *

वृषभानु कुँवरि ह्वै प्रगट भईं श्री गनेश देई मनो।
धाम नाम में निष्ठ साधु सेवा व्रत लीनें।
अवध जनक पुर महल रसिकनो रुचि रचि दीनें॥
श्री युगल मंत्र की प्रीति प्रगट कीनी निज सुत हित।

तन त्यागत की बेर मिले प्रभु कियो सुचित चित ॥
सौन्दर्य सरस आनँद विनोद पद रचना कर कर भनो।
बृषभानु कुँवरि ह्वै प्रगट भईं श्री गनेश देई मनो ॥

(ओडंछाधीध सवाइ महेन्द्रप्रतापसिंह जू की जेष्ठ पुत्री महाराजा छत्रपुर परम भागवत भक्त सिरमौर श्रीविश्वनाथसिंह जू की जेष्ठ राज्य महिषी श्रीकमल कुँअर जू महँरानी छत्रपूर)

❋ छप्पय ३३७ ❋

साकेत महल रस मंजरी हेंमलता शुभ नामनी।
सेवा उत्सव टहल महल की अष्टजाम सों।
करें सदा दृढ़ नेंम नही रुचि और काम सों॥
युगल भावना भरी धदी भर पूर भाव सें।
भेद न मानें भूल चौप नित नई चाव सें ॥
वृन्दावन श्रीअवध की रास रसिकनी भामिनी।
साकेत महल रस मंजरी हेम लता शुभ नामिनी ॥

❋ छप्पय ३३८ ❋

छत्रपूर आधीश्वरी कमल कुँवरि गुन आगरी।
नेंहर पीहर विभव तासु जानत सब नीको।
भ्राता पिता भुवाल सुजस सब विदित पतीको ॥
लोक लाज कुल त्याग रँगी हरि रँग में साँची।
कर्म धर्म नित करें निगम आगम सुन बाँची ॥
दान देय सनमान सों बृन्दाबन रस नागरी।
छत्रपूर आधीश्वरी कमल कुँवरि गुन आगरी ॥

❋ छप्पय ३३९ ❋

धाम क्षेत्र तीरथ विरत युगल प्रिया करती रहैं।
यदपि प्रकृति वस सहे दुःख दारुण बहु भाँती।

तदपि शिरोमणि सती डिगी नहि हरि रँग राती।
लीला उत्सव करें नृत्य हित गान गवावैं।
नित नए व्यंजन बनें संत सज्जन न पवावैं॥
सम्पति सकल लुटाय के रितए घर भरती रहैं।
धाम क्षेत्र तीरथ विरत युगल प्रिया करती रहैं॥

* छप्पय ३४० *

पातिः व्रत असि धार चढ़ युगल प्रिया भव पार भइ।
तजो राजसी विभव वसन औ भूषन त्यागी।
रहैं साध्वी वेष तपें तन मन विरहागी॥
करें कठिन उपवास भई जीरन तन ऐसी।
मनौ तपोधन रासि पूतरी कंचन जैसी॥
पुनि फलाहार कर भार सम जीवन बोझ उतार गइ।
पातिः व्रत असि धार चढ़ युगल प्रिया भव पार भइ॥

* छप्पय ३४१ *

रसना रस डूबी रहत युगल प्रिया गुन कहत में।
भाविक रसिक अनन्य सदा अपने कर माने।
देह गेह सब सोंप मीत साँचे जग जाने॥
जो कोउ तिनके कहे कभउँ औगुन औ दूषन।
सुने न सोउ दे कान मान भूषन कौ भूषन॥
निरमल यश राकेस रस पैर पार नहिं लहत में।
रसना रस डूबी रहत युगल प्रिया गुन कहत में॥

* बड़ी महारानी रत्न कुँवरिजी (विजावर) *

* छप्पय ३४२ *

रत्न कुँवरि रानी रसिक सिया दुलारी हैं भली।
परम्परा सब लखी सरस निज कुल से जैसइ।

श्री निवास निर्मयो विजावर भीतर तैसइ ॥
चित्रकूट पुनि जाय सृज्यो निज सुखद भवन को।
सन्त जनन सुख दैन सदा त्रय ताप समन को॥
अष्टयाम सेवा स्वसुख नीके जानत रँग रली।
रत्न कुँवरि रानी रसिक सिया दुलारी हैं भली॥

❋ छप्पय ३४३ ❋

सदा सुहागिल सुन्दरी सिया दुलारी पीय की।
उत्सव जन्म बिबाह करें श्री लली लाल को।
प्रेमिन प्रेम उमाव भक्ति भूषण भुवाल को॥
श्री युगल नाम को जाप करें रुचि रसिक रँगीली।
अष्टयाम पद माल गुही कलिकन उन्मीली॥
सौन्दर्य सरस रँग रग मगी भूषण भई सिय हीय की।
सदा सुहागिल सुन्दरी सिया दुलारी पीय की॥

श्रीसवाई महारानी कंचन कुँअरि जू देव्या विजावर राज्याधीश्वरी

(ऋण मोचनघाट अयोध्या)

❋ छप्पय ३४४ ❋

महारानी कंचन कुँवरि भाविक रसिक प्रवीन हैं।
कंचन भवन बनाय वसें श्रीअवध धाम में।
लालहिं लाड़ लड़ाय नहीं रुचि और काम में॥
अष्टयाम अरु नाम भावना युगल भाव सें।
पद रचना बहु करी अनोखी बहु उमाव सें॥
कृपा किशोरी जू करी उनहीं में लव लीन हैं।
महारानी कंचन कुँवरि भविक रसिक प्रवीन हैं॥

* राज माता राजेन्द्र कुँवरि स्टेट बेरी (जिला हमीर पुर) *

* छप्पय ३४५ *

नीति निपुन गम्भीर हैं माता राज कहावतीं।
राजेन्द्र कुँवरि वर नाम भावना बृज की इनकी।
राधा कृष्ण उपास्य ललित लीला है जिनकी ॥
करें दान सनमान उच्च सन्तन की सेवा।
ह्वै अनन्य रस लीन त्याग सब देवी देवा ॥
नाते नेह सनेह के सगे समान निभावतीं।
नीति निपुन गम्भीर हैं माता राज कहावतीं ॥

* श्रीमती किशोरी सहचरीजी (समथर वाली) *

छप्पय ३४६

नृप सिमथर की कुल बधू इन्हैं किशोरी सब कहैं।
राज विभव को भोग रोग सम इनने त्यागो।
करें अयोध्या वास रास सुख में मन लागो ॥
अष्टयाम की रीत भावना भूषित मन में।
प्रकृति जन्य गुण दोष न व्यापे इनके तन में ॥
अलि विहारिनी की कृपा नित विहार को सुख लहैं।
नृप सिमथर की कुल बधू इन्हैं किशोरी सब कहैं ॥

* बुन्देल खण्ड के महाराज *

छप्पय ३४७

जे नृपति दुन्देला बंस के धर्म निय्ठ भाविक बड़े।
छत्र साल मँहराज भुमानी सिंह अमानी।
श्री महेन्द्रपरतापसिंह संतन सुख दानी ॥
इनके सुत साँवंतसिंह ऐसे अनुरागी।
वृज रज उर बृजराज भावना के बड़ भागी ॥

अजहुँ विजावर राज्य में चिन्ह चक्र इनके खड़े ।
जे नृपति बुन्देला बंस के धर्म निष्ठ भाविक बड़े ॥

(भुमानी सिंहतिया अमान,सह पन्ना)

* परम भागवत संत सेवी महाराजा बिश्वनाथसिंह (छत्रपुर नरेश) *

❀ छप्पय ३४८ ❀

बिश्वनाथ नृप छत्रपुर भाविक रसिक अनन्य अति ।
नेह निवाहक सुजम साधु सेवी रस भीने ।
वृन्दावन श्री अवध माधुरी मधुप प्रवीनें ॥
राज नीति कौशल्य कला कोविद लीला मय ।
ब्रजवासी ब्रजराज बिके मानहुँ हाथन द्वय ॥
सौन्दर्य ललित लावण्य को क्षुधित रहत अति नित्त मति ।
बिश्वनाथ नृप छत्र पुर भाविक रसिक अनन्य अति ॥

* विजावर चरखारी राज्य के नृपति *

❀ छप्पय ३४९ ❀

जे नृपति राज मद नहिं छके धन्य भाग इनके सफल ।
भूपति भान प्रताप विजावर धर्मवान भए ।
चक्रपुरी जैसींग त्याग बृन्दाबन बस रए ॥
(पुन) तासु दत्त मलखान सिंह संतन हितकारी ।
राधा कृष्ण उपास्य शीश गुरु अज्ञा धारी ॥
दान दया सनमान मय प्रजा पालवौ जान भल ।
जे नृपति राज मद नहिं छके धन्य भाग इनके सफल ॥

* श्री राघवेन्द्रसिंह पन्ना नरेश के मझले भाई *

❀ छप्पय ३५० ❀

जीवन जनम सराहिए जो सब तज हरि को भजे ।
श्री राघवेन्द्रसिंह प्रगट राज कुल में रस भीने ।
भक्ति भाव सम्पन्न सन्त सेवा सुख लीने ॥

श्री युगल नाम कौ जाप छाप माथे रसिकन की।
कबहुँ न प्रगटें भोग भावना अपने मन का।
परम प्रेम अनुराग से पायौ पद पर तर अजे॥
जीवन जनम सराहिए जो सब तज हरि को भजे।

* श्री महाराजा सा० भुमानीसिंह जू (छत्रपुत्र) *

*** छप्पय ३५१ ***

श्री बिश्वनाथ नृप भक्ति की गाही अजहुँ अवाद है।
सुअन भुमानीसिंह बड़े भाविक अनुरागी।
राज विभव कौ भोग त्याग प्रभु में लौ लागी॥
रहैं सादगी रहन साधु सेवा मन भावे।
सष्टाँङ्ग डंडौत करत में लाज न आवें॥
राजन में महँराज ए इन्है प्रेम कौ स्वाद है।
श्री बिश्वनाथ नृप भक्ति की गाही अजहुँ अवाद है॥

* जैपुर राज के बंसज श्री ठाकुर संग्रामसिंह जू *

*** छप्पय ३५२ ***

संग्रामसिंह ठाकुर बड़े भाविक भक्त महान भए।
वैभव भोग विलास त्याग श्रीअवधहिं आए।
भजन कियौ निष काम लाल साहब मन भाए॥
युगल नाम धुनि अजँहुँ होत उनकी भक्ती सें॥
मुक्ति मिली निष काम कृपा गुरु की शक्ती सें।
राज बंश जैपुर प्रमुखताही में इन जन लए॥
संग्रामसिंह ठाकुर बड़े भाविक भक्त महान भए।

*** परिचय ३५३ ***

(भीषमपुर राज जिला लखनऊ की श्रीमहाराज रानी जू व उनके दत्तक पुत्र श्रीचन्द्रका बक्ससिंह जू तथा श्री चन्द्रकाबक्सजी की पुत्र पतोहू वर्तमान श्रीदेवराज रानी

अपने गुरुदेव श्री स्वामी जगदेवदासजी की आज्ञा से श्रीजुगल माधुरी कुंज का निरमान करने वालीं श्रीमहाराज रानी ! तैसही परम भागवत संत सेवी बाबू चन्द्रकाबक्ससिंहजी उनके दत्तक पुत्र-तथा श्रीचन्द्रकाबक्ससिंहजी की पुत्र पतोहू वर्तमान श्रीदेवराज-रानी भक्त मालीजी की शिष्या अनन्य भक्त इन सब ने गुरु भक्ती का पूर्ण आस्वादन किया)

*** छप्पय ३५४ ***

गुरु भक्त कृपा के पात्र जे उज्जल अमल अदाग हैं।
रानी श्रीमहाराज चन्द्रका बक्स सुअन भए।
तिनकी पुत्र पतोहु देवराजहु सब सुख लए॥
लखनऊ जिला प्रधान राज भीषम पुर जानौ।
जुगल माधुरी कुंज केल रस इननै छानौ॥
भजन भावना भक्ति में इनके ऊँचे भाग हैं।
गुरु भक्त कृपा के पात्र जे उज्जल अमल अदाग हैं॥

* समूह भक्त गाथा श्रीराजेन्द्रप्रसाद बृजेन्द्रप्रसाद सरजूप्रसाद श्रीरामललीजी *

*** छप्पय ३५५ ***

श्री अवधधाम निष्ठा बड़ी इन भक्तन की जानिऐं।
श्री राजेन्द्र बृजेन्द्र सन्त सेवी बड़ भागी।
श्री अवध वास के हेतु मोह माया इन त्यागी॥
तैसइ पुत्र प्रधान श्री सरजू बाबू भए।
कर्म धर्म में निष्ठ भाग जागे हैं निति नए॥
दया दान सनमान में रामलली खाँ मानिऐं।
श्री अवधधाम निष्ठा बड़ी इन भक्तन कौ जानिऐं॥

* श्रीगुरु निष्ठ भक्त वैश्यकुल मारवाड़ी (मुजवरपूर निवास) *

*** छप्पय ३५६ ***

श्री गुरु निष्ठा में भक्त जे भाविक सुजन महान हैं।
पुत्र पौत्र परवार सबै सरणागत कीनै।

भजन भावना रीति गहैं गहरी मति पीनें ॥
नारायन परसाद राम जू थाको जानौं ।
मदनलाल मन मोद कृपा को न्यारो छानौं ॥
श्री गुरु गुविन्द के शरण में इनके सवइ विधान हैं ।
श्री गुरु निष्ठा में भक्त जे भाविक सुजन महान हैं ॥

* श्रीलक्ष्मणदास रामायणी समीप मिथिला भवन *

* छप्पय ३५७ *

श्री लक्ष्मणदास रामायणी शाँतशील सदगुन सहित ।
कथा अमृत बरसाय हृदय श्रोतन सरसावें ।
ऐसे सन्त सुजान आन मग कबहुँ न जावें ॥
सकल समृद्धी त्याय अवध को वास करत हैं ।
निज निकुंज निरमाय मनहिं मन मोद भरत हैं ॥
भजन भाव गहरो गहैं रहैं सादगी रहन नित ।
श्री लक्ष्मणदास रामायणी शाँतिशील सदगुन सहित ॥

* श्री पं० हनुमानदत्तजी (मुहल्ला विद्याकुण्ड) *

* छप्पय ३५८ *

बड़ो लालसा लगन से अवध वास इनखाँ मिलो ।
श्री हनुमान दत्त महराज बड़े पंडित प्रवीन हैं ।
इन्हें बीर भगवान प्रसिद्धी स्वयम दीन है ॥
श्रीकौशिल्यामाय कृपाकर अपने द्वारे ।
दई कथा की टहल व्यास गादी बैठारे ॥
ध्यान धारना जोग गही तँहसे मन फिर ना हिलो ।
बड़ो लालसा लगन से अवध वास इनखाँ मिलो ॥

(श्रीसीतायनजी के निर्मान करता परम रसिक श्रीराम प्रियासरनजी [नेहकली] और उनके रसा चार्य श्रीगुरुदेव 'श्री प्रेमकलीजी')

❋ छप्पय ३५६ ❋

श्री प्रेमकली गुरुवर कृपा नेह कली साकार भईं।
श्रीसीतायन प्रकट भाव नए नए दरसाए।
श्रीराम प्रिया के सरन आपनो नाम धराए॥
ऐसे रसिक सुजान रीति इनकी न्यारी है।
अवधन सिय पिय ल्याए लगी मिथिला प्यारी है॥
जेतीं विधिं पिय मिलन में संग संग इनहुन लईं।
श्री प्रेमकली गुरुवर कृपा नेह कली साकार भईं॥

❋ महात्मा श्रीप्रिया सखीजी (जिनका अष्टजाम है) ❋

❋ छप्पय ३६० ❋

श्री प्रिया सखी के भाव को भोग करत भगवान हैं।
रस शृङ्गार रसाल भाल में इनके भर गवो।
पद रचना कर अष्टजाम में तैसइ धर दवो॥
रँगे रहैं निशि दिवस सुरति नहिं खान पान की।
चढ़ी चित्त में चाह प्रिया प्रीतम सुजान की॥
इनके गुन को कह सकै सकल गुनन की खान हैं।
श्री प्रिया सखी के भाव को भोग करत भगवान हैं॥

❋ महात्मा श्रीरसमालाजी शृंगार शिरोमणि ❋

❋ छप्पय ३६१ ❋

रस सिंगार की रीति सें प्यार करो प्रीतम इन्हें।
रस माला रस रूप भईं ऐसीं अलबेलीं।
कुंजन में गलबाँह मेलकें रमी अकेलीं॥
इनके पद अनमोल भाव सें भूषित ऐसे।
को कर सकै बखान रँगीले रस में जैसे॥

उनको समता को करे अपनावें सियवर जिन्हें।
रस सिंगार की रीति सें प्यार करो प्रीतम इन्हें॥

* श्रीअञ्जनीनन्दनसरनजी की सुहद बेटी मीरा वाई *

* छप्पय ३६२ *

श्री अंजनी नन्दन सरन की वेटी मीरा बाई है।
बड़ी साध्वी सुजन रहैं सीधे सुभाव सें।
अष्टजाम की रीति करें सेवा उमाव सें॥
विंजन विविधि वनाय प्रभू को भोग लगावें।
आवें जो कोउ सन्त प्रेम सें तिन्हें पवावें॥
पिता भक्ति की भावना इनहूँ को मन भाइ है।
श्री अञ्जनी नन्दन सरन कीं वेटी मीरा बाई है॥

* श्रीश्यामा वाई ब्राह्मणी धर्म भगवान की शिष्या *

* छप्पय ३६३ *

श्री धर्म भगवान की श्यामा वाइ शिष्य भईं।
वाला पन सें प्रीति करी इन सीता वर में।
लोक रीति विवहार न सीखे कौनउँ घरमें॥
सन्तन की सिवकाइ भावना भक्ति सवाई।
श्री गुरु बर नें ज्ञान कृपा कर खूब लखाई॥
ह्वै अनन्य निज भाव की और नदूसर द्वार गईं।
श्री धर्म भगवान की श्यामा वाइ शिष्य भईं॥

* भक्त प्रवर श्रीराम प्रियाशरनजी (पंजाबी) *

छप्पय ३६४

भक्त बड़े भाविक बड़े राम प्रिया के शरन जू।
पाँचाल देश से आय अवध को वास करत हैं।
सन्तन की सिवकाइ चरन रज शीश धरत हैं॥

अन्न वस्त्र उर द्रव्य यथा विधि सब को देवें।
प्रेम पियूष निचोर भाव रसिकन को लेवें॥
युगल नाम कौ जाप नित करें जो भव भय हरन जू।
भक्त बड़े भाविक बड़े राम प्रिया के शरन जू॥

❀ छप्पय ३६५ ❀

रस मोद लता के सरन में सरन राम पिरिया भए।
पांचाल देस से आय अपनपौ अरपन कीनौ।
तन मन धन सिवकाइ करें मन तनक न हीनौ॥
रस पियूष को छान नित्य पद गान करत हैं।
नेम लिए कर प्रेम चरन रज शीश धरत हैं॥
जीवन जनम सराहनी ह्वै अनन्य सब सुख लए।
रस मोद लता के सरन में सरन राम पिरिया भए॥

❀ श्री बांके पियजी ❀

❀ छप्पय ३६६ ❀

श्री बांके पिय के भाव पै बार बार बलि जाउँ मैं।
संतन में सदभाव न इन सम कहूँ पाओ है।
पांच तत्व कौ भोग भाव सें खूब गाओ है॥
इनके चरित विशेष मिले नहि खोज करे सें।
एकहि पद में पूर भई अभिलाष परे सें॥
मैथिलि इनके गुनन की महिमा केहि मुख गाउँ में।
श्री बांके पिय के भाव पै बार बार बलि जाउँ में॥

❀ श्री बांके पिय जू के उज्जल भाव ❀

❀ पद ३६७ ❀

सन्तन चरन धूरि जो पाऊँ।

शीस चढाय लगाय दृगन सों पाय हृदय निज सरस वनाऊँ ॥
सुर सरि अब छूटत जिन परसे तिन संतन जस किहि मुख गाऊँ।
संत समाज तीर्थ सेवन कर उज्जल रस सागर अब गाऊँ ॥
सन्तन कौ चरण मृत लै लै उर विच सरिता प्रेम बहाऊँ।
सन्तो च्छिष्ट पाय शृध्धा सों जनम जनम त्रय ताप नसाऊँ ॥
सन्तन अनु गति ह्वै बांके पिय संतन की अनुचरी कहाऊँ।
प्रिय प्रीतम निकुंज रस लीला अवलोकन कर नैन सिराऊँ ॥

---

* महात्मा श्री बाँके पियजी के सन्तों में पांच तत्व *

(१) प्रथम श्रीचरण रज से क्या लाभ-जिसे तीन प्रकार से प्रयोग करने पर हृदय सरस होता है, प्रथम शीश पर चढ़ाना (लगाना) फिर नेत्रों से लगाना-तीसरी क्रिथा मुख में पाना (ये एक तत्त्व हो गया)

(२) अब दूसरा तत्त्व संत समाज रूपी तीर्थ का सेवन करना जिससे रस राज जो उज्वल रस शृङ्गार रस है उस रसराज रूपी सागर की थाह पासक्ता है अतएव उस तत्व का समर्मज्ञ होना।

(३) तीसरा तत्त्व अंतःकरण में प्रेम तत्त्व की प्रवाह सरीकी धारा बहाना वो श्रीचरणा मृत से उदय होता है।

(४) चौथा तत्त्व श्रद्धा पूर्वक उन सन्तों की उच्छिय प्रसादी उनसे प्राप्त करके पाना (यहां पर थार से या पत्तल से उठ जाने पर पीछे उसमें से उस मुक्त शेष को लेना, ए वो तत्त्व नहीं है) वो तो भक्ति श्रद्धा पूर्ण उनके श्री हस्त कमल से प्राप्त करने वाली प्रसादी का महत्व है, जो जन्म जन्माँतर के त्रय ताप को विनास करता है अतएव जन्म-मरण से रहित कर देता है।

(५) पांचवां तत्त्व उनकी सेवा में रहकर सर्वतो भाव से सेवन करना उनकी ही दासी कहाना (यहां श्रृङ्गार रस की वार्ता है ए इससे दासी अनुचरी भाव कहा गया है) वास्तव में उनकी ही सेवा का पात्र सर्वतो भाव से बन जाना उसका महत्व सर्वोपरि है । दिव्य दाम्पति रस विहार लीला के अवलोकन करनै का सौभाग निरावरण प्राप्त होता है ।

ए पांच तत्त्व सन्तों में श्रीबाँके पियजी नै निरधार किए हैं जो हमारी तुच्छ दृष्टी में आज तक किसी के कथन में नहीं प्राप्त भए न देखे गए अपनी छुद्रता से तो हम ऐसा ही कहेंगे कि इस प्रकार का सन्तों में उज्वल भाव सहज नहीं बन सक्ता है—हमको तो वाल्या अवस्था से इसी तत्त्व में भोग था और आजतक उन्हीं सन्तों की कृपा से भरपूर है,श्री बाँके पिय के भाव पर हम निछावर है । बैसे तो श्री गोस्वामीजी अपनी शैली से सिखर पर इस बिषय को रख गए हैं—

सन्तन की महिमा रघुराई । वहु विधि वेद पुरानन गाई ॥

इत्यादि किन्तु जब उसका भोग होवै तब जानिए नहीं तो लिखा तो सब जगह सब कुछ है । इत्यादि कृपा कीं जै ॥

* अनन्त श्री महात्मा प्रेम सखीजी *

* छप्पय ३६८ *

प्रेम सखी प्रेमिन भई तन मन धन सब वारकें ।
एकहि पद में न्याय करो इन तत्त्व छान कें ।
सरबस प्रिय पर वार दियो निज पत्ती मानकें ॥
रँगी रँगीले रँग उमग सें अंग अंग में ।
सुख सुहाग को मिलो इनहि सब सजन संग में ॥

इनको पद रचना बहुत आड मेड सब टारकें।
प्रेम सखी प्रेमिन भईं तन मन धन सब वारकें॥

* श्री प्रेम सखीजी का एक पद जिसमें उन्होंने अपना अनुपम सिद्धांत लिखा है *

❀ पद ३६९ ❀

लगन लगी तब कौन करै डर।
सब संसय मिट जात सखी री।
वदन विलोक मीत अपनें कर॥
लोक लाज कुल कान तबै लौ।
जव लौ प्रेम रसीन फँसी गर॥
करुणा भरे खरे घरवारे रोवत।
सती कबहूँकि चढ़ै सर॥
प्रेम सखी वल झगरौ कवन।
जव यह तन बेंच्यो अवध छयलकर॥

इस पद की एक एक मात्रा में रसकाई का रंग भरा है पर वही बात है कि एक बार मुजनू के पास खुदा वंद करीम खुद गए और उनसे कहा कि तूँ बड़ा इश्क मिजाज है यदि तेरी मुहब्बत मालिक में ऐसी होती तो तूँ पहुँचा भया फकीर हो जाता इतनी वद सूरत औरत लैला पर तूँ प्राण दे रहा है उसके ऊपर तब मुजनू कहते हैं आप कौन हैं—तो हजरत ने कहा मैं खुदावंद करीम हूँ उनसे मुजनू कहते हैं (लैलैरा वचश्मदीद मुजनू) लैलै के देखने को मुजनू की आँख मागिए उसी तरह मार्मिक वाणी का रचारस्य जिसको प्रभु देवें उसी को मिलता है।

पुनः सन्त वन्दना—

सन्तन सों विनतो करों छमें मोर अपराध को,
प्रथक प्रथक लें नाम गुनन को नाहि उचारें।

जिते भेष भगवान लगें मोहि अधिक पियारे,
अपने और पराए भेद को भावन लइयो ॥
कृपा कोर कर अभय दान दिन दूनो दइयो,
जिन चरनन की धूरि धर ध्यायो तत्व अगाध को।
सन्तन सों बिनती करों छमें मोर अपराध को ॥

(अपने इष्ट देव सन्त और भक्त जनन सों प्रार्थना)

दोहा—दीन दरिद्री जनम के, सब औगुन की खान।
सन्तन की जब शरण भए, तब पायो रसदान ॥

कुण्डलियाँ

तब पायो रस दान छान कें खूब पियो है।
उनहुँ कृपाकर केल कुंज को सुःख दियो है ॥
पद रचना कर कही खूब मन भाई जैसी।
जो कहुँ सुनी न होय लिखी जैसी की तैसी ॥

* दोहा *

मैथिलि सरन सँभारियो, जो कछु विगरो होय।
हमें सरन श्रीचरन की, रहैं अभय ह्वै सोय ॥

(वो प्रार्थना जिस पर श्रीहनुमन्तलालजी नें स्वी कृती दी थी)

* छन्द *

कलि मल गृसित तन मन विषय रस लीन जल ज्यों मीन है।
शत कर्म धर्म विहीन अघ अब गुनन में अति पीन है ॥
जप जोग ज्ञान विराग को अब लम्ब कछु नाहिन लिए।
सुख सम्पदा चाहत अनृत रति सुमति नहि सूझै हिए ॥
अस अधम दीन उधारवे को बान जिस सरकार में।
अरजी हमारी पेश हो उस रावरे दरबार में ॥

कीरति कमलनी सु थल में विकसित सुनी शुचि गंध मय।
विन कृपा सन्त समाज के अनुराग अलि नहि होत लय॥

❋ दोहा ❋

मिलै अवध कौ बास, दम्पति अति व्याकुल यहाँ।
पंजी नहीं कछु पास, तासौं प्ररणय प्ररणंत यहाँ॥

❋ चौपाई ❋

नाच टहल सन्तन की करिहौं।
पद रज परस भवार्णव तरिहौं॥

इसो प्रार्थना पर स्त्री कृती हुई और अनन्त श्री विभूषित पतित पावन अधम उधारन श्रीस्वामी राम बल्लभासरनजी महाँराज को आज्ञ्या हो गई कि उनको पत्र लिखकर बुला लेव श्रीमहाराजजी ने पत्र लिखा और हम पत्र पाते ही श्रीअवध चले आए इसका रहस्य गूढ़ है तबसे ५५ बर्ष हो गए और बसंत रितु की तरह सर्वी प्रकार फूले फरे सकल सौभाग की प्राप्ती भई। अब अपने प्राण प्रीतम प्रभु से मिलने की त्तइयारी है आज्ञ्या मिल चुकी, साज शृङ्गार सँभार रहे हैं। हमारी ही तरफ से विलम्ब हो रहा है। सो हमारे सन्त भगवान अपनी कृपा से सब सुधार देंगे पूर्ण बिश्वास अचल है॥

श्री कलि महाँराज की बन्दना

❋ दोहा ❋

धन्य धन्य कलिकाल जू, तुम हो परम सुजान।
भले साँकरे समय में, हमे दियो बहु मान॥

—: कुण्डलिया :—

हमें दियो बहु मान आपकी महिमा ऐसी।

जो जस करें बखान तिन्है दरसावत तैसी ॥
श्री गुरु मुख से सुनी रँगीली गाथा जब से ।
रहीं लालसा भरी हमारे हिय में तबसे ॥
पूरी करी कृपालु आपने अपनी दाया ।
बिन साधन जप जोग लुटाई छन में माया ॥
दियौ अवध को बास सन्त सेवा सुखदाई ।
मैथिलिसरन उपास्य सिया स्वामिनि सी पाई ॥

* दोहा *

सत जुग त्रेता द्वापरहु, नहीं कियौ यह दान ।
जो कलिजुग मँहराज नौ, दियौ हमें सनमान ॥

:— कुण्डलिया :—

दियौ हमें सन मान सकल सुख सम्पति सजकें ।
औगुनहू गुन भए नगारे नौवद बजकें ॥
अर्धाङ्गिनि सौभाग वती सौ शिल्या ऐसी ।
मनो गौर की और गढ़ी हो मूरति जैसी ॥
पर कर वृन्द अनेक रँगीले रंग रंग के ।
सरस मिले शृंगार हमारे अंग अंग के ॥
श्री जुगल माधुरी कुंज जुगल जोड़ी चिर जीवे ।
अलि सुन्दर मुख कंज अमिय रस रस रस पीवे ॥

(सन्तन की अनुचरी कहाऊँ)

"मैथिलीशरण भक्त माली"

श्रीजुगल माधुरी कुंज, नजरबाग,

श्रीअयोध्याजी ।

शुद्धि अशुद्धि विवरण

पेज नं०	छन्द नं०	छंद ला०	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
५	११	२	नेह कवहुँनव	नेहनव नटनागर में
५	१२	३	त	तप
७	१७	६	माधुय्य	माधुर्य्य
८	१८	७	स्वामी	गोस्वामी
१०	२५	५	सिय पिय	सीय पिय
११	२७	२	परल	सरल
१२	२६	५	सतन कह्या प्रवार	संतन कह्यौ प्रचार
१३	३२	२	बावसे	चावसे
१५	३८	१	बत्त	बृति
१६	३६	६	वारित	चरित
१६	४०	५	बवान	वखान
१६	४२	५	अपहु	आपहु
१६	४६	५	चलचाहिं	ललचांहि
२०	५३	२	दुखि	दुखिय
२१	५४	४	इनइननै	इननें
२३	६१	६	सवेश्वरि	सर्वेश्वरि
२६	६८	६	पौवास	पौत्रारा
२७	७२	३	जप	आप
२८	७३	१०	लोवन	लोचन
३१	८१	६	ब्रसकर	वासकर
३७	६७	२	रसलान	रसलीन
४१	११०	१	श्रीतपसीजी	श्रीतपसीजी की
५३	१४२	२	नरायन	नारायन
५३	१४३	४	बृति	बृत्ति
५४	१४६	१	छोटा	छोटी
५६	१५६	१	फल	फली
६०	१६१	५	साहैं	सोहैं

शुद्धि अशुद्धि विवरण

पेज नं०	छन्द नं०	छंद ला०	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
६८	१८४	७	सरनजू	दास जू
७२	१६५	५	कटाचका	कटाचकी
७३	१६८	६	भाव सुख लहत हैं	भावना सुख लहैं
७५	२०२	६	कैसा	कैसी
७६	२१४	६	सर्व	सबै
७६	,,	७	सब	सवै
८०	२१६	२	ऐसा	ऐसी
८१	२२०	५	तह	तट
८६	२३४	१	गराँग	गौराँग
८६	२४२	१	वडे	वड
८६	२४२	६	सर्व	सव
८६	२४३	१	राजा	हरि
६०	२४३	७	राजा	हरि
६१	२४६	५	वोझा	वोझ
६१	२४७	६	पजन	भजन
६६	२६१	४	जार	जर
६७	२६२	६	लिए	लए
१००	२७२	६	पाव	भाव
१००	२७३	२	त्याछ	त्याग
१०२	२७७	४	त्रास	भास
१०४	१८१	७	खाकीजी	खाकीजी के
१०६	२८८	१	परक	परम
१०८	२६५	१	वृह्मण	ब्राह्मण
१०६	२६६	४	सहजँह	सहजँइ
११०	२६८	४	ध्याय	ध्यावें
११०	३००	१	कितौ	कियौ
११०	३००	४	दानन	दीनन

शुद्धि अशुद्धि विवरण

पेज नं०	छन्द नं०	छंद ला०	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
११०	३००	६	कँहाँ (१)	कहीं
१११	३०३	५	खच	खर्च
११२	३०४	५	उहार	उदार
११२	३०५	३	सुज	सुहृद
१२४	३१०	७	रँ	रँग
११८	३२१	५	फह	फंद
११५	३१२	१	गुरुदत्तजी	गुरुदत्तसिंहजी
१२२	३३२	१	कलम	कमल
१२३	३३४	३	का	की
१२३	३३५	७	शरन में	शरन में जे
१३५	चौथे तत्त्व की प्रथमलाइन	१	उच्चिय	उच्चिष्ट
१३६	दोहा नं. १	२	प्ररणांत यहां	प्ररणतयह

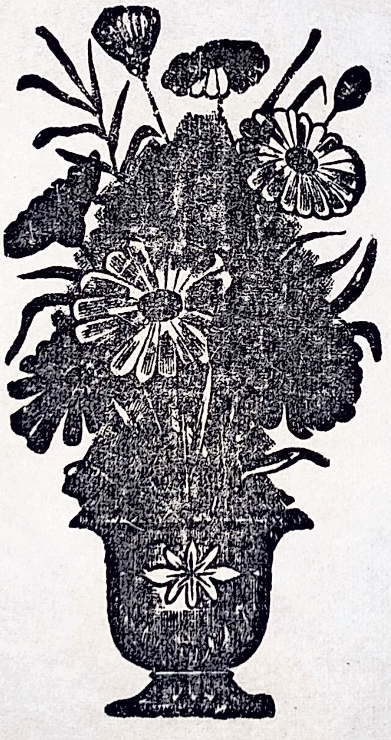

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी।